ISSN 2349-6614

मई, 2018

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

कानून व्यवस्था के साथ समाज और राजनीति के नैतिक पतन का आईना है

कठुआ, उन्नाव और सूरत की घटनाएं

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 16 अंक 3 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

‘Udaipur now has a World Class School Destination!’

Admission Open
Grade Nursery to 3rd

LAUREATE HIGH SCHOOL

Where schools dictates Curriculum
Laureate Explains Why?

Where schools only teaches,
Laureate creates the Experience

Where schools creates narrators,
Laureate creates Orators.

Where schools have games period,
Laureate have Sport's Curriculum.

Where schools creates pressure of studies
Laureate creates a Joyful Learning Journey

Laureate High School

Near Nagendra Bhavan, Kotbadiya Bheruji Marg,
Ahed of BSNL Office, Hiranmagri Sector 3, Udaipur
Mob :- 8696998806, 8696999906 Email :- Laureatefoundations@gmail.com

ADMISSIONS OPEN

LIMITED SEATS

KIDZEE

The Preschool Where Kids Love To Learn

Give your child the best preschool experience at Kidzee, Asia's largest preschool chain! Let our fun-filled teaching make your child ready for formal education and life as well.

1,500+ centres • 550+ cities
4,00,000+ happy children

Technology-enable curriculum

INDIA'S MOST TRUSTED PRESCHOOL BRAND
Brand Trust Report India Study 2016

Play Group	Nursery	Jnr. KG	Snr. KG
(Age 1.8 yrs to 2.8 yrs)	(2.8+ yrs)	(4yrs)	(5yrs)

We are proud to be the Oldest Branch of Kidzee at Udaipur!

We Challenge - We are the BEST Play School for your kid.

 # Court Chouraha Branch
Mob:- 8696999904, 8696999905, 8696999906

 # Sector-3 Branch
Mob:- 8696999904, 8696999905, 8696999906

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs
कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुहालका

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 2410659

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
क्रष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
"रक्षाबंधन", धानमण्डी, उदयपुर-313001

मई
2018
वर्ष 16, अंक 3

प्रत्यूष

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

अन्दर के पृष्ठों पर...

06 कर्नाटक

'मठाधीशों' की खूंटी पर बंधी हार-जीत

12 ऑनर किलिंग

खाप पंचायतों को शीर्ष कोर्ट की फटकार

14 आंदोलन पार्ट-2

अन्ना ने खुद को ही ठग लिया

18 फैसला

'टाइगर को जेल', 2 दिन में बेल

30 आक्रोश

भारत बंद, खुली अराजकता और बरगलाने की राजनीति

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

32 वर्षों से राजस्थान का अग्रणी कोचिंग सेन्टर

M.K. JAIN CLASSES Pvt. Ltd.

BIG ACHIEVEMENT 2017

"Maharana Fateh Singh Award "

STSE 3rd Rank
KVPY SELECTED
AIIMS RANK - 947
SELECTED IN NEET (UG)
XII CBSE BOARD UDAIPUR BIO TOPPER

MOOMAL JAIN
2 Year SIP Classroom Student

Total Selection NEET 202
Total Selection IIT 33
XII CBSE 100 % RESULT
XII RBSE 100 % RESULT

ADMISSION OPEN

MEDICAL | IIT-JEE | FOUNDATION
8th | 9th | 10th | 11th | 12th CBSE / RBSE
SCHOOL | COACHING | HOSTEL

7- DURGA NURSERY ROAD, UDAIPUR 0294-2421977 | 9414301104

E-mail : md_mkjc@yahoo.co.in / mkjainclasses1@gmail.com Visit us : www.mkjainclasses.com

मरते हुए समय में जीने का भ्रम

आखिर हमारे देश में न्याय पर एकाधिकार केवल सत्ताधारी वर्ग, धनाढ्य, रसूखदारों और माफियाओं का ही क्यों है ? तंत्र और प्रशासन इतना लचर, लाचार और बेचारा क्यों है ? समूची व्यवस्था गरीबों पर हावी और पैसे वाले तथा राजनीतिक रिश्तों पर ही मेहरबान क्यों है ? जहां न्याय पाने के अधिकार से गरीब आदमी वंचित है, वह भ्रष्ट तंत्र तो हो सकता है लेकिन लोकतंत्र हरगिज नहीं। ऐसे तंत्र के विरूद्ध जब जनता लाठी लेकर निकल पड़ती है तो क्या गुनाह करती है। भारत में राजनीति का अपराधीकरण समाज के हर व्यक्ति और वर्ग के लिए निराशा और चिंता का विषय है। यह राजनैतिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली और गुणवत्ता को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। अब तो ऐसा भी लगने लगा है कि आपराधिक पृष्ठभूमि भारतीय राजनीति में प्रवेश की अनिवार्य योग्यता सी हो गई है। बाहुबलियों को चुनाव मैदान में उतारना जीत की गारंटी माना जा रहा है। जो राजनीति कभी समाज सेवा का माध्यम मानी जाती थी, आज व्यवसाय बनकर रह गई है। अपराधियों, माफियाओं और सत्ता के दलालों के गिरोह पार्टी स्तर के तमगे लटकाए हर गली-मुहल्ले में कुकुरमुत्ते की मानिंद मिल जाएंगे। ऐसे मरते हुए समय में आम आदमी जीने का भ्रम पाले बैठा है। यह वही 'गण देवता' है जिसके वोट की ताकत के आगे नेता नाम का प्राणी दण्डवत होता था। राजनीति में सत्ता की दलाली करने वालों ने अपने निहीत स्वार्थों से वोट की इस ताकत को जाति, वर्ग, समुदाय, सम्प्रदाय के खांचों में बांट कर लोकतंत्र की समग्र शक्ति को निष्प्रभावी करने का हर संभव प्रयास किया है। राजनीतिक सत्ता अपने आप में न तो सम्पूर्ण हो सकती है और न ही उद्देश्य। उसका उपयोग राजनीतिक और सामाजिक सत्ता का न्यायोचित्त वितरण सुनिश्चित करने के वास्ते होना चाहिए। राजनीति से जब तक अपराधियों, बाहुबलियों, भ्रष्टाचारियों और दुष्कर्मियों को अलग कर उन्हें कानून को सौंप नहीं दिया जाता, तब तक ऐसे भारत की कल्पना बेमानी है, जिसमें सुरक्षा, स्वतंत्रता, स्वाभिमान, समरसता और सामाजिक न्याय सहज सुलभ हो।

पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने इस दिशा में पहल करते हुए केन्द्र सरकार से ऐसे सांसदों-विधायकों की संख्या व सूची पेश करने के लिए कहा था, जिनके खिलाफ आपराधिक मुकदमे विचाराधीन हैं। केन्द्र सरकार ने सभी उच्च न्यायालयों के जरिये जानकारी एकत्र करके सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दाखिल भी किया है। इन आंकड़ों के अनुसार महाराष्ट्र और गोवा को छोड़कर पूरे देश में सांसदों-विधायकों की कुल संख्या 4,896 हैं और इनमें से 1,765 सांसदों और विधायकों पर 3,045 आपराधिक मामले लम्बित हैं। इस सूची में उत्तरप्रदेश सबसे ऊपर है, जो आज भी उन्नाव के विधायक कुलदीप सिंह सेंगर पर लगे दुष्कर्म के आरोपों को लेकर शर्मसार है। इसके बाद तमिलनाडु, बिहार, प. बंगाल, आंधप्रदेश, केरल व कर्नाटक है। यदि आज हालात न संभाले गए तो देश में लोकतंत्र की जड़ें सूखते देर न लगेगी और अराजकता में जीना मजबूरी होगा। उन्नाव और कठुआ की घटनाएं इसका साफ संकेत भी दे रही हैं। देश की राजनीति को अपराधीकरण से मुक्त करने के लिए अपराधियों के राजनीति में भाग लेने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना बहुत जरूरी है। अपराध का पोषण करने वाले राजनैतिक दलों की मान्यता समाप्त की जानी चाहिए।

जम्मू क्षेत्र के कठुआ जिले में आठ वर्षीय बालिका के साथ दरिंदगी और फिर उसकी हत्या के मामले में दायर दो आरोप पत्रों से निकल कर जो बातें सामने आई हैं, वे वीभत्स और शर्मनाक हैं। और भी दुखद यह है कि इस मामले को पूरी तरह साम्प्रदायिक, राजनीतिक रंग देने में भी फुर्ती बरती गई, जबकि प्रथम दृष्टया ही मामला सीधा-साधा पूर्व नियोजित अपराध का है। सबसे हैरान व परेशान करने वाली बात यह है कि इस सम्पूर्ण घटना में पुलिस न केवल अपराधियों के साथ मिली रही, बल्कि आपराधिक कृत्य में सहभागी रही। घटना को अंजाम देने वाले डोगरा समुदाय के हैं, जबकि दुष्कर्म के बाद मार दी गई बच्ची बक्करवाल समुदाय की थी। यह कांड दहला देने वाला है और इसमें भाजपा की भूमिका की सब तरफ निंदा हो रही है। भाजपा जम्मू-कश्मीर में सत्ता की भागीदार है।

अब ज़रा उस उत्तरप्रदेश की बात करें जहां बरसों बाद भाजपा का एक छत्र राज्य है और योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री हैं। सरकार की खूब छिछालेदार होने के बाद 13 अप्रैल को सीबीआई ने दुष्कर्म के आरोपी विधायक कुलदीप सिंह सेंगर को गिरफ्तार कर पूछताछ आरंभ की है। हालांकि उत्तरप्रदेश में इस प्रकार के आरोप व मामले का यह कोई पहला या दूसरा वाकया नहीं है। पूर्व की सपा व बसपा सरकारों के शासन में भी अनेक विधायकों, मंत्रियों और अफसरों पर विभिन्न आपराधिक मामलो में लिप्तता के आरोप लगे हैं, लेकिन इस मामले में जिस तरह आरोपी की दबंगई को बर्दाश्त किया गया और पुलिस हाथ पर हाथ धरे बैठी रही, सर्वाधिक निंदनीय है। यदि समय पर जांच की होती तो पीड़िता के आत्मदाह के प्रयास की नौबत नहीं आती और न ही हिरासत में उसके पिता को लिया जाता और न ही हिरासत में ही उनकी मौत का कोई कारण बनता। पुलिस को इस बात का जवाब देना होगा कि पीड़िता के पिता की गिरफ्तारी की जरूरत क्यों हुई और उनकी पिटाई किसने और क्यों की ? पुलिस की चाल और चरित्र को सुधरना होगा। बेटियों को बचाने और बढ़ाने का ढोंग करने वाली संस्थाएं भी इन घटनाओं को लेकर उतनी मुखर नहीं हैं, जितनी होनी चाहिए। बेटियों की समाज कितनी परवाह करता है, यह इन घटनाओं से त्रासद रूप में हमारे सामने है। लोकतंत्र को भीड़तंत्र बनने से रोकने के लिए जरूरी है कि कानून और व्यवस्था को चाक-चौबंद कर राजनीति का शुद्धिकरण जितना जल्दी हो सके कर लिया जाय।

कर्नाटक की सियासत में 'मठों' का दबदबा, धर्म और जाति के नाम पर बंटी राजनीति

'मठाधीशों' की खूंटी पर बंधी हार-जीत

-नंदकिशोर शर्मा

पूर्वोत्तर के त्रिपुरा, नागालैंड ओर मेघालय विधानसभा चुनाव के बाद उत्तरप्रदेश के गोरखपुर-फूलपुर लोकसभा उपचुनावों की खुमारी उतरी नहीं कि कर्नाटक में विधानसभा चुनाव की रणभेरी गूंज उठी। हालांकि भाजपा-कांग्रेस एवं अन्य दल पहले से ही इसकी तैयारी कर चुके हैं। सियासत में कर्नाटक का राजनीतिक मैदान कई मायनों में काफी अलग माना जाता है। इसकी पथरीली राहे 'मठ' से होकर सीधी सत्ता के शिखर पर पहुंचती हैं। बिना मठ की कृपा के यहां जीत की कल्पना ही दिवास्वप्न है। यहां चुनाव घोषणा से पहले ही जाति या सामुदायिक आधार पर स्थापित 'मठ' हमेशा से अहम फैक्टर रहे हैं। धर्म और जातियों के बंटवारे हो चुके है। इस बार के चुनाव में तो मठों की अहमियत बढ़ गई है। ऐसे मठों का सीधा सरोकार प्रभावी लिंयागत समुदाय से है। हर बार की तरह इस बार भी हार-जीत का निर्धारण 'मठाधीश' ही करेंगे। इस राज्य में लिंगायत समुदाय के सर्वाधिक मतदाता हैं, जिनकी आबादी तकरीबन 17 फीसदी है। कर्नाटक में मठों का काफी रसूख है। कहा जाता है कि इस राज्य के सभी 30 जिलों की तकरीबन 85 फीसदी आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी मठ से जुड़ी हुई है। लिहाजा ऐसे मठों का समर्थन हासिल करना बेहद अहम माना जाता है। कर्नाटक, महाराष्ट्र और तेलंगाना जैसे राज्यों में कुल 3500 लिंगायत-वीरशैव मठ हैं। कर्नाटक में 12 फीसदी आबादी के साथ दूसरा सबसे बड़ा समुदाय वोक्कालिंगा है। सिद्धगंगा मठ के शिवकुमारा स्वामी का इस राज्य के तकरीबन 400 मठों पर नियंत्रण है। आदिचुनचनागिरी महासंस्थान इस समुदाय का मुख्य मठ है। अतीत में इस मठ ने पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा और पूर्व मुख्यमंत्री डीवी सदानंद गौड़ा को समर्थन दिया था। पिछले साल अमित शाह भी इस मठ में मत्था टेकने पहुंचे थे। हालांकि अभी यह साफ नहीं हुआ है कि ये मठ भाजपा जद (एस) में से किस पार्टी को समर्थन देगा, या इन दोनों दलों में कोई गठबंधन हो जाएगा। कुरुबा यहां 8 फीसदी आबादी के साथ तीसरा बड़ा समुदाय है। जिसका मुख्य मठ हवेरी जिले में स्थित कागिनेले कनक गुरुपीठ हैं। कुरुबा पिछड़ा समुदाय है और मुख्यमंत्री सिद्धारमैया इसी समुदाय से आते है। ब्राह्मण समुदाय यहां के अष्ट या उडुपी मठ का अनुयायी है। वहीं दलितों के चार प्रमुख मठों में गहरी आस्था है। इसमें बेंगलुरु का मडिगा मठ, चित्रदुर्ग जिले में स्थित बंजारा गुरुपीठ, श्रीमचिदेवा महासंस्थान मठ व मदारा चन्नैया पीठ, विकास संबंधी गतिविधियों के चलते कोलार के निदुमामिदि महासंस्थान मठ के भी कुछ दलित अनुयायी है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह के कर्नाटक दौरे के दौरान लिंगायत और दलितों के मठों में जाने के बाद राजनीति की इस पथरीली जमीन ने सियासी आग उगलना तेज कर दिया। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को लगा कि लिंगायत मठ भाजपा के समर्थन में जा चुके हैं, ऐसे में उन्होंने चुनाव से पहले लिंगायतों को अल्पसंख्यकों का दर्जा देने की चाल चली। जो भाजपा के लिए गलफांस बन चुकी है। गौरतलब है कि लिंगायतों में तीन समूह हैं। पहला समूह चाहता है कि लिंगायतों की अलग पहचान हो, जैसी सिद्धारमैया ने पेशकश भी की है। वीरशैव महासभा द्वारा संचालित दूसरा समूह चाहता है कि लिंगायतों को वीरशैव से जोड़कर देखा जाए और जो तीसरा समूह है वह लिंगायतों के लिए कतई अल्पसंख्यक

बसव ने रखी थी लिंगायत समुदाय की नींव

बारहवीं सदी के दौरान कर्नाटक में बैजल द्वितीय नाम के राजा का शासन था। इस दौरान ब्राह्मणवाद चरम पर था और जाति प्रथा ने निचली मानी जाने वाली जातियों का जीवन दूभर किया हुआ था। ज़्यादा समस्या इस बात से थी कि धर्म और राजनीति आपस में गुत्थम-गुत्था थी, इसलिए बचने का कोई रास्ता नहीं था। ऐसे समय में हुए बासवन्ना या गुरु बसव। ब्राह्मण समाज से आने वाले बसव एक समाज-सुधारक थे और उन्होंने जाति प्रथा के खिलाफ खूब काम किया। वो आजादी, बराबरी और भाईचारे जैसे मूल्यों पर खूब जोर देते थे और अपने विचारों का प्रसार 'वचन' गाकर करते थे। बसव के लिखे एक वचन का मतलब कुछ यूं निकलता है ङ्क'आत्मा की कोई जाति नहीं होती, वो रीतियों में बंधी नहीं होती'। बसव और उनके अनुयायियों ने ब्राह्मणवादी रीति-रिवाजों और वेदों को मानने से इनकार कर दिया था। वो मूर्ति पूजा के भी खिलाफ थे। लेकिन वो शिव के पक्के उपासक बने रहे। आज भी लिंगायत संप्रदाय के लोग बसव के बताए मूल्यों में विश्वास करते हैं। वो शिव और बसव दोनों की पूजा करते हैं, लेकिन मूर्ति पूजा नहीं करते। वो जनेऊ भी नहीं पहनते है।

दर्जा नहीं चाहता है। जातिगत आधार के अलावा क्षेत्रवाद ने भी कर्नाटक के चुनावों में बड़ी भूमिका निभाई है। 1956 में राज्य का पुनर्गठन हुआ और कई इलाकों को भाषा के आधार पर कर्नाटक से जोड़ा गया जो पहले बॉम्बे प्रेसिडेंसी और हैदराबाद के निजाम के अधीन रहे थे। इन इलाकों को मुंबई-कर्नाटक और हैदराबाद-कर्नाटक के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा मैसूर का इलाका भी है। राज्य के दक्षिण का इलाका पश्चिमी घाट का इलाका है। मंगलौर और उडुपी के इस तटवर्तीय इलाके में भाजपा का खासा दबदबा रहा है।

जानिए जाति और भूगोल की राजनीति

जाति और भूगोल कर्नाटक की राजनीति के दो ताने है। एक नवंबर, 1956 को जब कर्नाटक बना तो वो चार अलग-अलग रियासतों का हिस्सा था। बॉम्बे स्टेट और हैदराबाद स्टेट का जो हिस्सा कन्नड़ बोलता था उसे आज उत्तर कर्नाटक के नाम से जाना जाता है। मैसूर स्टेट का कन्नड़भाषी इलाका आज का दक्षिण कर्नाटक बनाता है। कोस्टल कर्नाटक या समुद्र के किनारे का कर्नाटक 1956 से पहले मद्रास स्टेट का हिस्सा हुआ करता था। दक्षिण भारत के इस राज्य को जीतने के लिए प्रमुख राजनीतिक दल अपने-अपने हिसाब से रणनीति पहले ही बना चुके है।

इसलिए है मठों का रसूख

पेजावर स्वामी विश्वेश तीर्थ, जो मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री और मौजूदा केंद्रीय मंत्री उमा भारती के गुरु हैं। वे वर्ष 2010 में मंगलौर में 'सेज' के लिए 2000 एकड़ जमीन के अधिग्रहण के खिलाफ अनशन पर बैठ गए। आखिर तत्कालीन मुख्यमंत्री वीएस येदुरप्पा को उस योजना की तिलांजलि देते हुए जमीन को डीनोटिफाई करने के लिए विवश होना पड़ा था। ये भी कहा जाता है कि कर्नाटक में मठों का काफी वर्चस्व है। ये मठ हजारों स्कूल-कॉलेज संचालित करते हैं और आपदा राहत व कल्याणकारी गतिविधियों भी चलाते हैं। कोई भी मुख्यमंत्री इन्हें नजरअंदाज नहीं कर सकता। मठों को नजर अंदाज करना मतलब के राजनीति चक्रव्यूह में फंसना है।

हिंदुओं से अलग कैसे हैं लिंगायत?

दक्षिण में एक के बाद एक कई भक्ति आंदोलन हुए। इनमें से ज्यादातर ने वही किया, जो बसव करना चाहते थे। और वे लोगों को ये भरोसा दिलाना चाहते थे कि जाति जैसी रूढ़ियों से परे जाकर भी ईश्वर को पाया जा सकता है। तो इन आंदोलनों को धार्मिक सुधार की कोशिश माना गया, न कि धर्म से अलग होने की कोशिश। लेकिन बसव और उनके अनुयायी समाज-सुधार पर नहीं रुके। उन्होंने अपना आंदोलन बड़ी गंभीरता से चलाया और अपनी मान्यताओं को एक व्यवस्था की शक्ल दी। इसी व्यवस्था ने वक्त के साथ एक संप्रदाय की शक्ल ले ली। ये बात लिंगायतों को हिंदू धर्म के अंदर चले बाकी भक्ति आंदोलनों से अलग करती है। और इसी आधार पर कई लोग लिंगायत संप्रदाय को अपने-आप में एक धर्म मानते हैं।

लिंगायतों को हिंदुओं से अलग कहना भी आसान नहीं

लिंगायतों को हिंदुओं से अलग कहना तब मुश्किल हो जाता है, जब हम अपना ध्यान वीरशैव संप्रदाय पर लगाते हैं। वीरशैव संप्रदाय भी शैव होते हैं और कर्नाटक के ही इलाके में बसते हैं। वीरशैव मानते हैं कि उनके समुदाय की उत्पत्ति शिवलिंग से हुई है और इसीलिए वो हिंदू हैं। वो वेदों में आस्था रखते हैं, जाति प्रथा और हिंदू धर्म में निहित जेंडर डिस्क्रिमिनेशन (मर्द-औरत में फर्क) को भी मानते हैं। 16वीं सदी के करीब अस्तित्व में आया वीरशैव संप्रदाय मानता है कि 12वीं सदी में हुए विचारक उनके पुरखे हैं। उनके मुताबिक बसवन्ना ने लिंगायत संप्रदाय की नींव नहीं रखी थी, उन्होंने महज वीरशैव

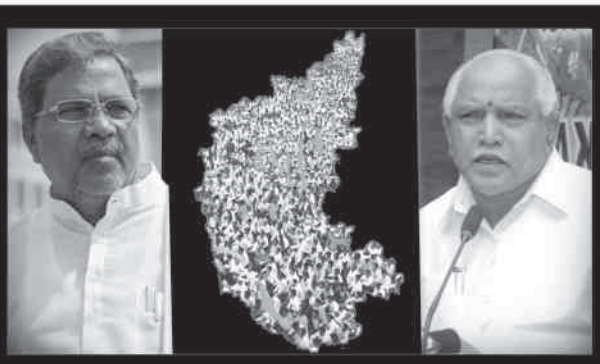

कर्नाटक के 4 चर्चित चेहरे

सिद्धरमैया : कांग्रेस नेता और मुख्यमंत्री है। पांच साल तक शासन चलाने के बाद दोबारा सतारूढ़ होने के लिए संघर्षरत है।

बी.एस येदियुरप्पा : भाजपा प्रदेशाध्यक्ष और मुख्यमंत्री प्रत्याशी है। 2008 में मुख्यमंत्री रह चुके हैं लेकिन 2013 में खुद पार्टी बना चुनाव लड़े।

एच.डी कुमारस्वामी : जेडीएस नेता और मुख्यमंत्री। खुद को कांग्रेस और भाजपा के विकल्प के रूप में पेश करते रहे हैं।

अनंत कुमार हेगड़े : केंद्रीय मंत्री हेगड़े की तटीय कर्नाटक में भाजपा के युवा और

कर्नाटक वोट की गणित

24 प्रतिशत	:	मतदाता लिंगायत जाति के
20 प्रतिशत	:	अन्य पिछड़ा वर्ग
16 प्रतिशत	:	गौड़ा जाति की आबादी
10 प्रतिशत	:	दलितों की कुल आबादी
15 प्रतिशत	:	मुस्लिम आबादी

इन जाति-वर्गों से रहे हैं सीएम

06 बार लिंगायत जाति से
05 बार गौड़ा जाति से
03 बार पिछड़ी जाति से
02 बार ब्राह्मण जाति से
* सिद्धारमैया कुरुबा जाति के है जो कि पिछड़ी जाति है और इन्हें कर्नाटक का यादव भी माना जाता है।

आंकड़ों में समझिए कर्नाटक की स्थिति

4.96 : करोड़ कुल मतदाता
2.51 : करोड़ पुरुष मतदाता
2.45 : करोड़ महिला मतदाता
225 : सदस्य, जिनमें एक मनोनीत एंग्लो इंडियन शामिल
36 सीटें अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित
15 सीटें अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित

एक माह में पूरी हुई प्रक्रिया

17 अप्रैल चुनाव की अधिसूचना जारी हुई
24 अप्रैल तक नामांकन भरे
25 अप्रैल नामांकन पत्रों की जांच हुई
27 अप्रैल अंतिम दिन नाम वापस लिए
12 मई एक ही चरण में पूरे राज्य में मतदान होगा
15 मई वोटों की गिनती और नतीजे आएंगे
18 मई से पहले चुनावी प्रक्रिया पूरी तरह समाप्त होगी

परंपराओं में सुधार किया था। बावजूद इसके, वीरशैव और लिंगायत संप्रदाय बेहद करीब हैं। कई लोग तो इन्हें एक ही मान लेते हैं। लिंगायत समुदाय तमाम अलग बातों के बावजूद हिंदू परंपराओं से दूर नहीं है। लिंगायतों की कई मान्यताएं और परंपराएं वेद, उपनिषद और जैन परंपराओं से साफ तौर पर प्रेरित हैं। अक्कमहोदेवी वीरशैव लिंगायत संप्रदाय में हुए भक्ति संतों में प्रमुख मानी जाती हैं।

चुनावी रण के 3 प्रमुख खेमे

कांग्रेस

ताकत : सिद्धरमैया को कर्नाटक की राजनीति का चाणक्य माना जाता है। ऐसे में उनका नेतृत्व अहम माना जाता है। साथ ही सरकार की ओर से लिंगायतों को अलग धर्म को दर्जा देने की पहल भी भाजपा के लिए परेशानी का सबब बनेगी।

कमजोरी : जेडीएस का बसपा के साथ समझौता होने से पारंपरिक दलित वोटों में सेंध लगने की संभावना। सिद्धरमैया और उनकी सरकार पर लगे भ्रष्टाचार के आरोप भी मतदाता को प्रभावित कर सकते हैं।

भाजपा

ताकत : पिछले चुनाव के विपरित लिंगायत नेता वी.एस येदियुरप्पा इस बार पार्टी के साथ हैं। सिद्धरमैया सरकार के खिलाफ लोगों में नाराजगी का फायदा भाजपा को मिल सकता है।

कमजोरी : कांग्रेस की ओर से लिंगायतों को अलग धर्म का दर्जा देने से समुदाय के वोटर फिसल सकते हैं। टीडीपी से रिश्ते टूटने का असर सीमावर्ती बेल्लारी, रायचूर और कलबुर्गी जिले में पड़ सकता है।

जेडीएस

ताकत : बसपा के साथ समझौता करने से दलित वोटों के जेडीएस के पक्ष में गोलबंद होने की संभावना जताई जा रही है। पारंपरिक रूप से पार्टी दक्षिण कर्नाटक में मजबूत है, वोक्कालिंगा समुदाय पर भी अच्छी पकड़ है।

कमजोरी : पार्टी में गुटबाजी बड़ी समस्या है, हाल में सात विधायक कांग्रेस में शामिल हो गए। भाजपा और कांग्रेस दोनों ही जेडीएस को एक-दूसरे की बी टीम करार दे रही हैं।

चुनाव में संभावित 5 अहम मुद्दे

1. **कर्नाटक की अस्मिता :** कांग्रेस द्वारा राज्य के अपने ध्वज पर विचार करने के लिए समिति का गठन और हाल में बेंगलुरु मेट्रो में हिन्दी साइनबोर्ड के विवाद ने इसकी आधारशिला रख दी है।
2. **किसानों की समस्या :** किसानों की समस्या और उनकी खुदकुशी का मुद्दा कांग्रेस और भाजपा जोर-शोर से उठा रही हैं। राज्य में 60 रोजगार कृषि क्षेत्र से आते हैं। ऐसे में किसानों को लुभाने के लिए सभी दल प्रयास करेंगे।
3. **प्रशासन :** राज्य में प्रशासन बड़ा मुद्दा होगा। भाजपा सिद्धरमैया को 10 फीसदी सरकार का तमगा दे चुकी है। कांग्रेस पीएनबी घोटाले जैसे मामलों को उठाने की कोशिश करेगी।
4. जातिगत समीकरण : जेडीएस का बसपा से करार और कांग्रेस सरकार की ओर से लिंगायत को अलग धर्म का दर्जा देने की सिफारिश इसी समीकरण को साधने की कोशिश मानी जा रही है।
5. विकास : राज्य में विकास भी बड़ा मुद्दा होगा। सिद्धरमैया सरकार ने पांच साल में उल्लेखनीय विकास करने का दावा किया है। वहीं, विपक्षी भाजपा कांग्रेस पर राज्य में पांच वर्ष पीछे ले जाने का आरोप लगा रही है।

दावा

भाजपा की हार निश्चित : कांग्रेस

पंजाब, कर्नाटक, मिजोरम और केंद्र शासित राज्य पुडुचेरी में कांग्रेस की सरकार है। ऐसे में कर्नाटक कांग्रेस के हाथ से निकलता है तो सिर्फ अकेला पंजाब बड़ा राज्य बचेगा। कर्नाटक में सरकार बरकरार रखने के लिए कांग्रेस पूरी ताकत झोंक चुकी है। इधर, कांग्रेस ने कर्नाटक में सत्ता बरकरार रखने का दावा किया है। कांग्रेस का कहना था कि भाजपा की हार निश्चित है। पूर्व सीएम और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एम वीरप्पा मोइली ने कहा कि पार्टी चुनाव के लिए तैयार है। हम इस बार भाजपा को भारी अंतर से हराने में कामयाब होंगे। उन्होंने दावा कि समाज का कमजोर तबका कांग्रेस के साथ है। पार्टी चुनाव जीतेंगी। पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी ने दौर किए। चुनावी रैलियों और आम सभा में सिद्धरमैया सरकार के लिए वोट की अपील की। । पार्टी के एक वरिष्ठ नेता का दावा है कि कांग्रेस पूरी तरह से तैयार है। सिद्धरमैया की राजनीति पर कांग्रेस का पूरा भरोसा है। साथ ही संगठन को मजबूत करने के लिए 8 लाख कार्यकर्ताओं को बूथ स्तर पर तैयार किए है।

आरोप

सरकार का कदम हिन्दुओं को बांटने की साजिश : शाह

कर्नाटक की दो दिवसीय यात्रा पर दावणगेरे में मुष्टि धान्य अभियान के दौरान भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने सिद्धरमैया सरकार पर हिन्दुओं को बांटने के आरोप लगाए। इससे पूर्व शाह ने मुष्टि धान्य अभियान की शुरुआत डोड्डाबाटी गांव से की, जहां उन्होंने किसानों से खाद्यान्न संग्रहित किए। इसका उद्देश्य किसानों के प्रति समर्थन जताना है। उन्होंने कहा कि देश में सबसे भ्रष्ट सरकारों में सिद्धरमैया सरकार शामिल है। चुनाव से ठीक पहले लिंगायतों और वीरशैव लिंगायतों को अल्पसंख्यक का दर्जा देने का राज्य सरकार का कदम हिन्दुओं को बांटने की कोशिश है। लिंगायत साधुओं से मुलाकात को लेकर शाह का कहना है कि उनकी कोई राजनीतिक मंशा नहीं है और उनके सम्मान में ऐसा करते है। उन्होंने यह भी कहा कि 2013 में जब आपकी अपनी (यूपीए) सरकार केंद्र की सत्ता में थी तब उन्होंने इसे खारिज कर दिया था। उस समय सिद्धरमैया चुप क्यों थे? इससे साफ जाहिर होता है कि ये येदियुरप्पा को सीएम बनने से रोकने की साजिश है। इतना ही नहीं सीएम सिद्धरमैया ने मठों और मंदिरों को भी सरकारी नियंत्रण में लाने की कोशिश की, लेकिन विपक्ष के विरोध के कारण उन्होंने अपने हाथ पीछे खींच लिए। अमित शाह ने आरोप लगाया है कि सिद्धरमैया अहिंद नेता नहीं बल्कि अहिंदू (हिन्दू विरोधी) नेता है। कन्नड़ भाषा में अहिंद का उपयोग अल्पसंख्यकों, पिछड़े वर्गों और दलितों के लिए किया जाता है।

तुष्टिकरण की नीति बड़ा खतरा : शाह ने कहा कि एक तरफ केरल सरकार ने केंद्र सरकार से इस्लामी संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) पर पाबंदी लगाने की सिफारिश की है, लेकिन सिद्धरमैया को पीएफआई में कुछ गलत नहीं दिखता। कर्नाटक एवं देश की सुरक्षा के लिए तुष्टिकरण की यह नीति बड़ा खतरा है। हीरा व्यापारी नीरव मोदी को लेकर शाह ने कहा कि उसे वापस भारत लाने का प्रयास किया जा रहा है।

डॉ. अजय सिंह चुण्डावत
M.B.B.S., M.D.
एनेस्थिसियोलोजिस्ट

डॉ. (श्रीमती) कौशल चुण्डावत
M.B.B.S., DGO
स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
गायनिक, सोनोलोजिस्ट

संजीवनी हॉस्पीटल

50 बेड का मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पीटल आधुनिक मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर एवं सभी आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रसूति कक्ष

साधारण, हाई रिस्क डिलीवरी, गर्भाशय का ऑपरेशन, सिजेरियन डिलीवरी, निसंतानता का निवारण, गर्भवती एवं समस्त प्रकार की स्त्री रोगों की नियमित जांच व इलाज

पाठों की मगरी, सेवाश्रम चौराहा, उदयपुर (राजस्थान)

मोबाइल नं :- 9829934770

अपोईन्मेन्ट एवं पूछताछ के लिए सम्पर्क करें हेल्पलाइन :- 9829934770

Email:sanjivanihospitaludaipur@gmail.com
admin@sanjivanihospitaludaipur.org
Website : www.sanjivanihospitaludaipur.org

जाउंगा कहां? रहूंगा यहीं!

वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह का निधन साहित्य विशेष रूप से हिन्दी साहित्य के लिए बेहद दुखद घटना है। हिन्दी की प्रगतिशील कविता को नई भावभूमियों की ओर ले जाने और सौंदर्यबोध के स्तर पर उसे सूक्ष्मतर अवलोकनों से सम्पन्न करने के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा।

- विष्णु शर्मा हितैषी

केदारनाथ सिंह हिन्दी के उन चुनिन्दा कवियों में रहे, जिनकी रचनाओं का दुनिया की लगभग तमाम प्रमुख भाषाओं में अनुवाद हुआ। वे लिखते हिन्दी में थे किन्तु दुनियाभर में पढ़े जाते थे। उनका जाना इसलिए भी दुखद है क्योंकि कुंवर नारायण, चन्द्रकांत देवताले और दूधनाथ सिंह जैसे कवि भी पिछले वर्ष हमसे जुदा हो चुके और अब केदारजी का जाना साहित्य की ऐसी क्षति है, जिसे निकट भविष्य में पूरा करना शायद संभव नहीं होगा। ये वे कवि थे जिनकी कलम से कविता कागज़ पर सजीव होकर सम-सामयिक स्थितियों को न सिर्फ बयां करती थी, उनसे समाधान का संदेश हासिल कर हर देश-दुनिया में चल पड़ती थी।

अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों और अलंकरणों से विभूषित केदारनाथ सिंह का समकालीन कवियों में सर्वोच्च स्थान है। भारतीय साहित्य के महारथी सच्चिदानन्द हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय' ने तार सप्तक कवियों की जो सूची तैयार की थी, उसमें केदारनाथ सिंह शामिल थे। 1960 में सम्पादित 'तीसरा सप्तक' संकलन में अज्ञेय जी ने केदारनाथ सिंह की कविताओं को भी शामिल किया। इस सप्तक में छपने का अर्थ मामूली नहीं था। इसके माध्यम से वे देश में एक प्रतिष्ठित कवि के रूप में स्थापित हुए। सन् 1950 के आसपास से लिखना शुरू करने वाले केदारजी का पहला कविता संग्रह भी 1960 में ही छपा था। उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के भोजपुरी इलाके के चकिया गांव में एक साधारण किसान के घर जन्मे इस कवि की प्रारम्भिक कविताओं पर भोजपुरी लोकगीतों का प्रभाव स्पष्ट रूप से रहा। दरअसल इन्हीं लोकगीतों की मिट्टी में कविता का वह बिरवा फूटा जिससे हिन्दी साहित्य निहाल हो गया। वे कविता को सिर्फ शब्द और भाव ही नहीं देते थे, बल्कि कविता को पढ़ने की उनकी शैली भी ऐसी विशिष्ट थी कि कविता के अर्थ परत-दर-परत स्वत: उघड़ने लगते थे। प्रारम्भिक शिक्षा गांव में पूरी कर वे बनारस चले आए, जहां उन्हें त्रिलोचन और नामवर सिंह जैसे दिग्गज साहित्यकारों के सान्निध्य में न केवल कविता की जमीन की समझ हासिल हुई बल्कि मुक्त छंद में कविता लेखन में भी मार्ग प्रशस्त हुआ। उनकी काव्य-संवेदना गांव की पगडंडियों से होकर शहर की कोलतार सड़क तक पहुंचती है और थोड़ा समय बिताने के बाद पुन: गांव का रूख करती है। गांव से शहर और शहर से गांव तक की इस यात्रा में वे तलाश लेते हैं, उन बिम्बों को जिनका आधुनिकता की अंधी दौड़ में वहां-यहां बने रहना ज़रूरी है। वे इस दौरान साहित्य में प्रेमचंद की साधारणिकता के प्रतिनिधि बन जाते हैं। मैंने जिन बिम्बों का जिक्र किया है, वे उनकी प्रारम्भिक कविताओं में पूरे सच के साथ प्रकट हुए हैं। वे आम आदमी की ही तकलीफों की बात नहीं करते वे पशु-पक्षियों और प्रकृति के दु:ख से भी रूबरू होते हैं और कविता के औजार से परिस्थितियों को उनके अनुकूल बनाने की जद्दोजहद भी करते हैं। इसमें वे डराने, बांटने वाली राजनीति की भी परवाह नहीं करते। जब हम राजनीति के गिरते स्तर का जिक्र कर रहे हैं, तो बाबा नागार्जुन की स्मृति हो आना स्वाभाविक है। सन् 1970 के दशक में उनके उदयपुर आगमन पर मिलने और चर्चा का सौभाग्य मिला। बाबा की कविताओं में भी व्यवस्था के प्रति रोष तो था ही, उसमें परिवर्तन की साफ-साफ चेतावनी भी। ऐसा ही रघुवीर सहाय और कुंवर नारायण की कलम ने भी किया। इन्होंने कविता को 'कविता' का सम्मान दिया। शर्तों से समझौता कर कविता को उसकी गरिमा से परे करने की कोशिश में जुटे 'कवि' कहला भी कैसे सकते हैं। स्वतंत्रता और स्वाभिमान से जीने और शोषण के खिलाफ लावा बन भभक उठने का संदेश देने वाले सोहनलाल द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त और मुंशी प्रेमचन्द से लेकर केदार बाबू व उनके समकालीन कवियों-लेखकों ने कलम से अपने आसपास

जन्म : 7 जुलाई 1934
निधन : 19 मार्च 2018

प्रमुख कृतियां

कविता संग्रह : अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, यहां से देखो, अकाल में सारस, उत्तर कबीर और अन्य कविताएं, ताल्सताँय और साइकिल, सृष्टि का पहरा

गद्य : मेरे समय के बाद कब्रिस्तान में पंचायत, चिट्ठियां कैलाशपति निषाद के नाम, मेरे साक्षात्कार

- **सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेजी, स्पेनी, रूसी, जर्मन, हंगरी, फ्रांसीसी, इतालवी, डच भाषाओं में कविताओं के अनुवाद प्रकाशित।**
- **काव्यपाठ के लिए अमेरिका, रूस, जर्मनी, ब्रिटेन, इटली, कजाकिस्तान अनेक देशों की यात्राएं।**

सम्मान

- **2013 का देश का सर्वोच्च साहित्य सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार।**
- **1989 में अकाल में सारस कृति के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार।**
- **1993-94 का मैथिलीशरण गुप्त सम्मान**
- **1997 में उत्तर कबीर तथा अन्य के लिए व्यास सम्मान, साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य।**

की उस उर्वरा शक्ति को समेटा और सहेजा जिससे पंक्ति में दूर कहीं खड़े आदमी को अपने होने का एहसास हो सके। ***'दरियों में दबे हुए धागों उठो/उठो कि कहीं कुछ गलत हो गया है/उठो कि इस दुनिया का सारा कपड़ा/फिर से बुनना होगा/उठो मेरे टूटे हुए धागों/ओ मेरे उलझे हुए धागों उठो'*** उन्होंने अपने काव्य में प्रकृति की जैविक उपस्थिति को भी बिम्बों के माध्यम से स्थान देकर स्पष्ट कर दिया कि प्रकृति से परे मनुष्य के अस्तित्व की कल्पना ही व्यर्थ है। बनारस, गोरखपुर जैसे शहरों से लेकर महानगर दिल्ली की चकाचौंध में उनका लम्बा समय गुजरा लेकिन गांव की संवेदनाओं से वे कभी अलग नहीं रह सके और जब भी समय मिलो वे ग्रामीण जनजीवन की पारम्परिक संवेदना में 'रिफ्रेश' होते रहे। उन्होंने गांव-शहर में होते बदलावों को निकट से देखा, उसके असर को भी गुना और इनके बीच खड़े आदमी के लिए रास्ता बनाने की कोशिश भी की। ***मुझे विश्वास है/यह पृथ्वी रहेगी/यदि और कहीं नहीं तो मेरी हड्डियों में/यह रहेगी जैसे पेड़ के तने में/रहते हैं दीमक/जैसे दाने में रह लेता है घुन/यह रहेगी प्रलय के बाद भी मेरे अन्दर।*** केदारनाथ सिंह आत्मश्लाघा से बहुत दूर थे। उन्होंने अपने लेखन को लेकर न कभी प्रशंसा की और न ही अपने बारे में किसी से प्रशंसा सुनना उन्हें पसंद था। वे तब बहुत असहज हो जाते थे, जब किसी मंच पर उनकी प्रशंसा होती। 20-21 जून, 2015 को इलाहाबाद में समकालीन कविता पर एक आयोजन था। इसमें केदारबाबू मुख्य वक्ता थे। लेकिन आयोजक ने कार्यक्रम व उपस्थित अतिथियों के प्रशंसापरक परिचय में ही इतना समय ले लिया कि श्रोता ऊब गए। आयोजक के बैठते ही केदारनाथ सिंह उठे। कुरते की जेब से एक छोटी सी परची निकाली और एक तिब्बती कविता का अनुवाद पढ़ा और बैठ गए। इस छोटी सी कविता ने एक निर्वासित समुदाय की इच्छा, आकांक्षा और वेदनाओं से जुड़े प्रश्नों को सबकी साझा चिंता का विषय बना दिया। सभागार स्तब्ध था। केदारनाथ सिंह भले ही आज हमारे बीच न हों, लेकिन उनकी इन पंक्तियों पर भरोसा करते हैं तो लगता है वे आज भी कविता के किसी मंच पर, शिष्यों के साथ अपने घर में बतियाते या चकिया के खेत की मेड़ पर किसी किसान के कंधे पर हाथ रखे कह रहे होंगे -

जाउंगा कहां/रहूंगा यहीं/किसी किवाड़ पर/हाथ के निशान की तरह/पड़ा रहूंगा/किसी पुराने ताखे/या संदूक की गंध में/छिपा रहूंगा मैं/दबा रहूंगा किसी रजिस्टर में/अपने स्थायी पते के /अक्षरों के नीचे।

महानगर में कवि केदारनाथ सिंह

- वेदव्यास

समकालीन हिन्दी कविता के अग्रणी डॉ. केदारनाथ सिंह साहित्य सृजन यात्रा में कोई 45 साल तक मुझे सहयात्री रहने का अवसर मिला, इसलिए महानगर में कवि की मौत पर उनकी ही लिखी एक कविता सुनाता हूं - इस इतने बड़े शहर में, कहीं रहता है एक कवि, वह रहता है, जैसे कुएं में रहती है चुप्पी, जैसे चुप्पी में रहते हैं शब्द, जैसे शब्दों में रहती है डैनों की फड़फड़ाहट, वह रहता है बस इतने बड़े शहर में, और कभी कुछ नहीं कहता।

केदारनाथ सिंह, अपनी चौरासी साल की जीवन यात्रा में कविता को ऐसी ऊर्जा और महक दे गए जो आने वाले समय में शब्द को नया अर्थ देंगे। उनकी कविता में गांव का सपना और शहर की बेचैनी एक साथ संवाद करती है और कहती है कि - ***ठंड में नहीं मरते शब्द/वे मर जाते हैं साहस की कमी से/ कई बार मौसम की नमी से/ मर जाते हैं शब्द।*** कवि केदारनाथ सिंह को हम सब ने साहित्य, समाज और समय पर हंसते-बोलते हुए सुना है। मुझे आज इसीलिए लगता है कि शायद केदारनाथ सिंह की कविता के मर्म को हमारा महानगर नहीं समझता। क्योंकि महानगर में कविता का बाजार संवेदनाओं की मंदी और साहित्य के बौद्धिक दिवालियापन का शिकार है।

केदारनाथ सिंह सारी उम्र हिन्दी के शिक्षक रहे और वाराणसी से लेकर दिल्ली तक अपनी कविता में यही कहते रहे कि - ***मुझे विश्वास है/ यह पृथ्वी रहेगी/ यदि और कहीं नहीं तो मेरी हड्डियों में/ यह रहेगी जैसे पेड़ के तने में रहती है दीमक/जैसे दाने में रह लेता घुन/ यह रहेगी प्रलय के बाद भी मेरे अंदर/ यदि और कहीं नहीं तो मेरी जबान और मेरी नश्वरता में यह रहेगी/ अत: कवि केदार मानवता के कवि है।***

कवि केदारनाथ सिंह की कविता(बाघ) 20वीं शताब्दी के ढलते अंधेरों की रचना है जो इस शताब्दी का पंचतंत्र ही है। इसे पढ़कर आप जान सकेंगे कि ये दुनिया और ये वर्तमान समय कितना विकट है। एक अंश बाघ का पढ़ें - ***सुबह के अखबार में/ एक छोटी सी खबर है/ कि पिछली रात शहर में/ आया था बाघ।***

पर सवाल यह है कि आखिर इतने दिनों बाद इस इतने बड़े शहर में/ क्यों आया था बाघ/ क्या वह भूखा था ?

बीमार था ? क्या शहर के बारे में बदल गए हैं/ उसके विचार/ यह कितना अजीब है/ कि वह आया/ उसने पूरे शहर को, एक गहरे तिरस्कार और घृणा से देखा/ और जो चीज जहां थी/ उसे छोड़कर चुप और विरक्त चला गया बाहर। इस अर्थ में स्पष्ट नजर आता है कि केदारनाथ सिंह समाज के सेतु कवि भी हैं और संस्कारित समाज को दिशा दिखाते समाज कवि भी।

खाप पंचायतों को शीर्ष कोर्ट की फटकार

सुप्रीम कोर्ट ने प्रेमी जोड़ों को खाप के खौफ़ से बचाने के लिए दिए पर्याप्त निर्देश। क्या अब भी समाज के गिने-चुने ठेकेदार रहेंगे कानून से ऊपर?

जगदीश सालवी

जाति, धर्म अथवा समान गौत्र में दो बालिगों की शादी को लेकर सर्वोच्च न्यायालय ने जो फैसला सुनाया है, वह महत्वपूर्ण है, हालांकि जमीन पर इसका कितना असर होगा, यह संदिग्ध है। सुप्रीम कोर्ट ने स्वेच्छा से अन्तरजातीय और अन्तरधार्मिक विवाह करने वाले वयस्कों के मामले में खाप पंचायतों के दखल को गैर-कानूनी करार देते हुए 27 मार्च, 2018 को उनके निर्णयों और दखल पर पाबंदी लगा दी है। अदालत का कहना था कि यदि दो बालिग मर्जी से शादी करते हैं तो इसमें किसी को दखलन्दाजी का हक नहीं है। प्रधान न्यायाधीश दीपक मिश्रा, न्यायमूर्ति ए. एम. खानविलकर और न्यायमूर्ति धनंजय वाई चन्द्रचूड़ की खंडपीठ ने खाप का हस्तक्षेप रोकने के लिए दिशा-निर्देश भी जारी किए जो संसद से कानून बनाने तक प्रभावी रहेंगे। शीर्ष अदालत के इस आदेश से अंतर-जातीय और अलग-अलग धर्म में अपनी मर्जी से विवाह करने वाले उन युगलों को बड़ी राहत मिली है, जिन्हें अक्सर ऐसी शादी पर विरोध का भाजन बनना पड़ता है। कई बार तो परिवार की इज्जत के नाम पर इनकी हत्या तक कर दी जाती है। सर्वोच्च न्यायालय ने 2010 में गैर सरकारी संगठन शक्ति वाहिनी और मानुषी द्वारा दायर जनहित याचिका पर सुनाए गए फैसले में खाप पंचायतों पर प्रतिबंध लगाने के साथ ही जो दिशा-निर्देश दिए हैं, उनके अनुसार विपरीत जाति, धर्म अथवा गौत्र में विवाह करने वाले जोड़ों तथा उनके परिजनों को उचित सुरक्षा मुहैया कराई जाएगी। जरूरत पड़ने पर उन्हें सुरक्षित स्थान पर रखा जाएगा। सरकार मामूली किराया लेकर उन्हें सुरक्षित रिहायश भी दे। उन्हें परेशान करने वालों के विरूद्ध आईपीसी की धारा 141, 143, 503 तथा 506 के तहत अभियोग पंजीकृत किया जाएगा। पुलिस से कहा गया है कि वह ऐसे मामलों में कार्रवाई छ: माह में पूरी कर ले। हर जिले में स्पेशल सेल और 24 घण्टे की हेल्पलाइन बनाई जाएं। यदि हत्या हो जाती है तो मामले फास्टट्रेक कोर्ट में चलेंगे और रोजाना सुनवाई होगी जो 6 माह में पूरी कर ली जाएगी।

सप्रीम कोर्ट की ओर से खाप पंचायतों को लेकर दिए गए फैसले का ऑनर किलिंग के शिकार 'मनोज-बबली कांड' के पीड़ित मनोज की मां ने स्वागत किया है। लेकिन इसके प्रभावी रूप से लागू होने पर संदेह भी व्यक्त किया है।

हरियाणा के कैथल जिले के निवासी बबली और मनोज की शादी 2007 में हुई थी और 2009 में उनकी हत्या कर दी गई। खाप पंचायत के मुताबिक उन दोनों का एक-दूसरे के साथ शादी करना गलत था। क्योंकि दोनों एक ही बिरादरी के थे। मनोज और बबली ने आर्य समाज मंदिर में शादी की थी।

कैथल जिले के करोड़ा गांव निवासी मनोज की मां चंद्रपति ने रुंधे गले से कहा, 'प्रदेश में ना जाने कितने मनोज-बबली इस झूठी शान की भेंट चढ़ गए।' उन्होंने कहा, 'देश में राजनीति हावी है। इसके चलते सरकार का कोर्ट में कुछ और पक्ष होता है और धरातल पर कुछ और। अगर सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन होगा तो हमारे बच्चे सुरक्षित रहेंगे। इससे समाज के तथाकथित ठेकेदारों के मुंह पर एक करारा तमाचा पड़ेगा।'

एक-दूसरे मामले में खाप पंचायत ने झज्जर जिले के गांव चिमनी ढराना निवासी रविन्द्र व शिल्पा को एक गोत्र में शादी करने पर गांव से बाहर जाने और परिवार के सामाजिक बहिष्कार का फरमान सुनाया था। रविन्द्र व शिल्पा फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट गए जहां से 17 लोगों पर कार्रवाई करने को कहा गया। लेकिन दबाव के चलते रविन्द्र व शिल्पा अपना गांव छोड़ दिल्ली में रहने को मजबूर हैं।

खाप पंचायत

एक गौत्र या फिर बिरादरी-के सभी गौत्र मिल कर खाप पंचायत बनाते हैं। इसमें समाज के मुद्दों को लेकर विचार और समाज की मान्यताओं और परम्पराओं के विरूद्ध जाने वालों के लिए सामाजिक सजा तय होती है। इनकी बैठकों में गौत्र-बिरादी के लोगों को बुलाया जाता है, कोई आए अथवा नही, पंचायतें निर्णय लेने का अपना काम बेबाकी से करती हैं। जिसे सर्वसम्मत निर्णय कहा जाता है। हरियाणा में ऐसी पंचायतों का दबदबा और खौफ कुछ ज्यादा ही है।

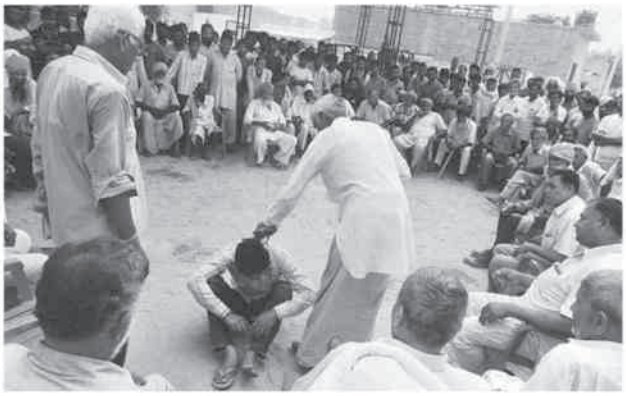

प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय पीठ ने खाप-पंचायतों को साफ शब्दों में कह दिया है कि वे कानून हाथ में लेकर समाज का ठेकेदार बनने की हिमाकत न करे। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के अनुसार पिछले दो-तीन साल में समाज की आन के नाम पर हत्या की करीब 300 वारदातें हुई। एक जाति या गौत्र में शादी, प्रेम सम्बन्ध, अवैध सम्बन्ध, जमीन-जायदाद के विवाद जैसे मामलों में इन पंचायतों द्वारा समाज से बहिष्कृत कर देना, पीट-पीट कर मार डालना, निर्वस्त्र कर गांव-कस्बे में घुमाना, पेड़ से बांध कर मार-पीट करना, सगौत्र विवाह पर पति-पत्नी को दण्ड के साथ भाई-बहन घोषित कर देना सामान्य सी बात है। न इनके पास मानवीय संवेदना हैं और न ही कानून का डर। आदिम युग में भी संभवतः ऐसा बर्ताव नहीं हुआ होगा, जो आज तथाकथित सभ्य समाज में हो रहा है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता के खिलाफ जहां-जहां भी ऐसी पंचायतें एकजुट हो रही हैं, समाज के प्रबुद्धजन का दायित्व है कि वे उसमें शामिल लोगों को कानून के कठघरे में लाकर खड़ा करें ताकि इस सामाजिक बुराई का अन्त हो सके। इस तरह की संस्थाएं सिर्फ पितृसतात्मक समाज के हथियार है। इन्होंने हमेशा समाज में स्त्रियों के शोषण और उन्हें दबाकर रखने का ही प्रयास किया है।

इन पंचायतों को जहां समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा को बढ़ावा देने का काम करना चाहिए, उसके स्थान पर यह पहले से चली आ रही कुरीतियों को और अधिक मजबूती से पकड़े रखने और उन्हें दूसरों पर थोपने का काम कर रही हैं, जो कतई स्वीकार्य नहीं हो सकता। दहेज विरोधी कानून मौजूद है, बावजूद इसके लिए आए दिन बेटियां इस कुप्रथा की भेंट चढ़ रही है। अतएव कानून के साथ-साथ समाज को भी ऐसे आपराधिक गिरोहों के खिलाफ लामबंद होना होगा।

मोबाइल
9413665250
9001010790

आर.एस. देवड़ा

मातेश्वरी कंस्ट्रक्शन

भवन निर्माण का कार्य मय मेटेरियल सहित किया जाता हैं।

वास्तु के अनुसार नक्शा भी बनाया जाता है

"वरडा हाऊस"

27, राजेश्वर नन्द कॉलोनी, 100 फीट रोड, मीरा नगर, भुवाणा, उदयपुर

अन्ना ने खुद को ही ठग लिया

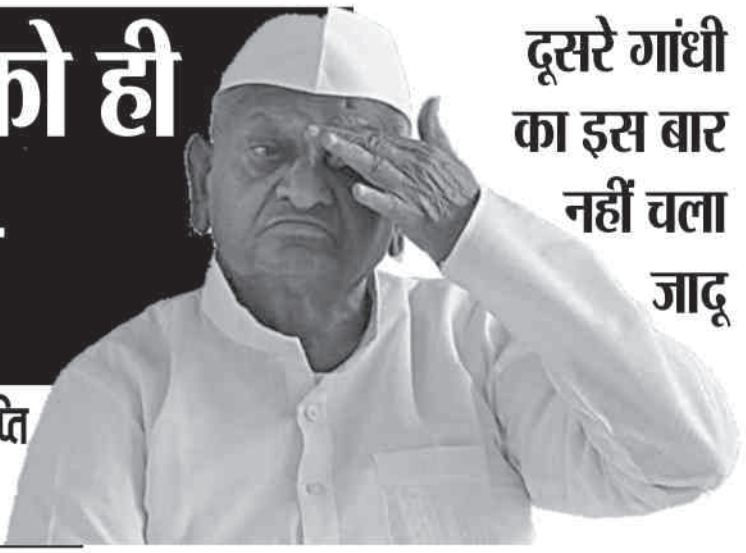

दूसरे गांधी का इस बार नहीं चला जादू

नतीजे पर पहुंचे बिना अनशन की समाप्ति से किसान नाराज, युवा नाखुश

-उमेश शर्मा

2011 की बात है। तब चौमासे के दिन थे और दिल्ली का आसमान बादलों से आच्छादित था। इसी उमस भरे दिनों में अन्नशन पर बैठे थे अन्ना हजारे उर्फ देश के दूसरे गांधी। केंद्र में कांग्रेस के मनमोहन सिंह की सरकार थी, दिल्ली में शीला दीक्षित की सदारत में कॉमनवेल्थ गेम के मैनेजर चांदी काट रहे थे। देश के सबसे बड़े एकाउंटेंट (सीएजी) विनोद राय सरकार के मंत्रियों के मार्फत एक लाख 76 हजार करोड़ रुपए के घोटाले का कच्चा-पक्का हिसाब जनता के सामने रख रहे थे। तब अन्ना के साथ किरन बेदी थीं, प्रशांत भूषण थे, अरविंद केजरीवाल नाम का एक फितरती नौजवान, योग सिखाने और आयुर्वेदिक दवाएं बेचने वाला एक साधु, संघ के पूर्व सिद्धांतकार केएन गोविंदाचार्य, योगेंद्र यादव, सिनेमा एक्टर ओम पुरी और परदे के पीछे सुपर जासूस अजित डोभाल अपनी ताकत लगाए हुए थे। टीवी के पत्रकारों में अन्ना हजारे को 'दूसरा गांधी' बताने की होड़ लगी थी। नारे लगाए जाते थे -अन्ना नहीं है आंधी है -देश का दूसरा गांधी है। लेकिन 29 मार्च 2018 को इस अन्ना के नाम की आंधी का अंत हो गया। अन्ना ने 23 मार्च को शहीदी दिवस पर सशक्त लोकपाल, चुनाव सुधार प्रक्रिया और किसानों की मांगों को लेकर रामलीला मैदान में 7 साल बाद फिर से अन्नशन शुरू किया था। लेकिन इस बार सब कुछ बदला-बदला सा था। नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बन गए, अरविंद केजरीवाल मुख्यमंत्री बन गए, किरन बेदी गवर्नरी संभाल रही हैं, ओम पुरी परलोक चले गए और अजित डोभाल राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बन गए। इस बार अन्नशन में अन्ना अपने ओटले पर अकेले बैठे नजर आए। अन्ना के साथ बचे तो सिर्फ खिचड़ी बालों और पकी उम्र वाले पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र से आए कुछ लुटे-पिटे किसान, चिटफंड कंपनियों से धोखा खाए मध्यम वर्ग के इनवेस्टर, तिरंगी साडियों में आई पूर्वी उत्तर प्रदेश की महिलाओं का एक दल और ऑर्केस्ट्रा पर देशभक्ति गीत गाने वाले कुछ गायक। अब सवाल ये है कि अन्ना का आकर्षक कहां खो गया? अन्ना के आंदोलन का दूसरा संस्करण फ्लॉप कैसे हो गया? इन सारे सवालों के जवाब अन्ना से जुड़ा हर आम आदमी मांग रहा है। सवाल ये भी जहन में उठना लाजमी है कि पिछली बार भ्रष्टाचार के खिलाफ जो ज्वार पैदा हुआ था वो पानी के महज एक बुलबुले में कैसे तब्दील हो गया? या फिर वो महज कमजोर लहरें थीं जिनका किनारों से टकराने के बाद अस्तित्व ही समाप्त हो गया। अन्ना आंदोलन पर लिखी एक किताब 'अन्ना-थर्टीन डेज दैट एवेकेंड इंडिया' में लिखा है कि मुंबई अनशन के बाद अन्ना और उनकी टीम एक चौराहे पर पहुंच गई है और आगे का रास्ता खोजने के लिए उसे नए सिरे से नई तैयारी करनी होगी। सिर्फ बार-बार अनशन और भूख हड़ताल से काम नहीं चलेगा। कुछ नया करना होगा। नई ऊर्जा का संचार करना होगा। क्या वो कर पाएंगे? इस सवाल के साथ किताब खत्म हो जाती है। 29 मार्च को इन्हीं सवालों और जवाबों की तिलमिलाहट के साथ अन्नशन का जो न सोचा था उससे भी ज्यादा भयावह अंत हुआ। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़णवीस के हाथ से जब अन्ना पानी पीकर आमरण अनशन तोड़ रहे थे तब किसी ने मंच की तरफ एक जूता भी उछाल दिया। निशाने पर कौन था यह साफ नहीं हुआ लेकिन अन्ना के इस आंदोलन से एक और हताशा लोगों को हाथ लगी। आंदोलन में शामिल होने वाले किसान नेता शिवकुमार बताते है कि अन्ना को जनमानस का ऐतिहासिक समर्थन मिला। जो अन्ना ने कहा जनता ने किया, जहां बुलाया वहां चले आए। लेकिन इस बार हमारे साथ धोखा हुआ है। किसानों की मांगों पर कोई बात नहीं हुई। लेकिन अन्ना का दावा है कि सरकार ने उनकी सभी मांगें मानते हुए छह माह का समय मांगा था जो उन्होंने दिया है। यदि सरकार वादा पूरा नहीं करती है तो सितंबर से फिर आंदोलन करेंगे।

अन्ना की पिछली बार की बात करें तो जनमानस की ताकत के सामने सरकार को झुकना पड़ा और उसने लोकपाल बनाने वाली कमेटी में अन्ना और उसकी टीम को जगह दी। व्यवस्था परिवर्तन की उम्मीद जगी और पूरी होती नजर आई। कोई भी जनांदोलन उम्मीद की ऑक्सीजन पर चलता है। लेकिन इस बार उम्मीद-की-टूटन थी जो अन्ना के नए अनशन को वो आग नहीं दे पाई। पिछली बार राजनीतिक मंशा रखने वाले कपितय नेताओं ने ठगा था, जो अब मंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल से लेकर सरकारी एजेंट बन बैठे है। इस बार के अन्ना ने खुद 'अन्ना' को ही ठग लिया। तब की ठगी ने सिविल सोसायटी के नाम निर्दोष बिरादरी के परवान चढ़ते हौसले को ठंडा किया था, इस बार की ठगी ने किसानों-मजदूरों में जगी उम्मीद की एक मध्यम सी लौ को ही बुझा दिया। ये सच है कि अब कोई नहीं कहेगा कि 'मैं भी अन्ना, तू भी अन्ना', हम सब अन्ना।

मार्केटिंग की 'ट्रिकबाजी' में अन्ना फ्लॉप

पिछली बार के आंदोलन से लोगों को निराशा हाथ लगी। एक तो आंदोलन के बाद कुछ नहीं बदला और दूसरा आंदोलन से जुड़े कई बड़े नाम के लोग विवादों

के बाद बिखर गए। इस बार अन्ना और उनकी टीम में कोई खास बदलाव भी नहीं दिखा। न तो उनकी 'स्ट्रेटजी' में 'नयापन' दिखा और न ही उनके 'मकसद' में। मंच से दिए अन्ना के भाषण भी अपनी 'प्रखरता' खो चुके थे। अन्ना और उनकी टीम शायद ये भी भूल गई कि भारतीय समाज नए दौर में सांस ले रहा है, जिसकी बुनियाद संचार पर टीकी है। मार्केटिंग की इस 'ट्रिकबाजी' में भी अन्ना और टीम फिलहाल पिछड़ती दिखी। अन्ना का इस बार भी वही भाषण सुनाई दिया कि 'वो मंदिर मे रहते हैं, उनके पास सोने को एक खाट है और खाने के लिए एक प्लेट और कोई बैंक बैलेंस नहीं है। देश के लिए जीना और देश के लिए मरना यही उनके जीवन का मकसद है, उनकी इस साधुता का सम्मान है, किन्तु जिस मकसद के लिए वे जो कुछ कर रहे हैं, यदि उसका परिणाम ही सामने न आए तो वह जनांदोलन के लिए नुकसानदेह भी है।

राजनीति में कच्चे दूसरे गांधी

दरअसल, अन्ना के आंदोलन में कुछ बुनियादी खोट रही है। पहली खोट, ऐसे आंदोलन को अराजनीतिक करार देना है। राजनीति तो हर जगह होती है। राजनीति से अपने को दूर रखने की अन्ना की घोषणा आत्मप्रवंचना है। जरूरत थी महात्मा गांधी की तरह राजनीति को साधने की, जिसमें अन्ना पूरी तरह विफल रहे। उन्होंने अपने को अराजनीतिक करार देकर आम जनता से खुद को अलग कर लिया। क्योंकि जनता अराजनीतिक नहीं हो सकती। परिवार से लेकर व्यक्तिगत संघर्ष और सामाजिक सत्ता के लिए संघर्ष तक सब में राजनीति सामाहित होती है। मंच व्यवस्था से ही प्रतीत हो रहा था कि अन्ना सबसे ऊपर अकेले हैं। किसानों और मजदूरों के लिए नेताओं के लिए नीचे अलग ही मंच बनाया गया था। कार्यकर्ता नारे लगा रहे थे और संगीत में देशभक्ति की मादकता घुली थी। अन्ना के अनशन का अंत एक मुगालते का अंत है।

तब और अब के आंदोलन में ये फर्क

मुद्दा 2011

अन्ना ने 16 अगस्त 2011 को भ्रष्टाचार के खिलाफ भूख हड़ताल पर बैठने की घोषणा की थी। सशक्त लोकपाल कानून की मांग को लेकर 19 अगस्त को रामलीला मैदान में भूख हड़ताल शुरू की थी।

प्रमुख चेहरे : अरविंद केजरिवाल (अब दिल्ली के मुख्यमंत्री), किरण बेदी (अब गवर्नर), वीके सिंह (केंद्रीय मंत्री), मनीष सिसोदिया (उप मुख्यमंत्री), योगेंद्र यादव (स्वराज आंदोलन खड़ किया, पहले आप में रहे), प्रशांत भूषण (आप में रहे अब स्वराज आंदोलन से जुड़े है), कुमार विश्वास (आंदोलन का अहम चेहरा, अब आप नेता)।

इन बातों पर अन्नशन टूटा : जन लोकपाल विधेयक की मांग कर रहे अन्ना की तीन शर्तों पर सहमति का संसद द्वारा प्रस्ताव पास करने के बाद अन्ना ने अनशन स्थगित किया था।

12 : दिन तक चला था अन्ना का आंदोलन

मुद्दा 2018

अन्ना ने 23 मार्च को देश भर के किसानों की समस्याओं के निराकरण, लोकपाल-लोकायुक्त कानून तथा चुनाव सुधार की मांगों को लेकर रामलीला मैदान से सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया।

पुराने चेहरे साथ नहीं : इस बार 2011 में अन्ना आंदोलन के पुराने चेहरे साथ नहीं दिखे। सत्याग्रह के लिए इस बार 24 लोगों की कमेटी बनाई गई। पिछले आंदोलन की कमेटी से जयकांत मिश्रा और डॉ. राकेश रफीक शामिल रहे। हालांकि कर्नाटक के लोकायुक्त व सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज एन संतोष हेगड़े, शहीद सुखदेव के परिजन, गोभक्त संत गोपाल दास, टीम अन्ना का चेहरा रहे योगेंद्र यादव अन्ना को समर्थन देने रामलीला मैदान पहुंचे।

इन बातों पर अनशन टूटा : सरकार ने कृषि व लोकपाल तथा लोकायुक्त को लेकर की गई अन्ना की मांगों पर सकारात्मक आश्वासन दिया। चुनाव सुधार पर उनके मुद्दे पर उसे चुनाव आयोग पहुंचाने की बात कही।

7वें : दिन अन्ना और सरकार में सहमति बनी

तीसरी आँख की निगरानी समस्या का हल नहीं

बच्चों की सुरक्षा के लिए जो वास्तविक कदम उठाए जाने चाहिए उनका कैमरे द्वारा कक्षा कक्ष में निगरानी से कोई सरोकार दूर-दूर तक नहीं है। घर से स्कूल तक जाने वाले रास्ते का सुरक्षित होना बेहद आवश्यक है जिस वाहन से बच्चे स्कूल जाते हैं उसके चालक व परिचालक की निगरानी शिक्षक और छात्रों की निगरानी से ज्यादा जरूरी है।

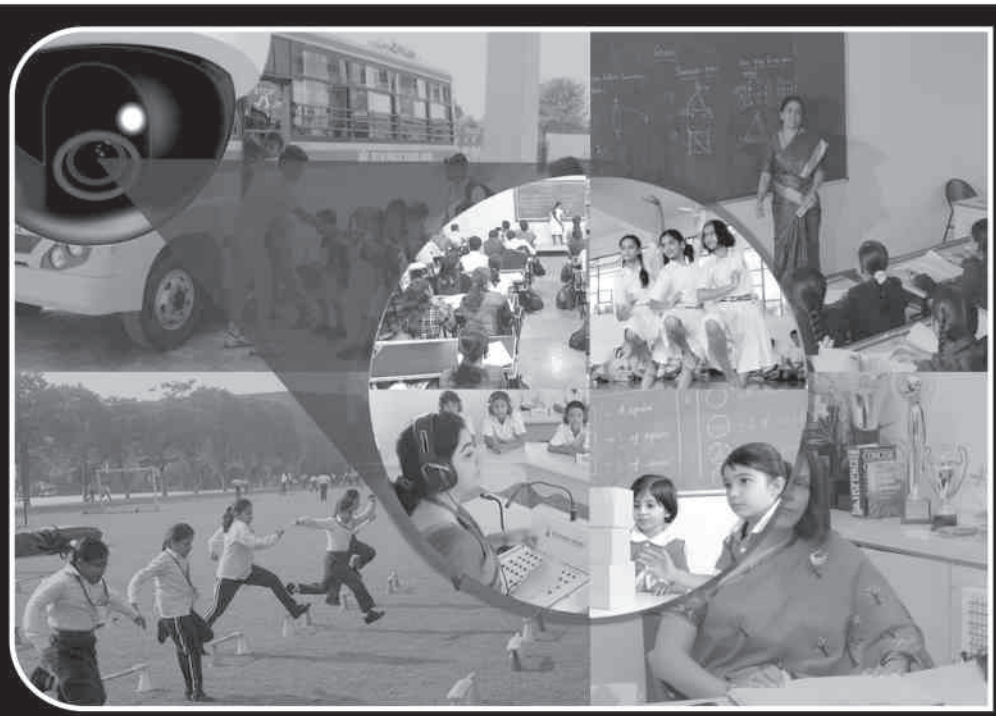

बदलते सामाजिक परिवेश में बच्चों की सुरक्षा को लेकर गम्भीर चूक सामने आ रही है। जहां एक ओर मासूम बच्चियों के साथ दरिंदगी के प्रकरण देशव्यापी हो गए हैं वहीं अगुवा मासूमों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। बाल शोषण यूं तो कोई नई समस्या नहीं है परन्तु तकनीक की सर्वसुलभता व भौतिकवादी सोच के कारण पारिवारिक संबंधों में आई औपचारिकता बच्चों व किशोरों को असमय परिपक्व बना रही है। कुछ दिनों पूर्व हरियाणा के गुरुग्राम में निजी शिक्षण संस्थान में मासूम की उसी के विद्यालय के सीनियर द्वारा निर्ममता के साथ हत्या कर दी गई। पढ़ाई में अरूचि व शैक्षणिक वातावरण से उच्चाटन किशारों को अपराध के लिए प्रेरित कर रहा है, जो महज स्कूल की छुट्टी करवाने जैसे मामूली कारण के लिए अपने साथी मासूम बच्चों की जिंदगियां छीन रहे हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो अपराध की बदलती प्रवृत्ति व इसके पीछे के छिछले कारण आज समाज के लिए बड़ी चुनौती बन चुके हैं। समाज में तेजी से व्याप्त हो रही वृत्तियां जो क्षणिक सुख के लिए दूसरे को लक्ष्य बनाने के लिए उकसाती हैं उन पर पार पाना असंभव हो गया है।

- डॉ. अर्चना शर्मा

दिल्ली सरकार ने घोषणा की है कि सभी स्कूलों में लाइव सीसीटीवी कैमरे लगवाएं जाएंगे जिससे कि अभिभावक कक्षा कक्ष में चल रही गतिविधियों को लाइव स्ट्रीम कर भयमुक्त हो सके। सरकार का यह कदम माता-पिता को किस तरह बच्चों को सुरक्षित होने के प्रति आश्वस्त करेगा, समझ से परे है। बच्चे सुरक्षित रहे इसके लिए आवश्यक है कि कक्षा-कक्ष के बाहर उन्हें सुरक्षित वातावरण सुलभ करवाया जाए क्योंकि गुरुग्राम के स्कूल में जो हृदय विदारक घटना घटी थी उसी प्रकार की घटना लखनऊ में भी हुई, दोनों ही मामलों में बच्चों पर जानलेवा हमला कक्षा में नहीं किया गया वरन् एकांत में अपराध को अंजाम दिया गया था। सरकार ने अभिभावकों के उद्वेलित मन को शांत करने के लिए जो उपाय निकाला है उसके अनेकों प्रतिगामी असर भविष्य में देखने को मिलेंगे। मुख्य रूप से कक्षा-कक्ष की गतिविधियों को लाईव देखने वाले अभिभावक स्वाभाविक शिक्षण गतिविधियों पर निगरानी रखना शुरू कर देंगे और छात्र शिक्षकों के बीच होने वाले संवाद पर प्रतिक्रियाएं आने लगेंगी जो कक्षा-कक्ष के वातावरण को तनावपूर्ण बनाने के साथ ही उसे पूरी तरह से असहजता भी बनाएगी। वैसे भी अत्यधिक नियंत्रण व निगरानी स्वाभाविकता के विपरीत होती है और अमूमन इस प्रक्रिया को आपराधिक गतिविधियों के लिए प्रयोग में लाया जाता है। लगातार निगरानी किए जाने से शिक्षकों व बच्चों पर जो मानसिक दबाव बनेगा वह आगामी समय में बच्चों के समग्र विकास में बाधक के रूप में सामने आएगा। कैमरे द्वारा निगरानी का सीधा तात्पर्य यह है कि जो इस दायरे में आते हैं उनकी नीयत पर शंका व्यक्त की जा रही है जो शिक्षकों व छात्रों में अपराधबोध को भी जन्म दे सकता है।

बच्चों की सुरक्षा के लिए जो वास्तविक कदम उठाए जाने चाहिए उनका कैमरे द्वारा कक्षा-कक्ष में निगरानी से कोई सरोकार दूर-दूर तक नहीं

है। घर से स्कूल तक आने जाने वाले रास्ते का सुरक्षित होना बेहद आवश्यक है। जिस वाहन से बच्चे स्कूल जाते हैं उसके चालक व परिचालक की निगरानी शिक्षक और छात्रों की निगरानी से ज्यादा जरूरी है। पूरे देशभर में अनेकों ऐसे प्रकरण प्रतिदिन संज्ञान में आते हैं जहां चालक व परिचालक मासूम बच्चों के यौन उत्पीड़न के लिए जिम्मेदार पाए गए हैं। अपवाद स्वरूप सरकारी व प्राइवेट दोनों ही शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों द्वारा यदा-कदा छात्रों के साथ दुर्व्यवहार व उत्पीड़न किया जाता है परन्तु इसे भी कक्षा-कक्ष में नहीं एकांत में अंजाम दिया जाता है। जिस बालक को दिल्ली के स्कूल में निर्ममता से मारा गया था उसके लिए भी अपराध को अंजाम देने वाले छात्र ने शौचालय जैसी कमोबेश एकांत स्थान को चुना था। कुछ दिनों पूर्व जयपुर में बच्चों के साथ यौन उत्पीड़न का घिनौना प्रकरण सामने आया जिसमें स्पष्ट हो गया था कि जितनी गलती पढ़ाने वाले शिक्षक की थी उससे ज्यादा अभिभावकों की थी जिन्होंने बच्चों में हो रहे परिवर्तन व उनमें व्याप्त भय को नजरअंदाज किया।

हमारा तालुक परम्परावादी समाज से है जहां पहले से निर्धारित मापदण्डों में परिवर्तन आसानी से नहीं होता यही वजह है कि वैश्विक स्तर पर समाज में आए खुलेपन के बावजूद आज भी ना तो स्कूलों में और ना ही परिवार के द्वारा यौन शिक्षा को महत्व दिया जाता है। बचपन से किशोरावस्था की ओर बढ़ने वाले बच्चों में हो रहे शारीरिक, मानसिक व हार्मोनल परिवर्तन को जिस कदर नजरअंदाज किया जाता है वह हमारी सबसे बड़ी चूक है। जीवन के परिवर्तन की इस कड़ी को जिस बेदर्दी व बेपरवाही से नकारा जाता है उसी का परिणाम है कि बच्चे नासमझी में भटकन का शिकार होकर अपराध को कारित कर रहे हैं। कोढ़ में खाज का काम सोश्यल मीडिया कर रहा है जहां बम बनाने से लेकर मर्डर करने तक के आसान व सुलभ तरीके एक क्लिक पर उपलब्ध हैं। पूरे विश्व में उग्र प्रवृत्तियों का आसानी से संचार कर युवाओं को शिकार बनाने का काम इन्टरनेट द्वारा हो रहा है। ब्लू व्हेल गेम ने ना जाने कितने अनगिनत बच्चों की जीवन लीला समाप्त कर दी है। जब बच्चों को प्रभावित करने वाले अनेकों कारक पग-पग पर जमे हों और जड़ें गहरी हों तो उनसे बचने के लिए उसी अनुपात में सुरक्षा कवच की दरकार है।

कक्षा-कक्ष में तीसरी आंख की निगरानी ऐसा प्रतीत होता है जैसे विपदा का अहसास कर आंखें मूंद लेना। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सुरक्षित व संस्कारवान बच्चों से ही देश का भविष्य सुदृढ़ होगा इसलिए समग्र रूप से सुरक्षित वातावरण प्रदान करने के लिए समन्वित प्रयासों हेतु इच्छाशक्ति की दरकार है। व्यवस्था में बैठे लोग पाठ्यक्रम में विचारधारा के अधिरोपण को लेकर बेहद चिंतित है और इतिहास के पुनर्लेखन को भावी पीढ़ी के लिए अवश्यम्भावी करार दे रहे हैं किन्तु उन्हें शायद आभास नहीं है कि देश उनसे कुछ और ही आकांक्षाएं रख रहा है। पूरे विश्व में युवातम देश होने के कारण युवा केन्द्रित नीतियों की बड़ी आवश्यकता है जो रोजगारपरक शिक्षा देने के साथ ही बच्चों के युवा होने तक के सफर को सुरक्षित बनाकर संस्कारवान पीढ़ी के सृजन में योगदान दे।

चितौड़गढ़ अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लि.

प्रधान कार्यालय - केशव माधव सभागार, एनसीएम सिटी, चित्तौड़गढ़ 01472-243770

मिस्ड कॉल अलर्ट सेवा
मोबाइल नं. : 8866466644
इस नम्बर पर मिस्ड काल कर अपना बेलेन्स जानें। इस हेतु अपना मोबाइल नम्बर खाते में जुड़ाएं।

आईएमपीएस (तुरन्त भुगतान सुविधा)
IMMEDIATE PAYMENT SERVICE
NO CASH GO DIGITAL

सीकेवाईसी एवं ई-केवाईसी युक्त खाते
अपने खाते में तुरन्त आधार व पेन नं. जुड़ाएं।

तुरन्त (डेबिट कार्ड) सुविधा

उपर्युक्त सुविधाओं के साथ त्वरित समस्त बैंकिंग सुविधा

- मियादी जमाओं पर अधिकतम ब्याज दरें, ऋणों पर न्यूनतम ब्याज दर के साथ सरलतम प्रक्रिया।
- एक बार सेवा का मौका अवश्य दें, इन सुविधाओं की जानकारी के लिए अपनी निकटतम शाखा में सम्पर्क करें।

शाखाएं
केशव माधव सभागार, एनसीएम सीटी, चितौड़गढ़ (01472-248880), कृष्णा अपार्टमेन्ट, कचेरी चौराहा, निम्बाहेड़ा (01477-224660), मेन रोड, चन्देरिया (01472-255033), मिस्त्री मार्केट, मोती तालाब के पास, बेगूं (01474-230066), एस.एस. प्लाजा, स्टेशन रोड, कपासन (01476-230211), दक प्लाजा, हॉस्पिटल रोड, बडी सादड़ी (01473-264222)

श्रीमती विमला सेठिया, अध्यक्ष
श्री शिवनारायण मानधना, उपाध्यक्ष
श्रीमती वन्दना वजीरानी, प्रबन्ध निदेशक

'टाइगर' को जेल, 2 दिन में बेल

-अमित शर्मा

बिश्नोई समाज बरी हुए लोगों के खिलाफ करेगा अपील

■ काले हिरण के शिकार मामले में सलमान को 5 साल की सजा और 10 हजार रुपए का जुर्माना

■ जोधपुर सीजेएम कोर्ट ने सैफ अली खान, तब्बू, सोनाली व नीलम को किया बरी

'हम साथ-साथ हैं' की शूटिंग के दौरान कांकणी में 2 दशक पूर्व दो काले हिरणों के शिकार मामले में 5 अप्रैल को सजा सुनाई गई। फिल्म अभिनेता सलमान खान को जोधपुर की सीजेएम कोर्ट ने दोषी करार दिया और 5 साल की सजा के साथ ही 10 हजार रुपए का जुर्माना लगाया। जबकि सह आरोपी रहे एक्टर सैफ अली खान, तब्बू, नीलम और सोनाली बेंद्रे बरी हो गए। सजा सुनाए जाने के बाद सलमान को न्यायिक हिरासत में लेकर जोधपुर जेल भेज दिया गया। हालांकि उनको 2 दिन बाद ही जमानत मिल गई। गौरतलब है कि 28 मार्च को इस मामले में सीएजेएम देवकुमार खत्री की कोर्ट में सुनवाई हुई थी। इसके बाद से जज ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था।

सलमान बने कैदी नंबर 106

जोधपुर जेल में सलमान खान कैदी नंबर 106 बनकर रहे। उन्हें बैरक नंबर 7 में रखा गया। इसे डेढ़ बैरक भी कहा जाता है। जेल के अंदर ही मेडिकल जांच भी हुई। रेप के मामले में पांच साल से जोधपुर जेल में बंद आसाराम से उनकी सलाम-दुआ हुई। सलमान की एक रात जेल में ही गुजरी।

सलमान खान को सजा मिलने पर पटाखे जलाकर जश्न मनाते विश्नोई समाज के लोग।

इधर, बिश्नोई समाज ने इस फैसले का स्वागत करते हुए पटाखे फोड़े। सलमान को जमानत मिलने के बाद समाज के लोगों ने कहा कि वे फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट में जाएंगे। दूसरी ओर सलमान को मिली सजा जितना हैरान नहीं करती है, उससे ज्यादा भारतीय न्याय-व्यवस्था के बारे में सोचने पर मजबूर करती है। आपको बता दें कि चिंकारा और काले हिरण, दोनों ही दुर्लभ वन्य जीवों की श्रेणी में आते हैं और उनका शिकार करना गैर-कानूनी है। जाहिर है कि इसको लेकर सलमान और उनके सहयोगियों के खिलाफ मुकदमा चलना ही था। लेकिन इसके बाद की जो कहानी है, वह काफी उलझाने वाली है। उनके खिलाफ तीन मामले तो शिकार के बने और एक मामला गैर-कानूनी हथियार रखने का बना। दरअसल, जब सलमान के कमरे से उनकी निजी पिस्टल और राइफल बरामद की गई थी, उनके लाइसेंस की अवधि समाप्त हो चुकी थी। इन चारों मामलों की प्रक्रिया अलग-अलग चली है और कुछ की तो अभी भी चल रही है।

सलमान खान बंदूकों वाले मामले में तो बरी हो गए लेकिन चिंकारा मामले में उन्हें निचली अदालत ने सजा सुनाई। लेकिन उच्च न्यायालय ने उन्हें इस मामले में आरोप मुक्त कर दिया, जिसके खिलाफ राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में अपील की और यह मामला अभी तक खत्म नहीं हुआ है। इसी तरह एक काले हिरण के मामले में वह बरी हो गए जबकि दूसरे शिकार के मामले में अब जाकर जोधपुर की अदालत ने पांच साल की सजा सुनाई। जाहिर है कि सलमान खान अब ऊपरी अदालत का दरवाजा खटखटाएंगे और यह मामला लंबा चलता रहेगा। एक दिन के शिकार का मामला 20 साल तक खिंचता गया तो जाहिर है कि इसके जल्दी खत्म होने के आसान नजर नहीं आ रहे।

कानून की दुनिया में कहावत है कि देर से हुआ न्याय, न्याय नहीं होता। काले हिरण के मामले में भी कुछ ऐसा ही होने की संभावना है। जब भी इस मामले में फैसला सुनाया जाएगा शायद ये भी देरी से न्याय मिलने के कारण न्याय के लिए सम्मान हासिल करने का अधिकार खो चुका होगा। विशेषज्ञ भी इस बात को मानते हैं कि जब-जब मामले लंबे खिंचे जाते हैं, तो अभियुक्तों को मामले को प्रभावित करने का पूरा-पूरा मौका मिल जाता है। इसका फायदा उठाकर सुबूतों को मिटा दिया जाता है, गवाहों की खरीद-फरोख्त कर उन्हें अपने पक्ष में कर लिया जाता है। जाहिर है कि काले हिरण शिकार का ये मामला हमें न्याय प्रक्रिया को तेज गति से चलाने की चेतावनी भी देता है और ये भी बताता है कि न्याय के मामले में सेलेब्रिटी और आम इंसान में आज भी कितना अंतर है।

7 मई को फिर पेशी

अदालत की सुनवाई के वक्त सलमान खान की बहनें अलवीरा और अर्पिता के अलावा उनके बॉडीगार्ड शेरा कोर्ट में मौजूद थे। मामले की सुनवाई से पहले सत्र न्यायाधीश रविंद्र कुमार जोशी और सलमान को सजा सुनाने वाले सीजेएम देव कुमार खत्री ने बीच चैंबर में करीब आधे घंटे तक बातचीत भी हुई।

सुनवाई के दौरान सरकारी वकील ने सलमान खान को जमानत का विरोध किया था। वह अदालत की अनुमति के बिना देश नहीं छोड़ सकते हैं और 7 मई को उन्हें निजी तौर पर कोर्ट में पेश होना पड़ेगा।

फंसे 1000 करोड़ रुपए

सलमान की सजा के बाद करीब 1000 करोड़ रुपए फंस गए। उनके कई मेगा बजट प्रोजेक्ट्स भी लाइन में हैं। इसमें मूवी रेस 3 अहम है, जिसे इसी साल ईद पर रिलीज करने की तैयारी है। भारत, दबंग-3 और किक-2 भी पाइपलाइन में हैं।

सांसे अटकी-जान से मारने की धमकी

पंजाब-हरियाणा के कुख्यात गैंगस्टर लॉरेंस विश्नोई ने कुछ महीने पहले ही कोर्ट में पेशी के दौरान सलमान को जान से मारने की धमकी दी थी। इसको लेकर पुलिस की सांसे अटकी रही। हालांकि लॉरेंस भरतपुर जेल में है, लेकिन उसके गुर्गे जोधपुर जेल में बंद हैं।

मामले में कब, क्या हुआ?

सितंबर, 1998 में काले हिरण के शिकार की ये घटना 'हम साथ-साथ हैं' फिल्म की शूटिंग के दौरान हुई। आरोप है कि सलमान, सैफ अली खान, तब्बू, सोनाली बेंद्रे और नीलम जोधपुर के पास कांकाणी गांव गए थे और वहां इन लोगों ने दो हिरणों का शिकार किया था। 2 अक्टूबर, 1998 को इस मामले में राजस्थान के वन विभाग ने शिकायत की, जिसमें सलमान समेत 7 लोगों को आरोपी बनाया गया। इसमें सैफ अली खान, सोनाली बेंद्र, नीलम, तब्बू, दुष्यंत सिंह और दिनेश गावरे शामिल है। 13 जनवरी 2017 को सभी आरोपियों ने

जंगल और जानवर पर जान देता है बिश्नोई समाज

जब रियासत के लोग पेड़ काटने के लिए आए तो जोधपुर के खेजड़ली और आसपास के लोगों ने विरोध किया। बिश्नोई समाज के 363 लोगों ने प्राणों की आहुति दे दी। इसमें 111 महिलाएं थी। मुंशी हरदयाल लिखते हैं कि बिश्नोई समाज के लोग जंबेश्वर भगवान यानी जम्भो जी को विष्णु का अवतार मानते हैं। जम्भो जी ने कुल 29 जीवन सूत्र बताए थे। उनके बताए बीस और नौ सूत्र को मानने वाले बाद में बिश्नोई हो गए। बिश्नोई समाज के लोग जंगली जानवर और पेड़ों के लिए अपनी जान का नजराना पेश करने की भी कुव्वत रखते हैं। बिश्नोई समाज हिरणों को अपने बच्चे से भी ज्यादा मानता है। इतना ही नहीं समुदाय की महिलाएं जंगल में मां-बाप से बिछड़े हिरण शावकों को अपना दूध पिलाकर उन्हें संरक्षण देती है। इसलिए जब फिल्म स्टार सलमान खान के हाथों काले हिरणों के शिकार का मामला सामने आया तो वे सडक़ों पर आ गए।

एकमात्र बची प्रजाति जीनस एंटीलोप

राजस्थान में काले हिरण की संरक्षक के तौर पर मां करणी को माना जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो काला हिरण जीनस एन्टीलोप में आता है, जो इस वर्ग की एकमात्र बची हुई प्रजाति है। यह भारतीय उपमहाद्वीप में पाई जाती है। अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षक संघ (आईयूसीएन) की सूची के अनुसार काला हिरण संगट-निकट श्रेणी में पहुंच गया है। मतलब ये है कि हिरण की इस प्रजाति के निकट भविष्य में संकटग्रस्त हो जाने की संभावना है। भारतीय वन संरक्षण अधिनियम 1972 के अनुसार जीवों को अलग-अलग अनुसूची में रखा गया है, जिसमें से काला हिरण अनुसूची-1 में आता है। जिसमें वन्यजीव को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के प्रावधान हैं और इसके तहत अपराधों के लिए उच्चतम दंड (3 से 7 साल तक की जेल) निर्धारित है।

कोर्ट में पेश होकर अपने बयान दर्ज कराए। 13 सितंबर 2017 को अभियोजन पक्ष ने ट्रायल कोर्ट में अंतिम बहस शुरू की। 24 मार्च 2018 को ट्रायल कोर्ट में दोनों पक्षों की बहस पूरी हुई। 28 मार्च 2018 को काले हिरण शिकार मामले में ट्रायल कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित रखा था।

सतयुग से कलयुग तक हिरण

सतयुग से लेकर कलयुग में दौड़ते, उछलते और नाभी में दबी कस्तूरी से पहले देवी-देवताओं और अब लोगों को आकर्षित करने वाले हिरण की सृष्टि में हमेशा काफी अहमियत रही है। सतयुग की बात करें तो तब हिरण और शेर एक साथ पानी पीते थे और इस युग में कोई अपराध और अपराधी नहीं था। पुराणों के अनुसार इस युग में माता सरस्वती ने एक लाल हिरण का रूप लिया था, जिसे रोहित कहा गया है। क्योंकि सरस्वती मां शिक्षा की देवी थी तो इस युग में इंसान ने हिरण की खाल पहनना और उसका इस्तेमाल करना सीखा लिया था। त्रेतायुग में राजा दशरथ हिरण का शिकार करने निकले। जंगल में दर-दर भटके तो एक सुंदर हिरण दिखाई दिया जो काफी उछल-कूद कर रहा था। दशरथ ने इस हिरण का शिकार करने की ठान ली।

इधर, अपने अंधे मां-बाप के लिए पानी लेने गए श्रवण कुमार के घड़े की आवाज सुनकर दशरथ ने बाण चलाया और वो बाण श्रवण कुमार को जा लगा। श्रवण कुमार की मौत हो गई और इसी वजह से उन्हें पुत्र बिछोह का श्राप मिला। इसी युग में माता सीता ने भी स्वर्ण हिरण का रूप धरे हुए मरीच को पाने की मंशा भगवान राम के सामने प्रकट की थी। तलाश में राम निकले और तीर से मरीच का शिकार किया। मरीच को जब तीर लगा तो उसके मुंह से 'राम नाम' निकला। बाद में माता सीता ने लक्ष्मण को राम की मदद के लिए भेजा। कुटिया के बाहर लक्ष्मण रेखा खींच वो राम की तलाश में चले गए और उसी समय रावण भिक्षु का रूप बनाकर कुटिया पर आया और सीता का हरण कर ले गया। इसी वजह से राम-रावण युद्ध हुआ और रावण मारा गया। तीसरे युग द्वापर में श्रीकृष्ण के रथ को काले हिरण खींचते थे। संस्कृत में काले हिरण को कृष्ण मृग कहा जाता है। विष्णु पुराण के अनुसार भरत नाम के एक राजा थे जो शालग्राम में रहते थे। एक समय वे नदी में नहाने गए। उस समय वहां एक गर्भिणी हिरणी पानी पी रही थी। उसी समय एक शेर ने दहाड़ मारी जिसके भय से हिरणी ने असमय ही एक बच्चे को जन्म दे दिया। हिरणी तो मर गई, लेकिन भरत ने बच्चे को बचा लिया। हिरण के बच्चे से वह प्यार करते थे। उन्होंने राज्य छोड़, लेकिन हिरण को नहीं छोड़ पाए। यहां तक कि वो विष्णु का नाम लेना भी भूल जाते थे। जब भरत की मृत्यु होने वाली थी तब वो हिरण के बारे में सोच रहे थे और इसी कारण अगले जन्म में वो जातिस्मारा हिरण बने और उन्हें अपनी पिछली जिंदगी के बारे में सब कुछ याद था। वो वापस शालग्राम आए और वहीं हिरण के रूप में उनकी मृत्यु हुई। अगले जन्म में वो जातिस्मारा ब्राह्मण बने और उन्होंने बहुत ज्ञान प्राप्त किया। इसके बाद उन्हें मोक्ष मिला। इस तरह एक हिरण ने उनकी भी जिंदगी बदल दी। अब कलयुग की बात करे तो इस समय काले हिरण शिकार मामले में सलमान खान चर्चा में है। खान ही नहीं इससे पूर्व सैफ अली खान के पिता मंसूर अली खान पटौदी का नाम भी काले हिरण के साथ जुड़ा है। 5 जून 2005 को विश्व पर्यावरण दिवस के दौरान उन्होंने एक काले हिरण का शिकार किया था। 2011 में उनकी मृत्यु के बाद उनका नाम इस मामले से हटा दिया गया। तो इस तरह से हर युग में हिरण नाम का यह जीव बहुत अहम रहा है।

Mahesh Kumar Dodeja

Mobile : 98298-87900

SHISHU RANJAN

GIRLS TOYS

BOYS TOYS

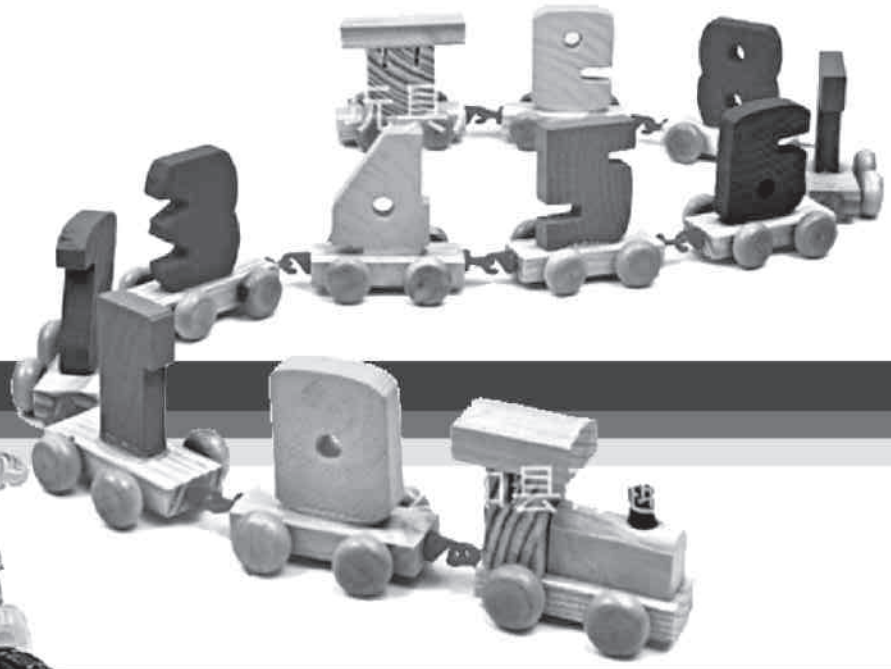

Outside Delhigate, Udaipur (Raj)

Contact Number

0294-2529504(S) 0294-2413461(R)

कामना एक अदद पुरस्कार की

प्रशंसा सुनना व सम्मान पाना व्यक्ति की स्वाभाविक कमजोरी है जो प्राचीन काल से चली आ रही है। लेखक भी उससे अछूता नहीं है। वह भी सम्मान-पुरस्कार पाने को लालायित है। इसके लिए वह लेखन के साथ कई तरह के पापड़ बेलता है। आजादी के पश्चात् केन्द्र एवं राज्यों में साहित्यकारों को प्रलोभन एवं पुरस्कार देने के लिए कई अकादमियों की स्थापना हुई। साहित्य, संगीत एवं ललित कला अकादमियों में अध्यक्ष अधिकतर सत्ता के गलियारे में रहने वाले होते हैं जो सत्ता बदलने पर बदलते रहते हैं। राज्यों में इनका चयन मुख्यमंत्री करता है। अब तो इन्हें मानदेय के साथ राज्यमंत्री स्तर का पद भी मिल गया है। इसके अतिरिक्त कई और सरकारी व गैर सरकारी संस्थायें हैं जो लेखक व साहित्यकारों को सम्मानित करने के लिए कई प्रकार के आयोजन करती है।

- डॉ श्याम मनोहर व्यास

अपने-अपने क्षेत्र में पुरस्कारों व मानद उपाधियों के लिये न सिर्फ साहित्यिक बल्कि तथाकथित समाजसेवी संस्थानों ने भी मंजूषा खोल रखी है। यद्यपि यह भी सत्य है कि जब से भारी संख्या में पुरस्कार दिए जाने लगे हैं कालजयी साहित्य सृजन का अकाल सा पड़ गया है।

आज स्थिति यह है कि वास्तविक साहित्यसेवी सम्मान-पुरस्कार से वंचित हैं जबकि ऐसे तथाकथित लेखक पुरस्कार ले लेते हैं, जिन्हें आम पाठक जानता ही नहीं। लेखक ऐसे लखटकिया साहित्यकार को जानता है जिसकी पांच सौ पुस्तकें भी नहीं बिकी। आज लेखक अकादमियों, धर्मादा संस्थाओं से अनुदान प्राप्त कर प्रकाशक को आर्थिक सहायता देकर पुस्तक छपवाते हैं, फिर पुरस्कार के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा देते हैं। यही मायाजाल है पुरस्कारों का।

कई बार साहित्य अकदमियों के पुरस्कार विवादों के घेरे में भी आ जाते हैं। प्रसिद्ध साहित्यकार खुशवन्त सिंह का कथन है :- 'ये साहित्य अकादमियां वास्तव में किसी सार्थक उद्देश्य को पूरा नहीं करती, बल्कि उनका काम तो केवल थोड़ा पैसा इधर दे दिया, उधर अवार्ड दिया, तक सीमित रह जाता है।'

उन्होंने यहां तक कहा कि जिन लेखकों को प्रकाशक नहीं मिलते, उन्हें लिखना बंद कर देना चाहिए। वे लेखकों व पत्रकारों को किसी तरह के संरक्षण के विरूद्ध थे। वे यह भी कहते थे कि यदि कोई लेखक लेखन की रॉयल्टी से अच्छा लाभ कमाता है तो यह उसकी प्रतिभा है। लेखक का असली पुरस्कार उसके पाठक ही होते हैं। कई लेखक पुरस्कार लेने के पश्चात् साहित्य जगत् से ऐसे अदृश्य हो जाते हैं जैसे गधे के सिर से सींग। यह भी देखा गया हैं कि कई बार ऐसे लेखक भी अकादमी से पुरस्कृत हुए हैं जिनकी शायद ही कोई रचना अकादमी की मुख पत्रिका में छपी हो। एक बार मेरे एक मित्र ने मुझसे कहा :- आपने काफी लिखा है, अब भी लिख रहे हैं, पुस्तकें भी छपी हैं फिर भी पुरस्कार से वंचित हैं ?

इस पर एक अन्य मित्र बोले :- 'भैया, यही तो विडम्बना है कि इन्होंने अधिक लिख डाला। अधिक लिखना पुरस्कार में बाधा पैदा करता है। जितना श्रम लिखने में किया उसका शतांश भी आजकल घर-घर हो रही साहित्यिक गोष्ठियों में जाने और मुख्य अतिथि या विशिष्ट लेखक-कवि के रूप में समादृत होने में करते, पुस्तकों के लोकार्पण पर कुछ खर्चा करते। अपने को 'विद्' कहलाने वाले साहित्यकारों व राजनेताओं के आगे-पीछे घूमते तो अब तक तो एकाधिक पुरस्कार झटक लिये होते।' पहले प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में लेखन के आधार पर स्थापित साहित्यकारों में लेखक की गिनती होती थी, आजकल पुरस्कारों के द्वारा। यथा-

पहले मौलिक लेखन से, होता था मूल्यांकन।
अब होता है, जुगाड़ से हासिल पुरस्कारों से आंकलन।।

किसी लेखक को पुरस्कार मिल जाता है तो अन्य संस्थाएं भी उसी को पुरस्कृत कर खुद उपकृत होने की होड़ में शामिल हो जाती हैं।

'अन्धा बांटे रेवड़ी फिर-फिर अपने को देय' कहावत चरितार्थ होती है। यही है एक अदद पुरस्कार की दास्तान।

PATEL PACKING INDUSTRIES

Manufacturers :

Corrugated Paper Boxes,
Rolls & Sheets

Email : ppi@patelpacking.com

Address

Near Police Line
Tekri, Udaipur
313001 (Rajasthan)

Phone

+91 294-2583523,
+91 294-2484761

घर है तो साफ़ किन्तु कीटाणु मुक्त है कि नहीं?

घर की साफ-सफाई कैसे करें या कैसे करनी चाहिए, यह आपको बताने की कतई जरूरत नहीं है। आखिरकार आप पूरे दिन इसी घर की सार-संभाल में ही तो लगी रहती हैं। पर क्या आप इस बात की गारंटी ले सकती हैं कि आपका घर रोग फैलाने वाले बैक्टीरिया से पूर्णतः मुक्त है? आप कुछ छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर घर को बैक्टीरिया मुक्त बना सकती हैं।

- उर्वशी शर्मा

अपने घर को हाइजेनिक और स्वस्थ बनाए रखने के लिए यह कतई जरूरी नहीं है कि आप पूरे दिन घर की साफ-सफाई में लगी रहें, या फिर घर और आपको 100 प्रतिशत बैक्टीरिया मुक्त रखने का दावा करने वाले एंटीबैक्टीरियल प्रोडक्ट्स पर बहुत अधिक खर्च करें। सफाई करते समय या खाना बनाते समय कई ऐसी छोटी-छोटी बाते हैं, जिनकी रोज की लापरवाही हमारी हाइजीन संबंधी जानकारी पर सवाल उठाती हैं। घर में ही कई ऐसी खतरे वाली जगह हैं, जो लंबे समय तक अछूती रह जाती हैं।

रसोई में संक्रमण का खतरा

साफ-सुथरे दिखने वाले घर खासतौर पर रसोई संक्रमित प्राय: पाए जाते हैं। रसोई में इस्तेमाल के कपड़े, चाकू व चॉपिंग बोर्ड, फ्रिज के भीतर के हिस्से 60 से 90 प्रतिशत तक संक्रमित होते हैं, लेकिन आपको पता नहीं चल पाता। घर में स्वच्छता की कमी फूड प्वॉइजनिंग, डायरिया या जल्दी-जल्दी बीमार पड़ने के अलावा अस्थमा के साथ-साथ जोड़ों के दर्द से परेशान लोगों की परेशानी को और भी बढ़ाने वाली होती है। हम घर की सफाई पर तो ध्यान देते हैं, पर उसकी स्वच्छता यानी उसके संक्रमणमुक्त होने पर उतना ध्यान नहीं देते।

बाथरूम भी है निशाने पर

टॉयलेट, खासतौर पर बेसिन, टॉयलेट सीट व ऐसा कोई भी हिस्सा जो शरीर के संपर्क में आता है, वहां से रोग फैलाने वाले बैक्टीरिया के संपर्क में आने की आशंका अधिक होती है। काई, फफूंदी, नमी, दरारें, रोग फैलाने वाले कीटाणुओं को तेजी से अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यदि बाथरूम में किसी छोटी-मोटी मरम्मत को लंबे समय से टाल रही हैं तो उसे ठीक कराने में ही समझदारी है।

- गीले कपड़ों को खुला या बिखरा हुआ न छोड़ें। गीले कपड़ों पर बैक्टीरिया तेजी से पनपते हैं।
- इस्तेमाल के बाद शैंपू की खाली बोतल, पैकेट, फेसवॉश व अन्य बोतलों को फेंक दें। एक्सपायरी प्रोडक्ट्स को जमा करके रखने में कोई समझदारी नहीं है।
- साबुनदानी की भी नियमित सफाई करें। किनारों पर जमने वाली साबुन पर गंदगी को परत जमने लगती है, जिस पर बैक्टीरिया पैदा होते हैं।
- यदि संभव है तो हर छह माह बाद नया टॉयलेट ब्रश खरीदें।
- अपने टूथब्रश को भी हर तीन माह पर बदलें और ब्रश करने के बाद उसे अच्छी तरह से धोना न भूलें।

कैसे और कहां करें सफाई

- मक्खी-मच्छरों को दूर रखने के लिए लाइट फिटिंग्स, नल, स्विच, दरार आदि को केस्टर ऑयल से पोछें।
- कॉकरोज को दूर रखने के लिए एक जग गर्म पानी में एक कप केरोसिन तेल मिला कर सप्ताह में एक बार रात में नालियों में डालें। गर्मियों में फर्श को फिनायल या नमक के पानी से साफ करें।
- नियमित रूप से घर की चीजों की उन सतहों को अवश्य साफ करें जिन्हें आप अक्सर हाथों से छूती हैं, जैसे फ्रिज व अलमारी के दरवाजे का हैंडल, नल, डस्टबिन, टॉयलेट सीट, बर्तनों का स्टैंड, टेलीविजन रिमोट कंट्रोल, लाइट स्विच व टेलीफोन आदि।
- कारपेट, दरी, परदे, सोफे की गद्दियां, सॉफ्ट टॉयस व कुशन आदि की नियमित सफाई करें।
- गीले कपड़ों को रसोई या फिर बाथरूम में लंबे समय तक न छोड़ें। रात में सोने से पहले गीले कपड़ों को अच्छी तरह से निचोड़कर सुखाना नमी से पैदा होने वाले बैक्टीरिया को पैदा होने से रोकता है।
- खाने-पीने की चीजों के बिखरे हुए टुकड़ों को यूं ही न छोड़ें। तुरन्त सफाई कर दें।
- घर में यदि पेड़-पौधे व गमले हैं तो उसके आसपास के हिस्से की भी नियमित सफाई करें।

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा

AADHAR PRODUCTS

डिसाइड®

हमारे अन्य उत्पाद

- डिसाइड वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर 4कि.ग्रा. जार
- डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
- एडवाइस वाशिंग पाउडर
- एडवाइस डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड डिशवाश बार
- डिसाइड डिशवाश टब
- डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड नमक
- डिसाइड बाथ सोप

AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
RIICO Industrial Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India

FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at **aadharproducts@rediffmail.com**

www.aadharproducts.in

फिर हैवानियत ने की हदें पार

न हम बदले न सिस्टम

निर्भया कांड के बाद जंग जीतने का ख्वाब और बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा हुआ बेमानी

- सुनील पंडित

कठुआ : मासूम को मरने तक नोंचते रहे

जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले की हीरानगर तहसील में एक गांव है रसाना। इस गांव की सरहदें प्रकृति में लिपटी हैं। गांव जंगल से आबाद है। लेकिन इस गांव से एक बच्ची की जो चीख-पुकार निकली उसे सुनने और महसूस करने में पूरे देश को ज्यादा समय नहीं लगा। यहां 8 साल ही हंसती, खेलती और जानवरों से प्यार, दुलार करने वाली बकरवाल समुदाय से तालुक रखने वाली मासूम रहती थी। वो 10 जनवरी को दोपहर करीब साढ़े 12 बजे वह घर से घोड़ों को चराने के लिए निकली और उसके बाद नहीं लौटी। परिजनों ने हीरानगर थाने में इसकी शिकायत भी दर्ज करवाई लेकिन पुलिस ने दिलचस्पी नहीं दिखाई। एक हफ्ते के बाद 17 जनवरी को जंगल में उसकी लाश मिली। पोस्टमॉर्टम में उसके साथ कई दिनों तक गैंगरेप की पुष्टि हुई। उसे भूखा रखा गया और नशे की गोलियां दी गईं। उसीके दुपट्टे से उसका गला घोंटा गया और फिर सिर पर पत्थर मारकर हत्या कर दी। मेडिकल में ये भी साफ हुआ कि जिस दिन लड़की को जंगल में फेंका गया था, उससे 72 घंटे पहले ही उसकी हत्या कर दी गई थी।

उन्नाव : विधायक और उसके गुर्गों ने किया रेप

8 अप्रैल को एक महिला ने उत्तरप्रदेश मुख्यमंत्री आवास के सामने आत्महत्या की कोशिश की और आरोप लगाया कि बीजेपी विधायक कुलदीप सिंह सेंगर और उसके साथियों ने उसके साथ गैंगरेप किया। फिर 9 तारीख की सुबह होते-होते आरोप लगाने वाली लड़की के पिता की थाने में ही मौत हो गई। यूपी के उन्नाव जिले की बांगरमऊ सीट से सेंगर विधायक है। इस मामले में दबाव के बाद विधायक के भाई अतुल को और बाद में विधायक सेंगर को गिरफ्तार किया गया। पीड़िता का आरोप है कि 4 जून 2017 को विधायक और उसके गुर्गों ने उसके साथ रेप किया। सियासी रसूख के चलते पुलिस ने उन लोगों के नाम डाल दिए थे, जो विधायक के विरोधी थे। इन सभी को गिरफ्तार भी किया गया। इसके बाद उन्हें जमानत मिल गई थी। लेकिन विवाद ने इसलिए तूल पकड़ा कि 3 अप्रैल की रात रेप का आरोप लगाने वाली लड़की के पिता को पुलिस ने आर्म्स एक्ट और मारपीट के केस में गिरफ्तार कर लिया। विधायक के भाई अतुल सिंह और उसके गुर्गों ने पीड़ित और उसके परिवार पर मुकदमा वापस लेने का दबाव बनाया। इनकार करने पर पुलिस ने पीड़िता के पिता को ही गिरफ्तार कर लिया। पुलिस हिरासत में उन्हें गंभीर चोटें आई थीं और जिला अस्पताल ले जाना पड़ा।

2014 के चौंकाने वाले आंकड़े

2361
गैंगरेप के कुल मामले दर्ज

7
पुलिस कस्टडी में गैंगरेप की वारदात

4
घंटे में औसतन एक गैंगरेप की वारदात

2
घंटे में रेप की एक नाकाम कोशिश

674
वारदात को महिला के करीबियों ने दिया अंजाम

31
प्रतिशत मामले यौन उत्पीड़न और दुष्कर्म के कोर्ट में लंबित

2014 में निर्भया की मौत के बाद जब देश सड़कों पर उतरा तो लगा था कि अब सब बदल जाएगा। अब देश की किसी भी बेटी को वो नहीं सहना पड़ेगा जो निर्भया ने सहा। निर्भया गैंगरेप के बाद कानूनी धारा सख्त हुई तो यह भी लगा कि लकवा ग्रस्त सरकारी सिस्टम और मनुष्य के दिमाग पर लगा जंग रफ्ता-रफ्ता हट जाएगा। लेकिन कुछ नहीं बदला और लगता है कुछ बदलेगा भी नहीं। इस बात का मलाल हमेशा रहेगा कि निर्भया के लिए जितना देश लड़ा उतना आसिफा के लिए और ना ही उन्नाव की बेटी के लिए लड़ पाया। लड़े भी क्यों और किससे? पुलिस से, सिस्टम से, कानून से? उन्नाव और कठुआ रेप मामलों में जिन लोगों पर आरोप है वे कोई आम इंसान नहीं बल्कि नेता, पुलिस और अधिकारी हैं। फिर न्याय की कैसी और किस से उम्मीद करें? कठुआ और उन्नाव की घटना निर्भया कांड के बाद देखे गए सपनों और ख्वाबों को चूर-चूर करने वाली है। निर्भया के गुनहगारों को सजा मिली और हमने सोचा कि एक देश, एक समाज के तौर पर हम जीत गए। पर क्या सच में ये जीत थी? ये जीत तब होती जब इस देश में फिर कोई बेटी किसी की हैवानियत का शिकार नहीं होती। ये जीत तब होती जब हम सच में रेप और रेप पीड़ितों को लेकर संवेदनशील होते। अब तो बेटी पढ़ाओ और बेटी बचाओ का नारा भी बेमानी लगने लगा है। कठुआ रेप केस में जिस तरह की बातें सामने आई हैं उसे सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। समझ में नहीं आता, जो सुनकर और पढ़कर दिल बैठ जाता है वो किसी इंसान ने कैसे किया होगा। आठ साल की मासूम को इसलिए हैवानियत का शिकार बनाया गया ताकि वो जिस समुदाय से आती है उसके लोगों को सबक सिखाया जाए, वो लोग जगह छोड़ कर चले जाएं? ये सच है कि 8 साल की उस नादान उम्र में जो दाएं और बाएं में नहीं समझता है वो समुदाय, धर्म, जाति का बंटवारा कैसे कर सकता है। शर्म की बात ये है कि इस हैवानियत का मास्टर माइंड एक रिटायर्ड अधिकारी है और उससे भी दुःखद ये कि ये दुष्कर्म एक मंदिर में किया गया। 6 अप्रैल को सूरत के पांडेसरा इलाके में भी ऐसी ही दिल दहला देने वाली एक घटना सामने आई। यहां 11 साल की एक बच्ची से 8 दिन तक आरोपी दुष्कर्म करते रहे। उसकी लाश क्रिकेट ग्राउंड के पास मिली और पोस्टमार्टम रिपोर्ट में शरीर पर 80 से ज्यादा निशान पाए गए। इसके अलावा भी कई दुष्कर्म और छेड़छाड़ की घटनाओं ने झंकझोर कर रख दिया। घिन आने लगी है इस समाज से अब। शर्म आने लगी है खुद को इस समाज का कहते हुए। ये है हमारे समाज का असली चेहरा...बेहद बदसूरत, घिनौना और गंदा।

कैसे बचाएं बेटी ?

दूसरी तरफ उन्नाव की वो पीड़िता जिसके साथ पहले वो हुआ जो उसने कभी सोचा नहीं और इसके बाद वो हुआ जो सोच से परे था। इंसाफ मांगने गई पीड़िता को इसका हर्जाना अपने पिता को खोकर चुकाना पड़ा। ऐसे में सवाल ये उठता है कि रेप के मामलों में पीड़िता को न्याय के लिए क्या-क्या नहीं खोना पड़ता है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार मध्य प्रदेश रेप मामलों में सबसे टॉप पर है। मध्य प्रदेश में वर्ष 2017 में 4,391 मामले दर्ज हुए। इसके बाद महाराष्ट्र 4,144 केस के साथ दूसरे नंबर पर, राजस्थान 3,644 के साथ तीसरे, उत्तर प्रदेश 3,025 मामलों के साथ चौथे नंबर पर, ओडिशा 2,251 मामलों के साथ पांचवें और दिल्ली 2,199 के साथ छठे नंबर पर पहुंचा।

2015 के आंकड़े

15.2
मिनट में एक महिला के साथ रेप की घटना

34,651
महिलाओं के साथ रेप

3.8
दिन में पुलिस कस्टडी में एक रेप की घटना

4437
रेप के प्रयास के मामले

02
घंटे में एक रेप का असफल प्रयास

बहुत हुआ नारी पर वार, अबकी बार...

कठुआ और उन्नाव केस फेसबुक और सोशल मीडिया पर आने के बाद राहुल गांधी तुरंत आधी रात को इंडिया गेट पर कैंडल मार्च के लिए निकल गए। गांधी ने कहा कि हिंदुस्तान की महिलाएं जिंदगी शांति से शुरु कर पाएं और सड़कों पर शांति से उतर पाएं, इसके लिए सुधार की जरूरत है। पूरे देश में आक्रोश था और आरोपियों के पुतले फूंककर उन्हें फांसी की मांग की गई। इधर, वर्ष 2014 की बात करें तो लोकसभा चुनाव अभियान और इसके बाद के विधानसभा चुनाव अभियानों में भाजपा ने अबकी बार मोदी सरकार का नारा दिया। साथ ही 'बहुत हुआ नारी पर वार, अबकी बार मोदी सरकार' नारा और स्लोगन दिया 'हमारी बेटियों को सुरक्षा न दिलवाने वालों को जनता माफ नहीं करेगी।

अब मिलेगी सजा-ए-मौत

12 साल से कम उम्र की बच्चों से दुष्कर्म के मामले में दोषियों को अब सजा-ए-मौत मिलेगी। देश के अलग-अलग हिस्सों में बच्चियों से दुष्कर्म की घटनाओं के बाद मोदी सरकार ने 22 अप्रैल 2018 को प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रेन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंस (पॉक्सो) एक्ट में संशोधन कर फांसी की सजा पर मुहर लगाई। पॉक्सो एक्ट में संशोधन और भगोड़े आर्थिक अपराधी अध्यादेश-2018 को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने भी मंजूरी दे दी। इससे पूर्व 21 अप्रैल को पीएम आवास पर केंद्रीय कैबिनेट की बैठक हुई। अब दोनों विधेयक संसद के मानसून सत्र में पेश किए जाएंगे। नए कानून के तहत 12 साल से कम उम्र की बच्ची से दुष्कर्म के लिए फांसी की सजा और 16 साल से कम उम्र की बच्ची से दुष्कर्म करने वाले को 20 साल की सजा होगी। दोषी को उम्रकैद की सजा भी हो सकती है। दूसरा अध्यादेश जिस पर मुहर लगी है वो बैंकों से कर्ज लेकर विदेश भागने वालों पर नकेल कसने के लिए है। राष्ट्रपति से मंजूरी के बाद भगोड़े आर्थिक अपराधी अध्यादेश-2018 में ऐसे मामले आएंगे, जिनमें 100 करोड़ रुपए या ज्यादा रकम की हेराफेरी हुई है। इसके तहत 6 हफ्ते में उसे भगोड़ा घोषित किया जा सकेगा।

A-ONE SR. SECONDARY SCHOOL

University Road, North Ayad, Udaipur

(ENGLISH MEDIUM) NURSERY TO XII (Commerce & Science)

Dr. M.L. Changwal
Director

INTRODUCTION

This school is situated in the heart of the city at Ayad on University Road, Udaipur . This Educational institution is run by 'Kanhaiya Sewa Sansthan' established in the year 1998 aiming at all round development of children and is now one of the shining star in the galaxy of educational institution.

VISION

We have a vision for our scholars & each student must

- Be capable of choosing the right from wrong.
- Build up self – discipline , self confidence and a liking for toil
- Empowering student to achieve success

OUR SPECIALITIES

- Limited student in each class
- Teaching through smart classes
- Medical check up twice in a yea
- Aqua Guard filtered cool drinking water facility.
- Well equipped physics , chemistry , biology and computer laboratory
- Spacious library and reading room where student take full advantage of print media & adc to their store of knowledge .
- Well equipped indoor and outdoor game facility.

- Whole school campus , classroom are under C.C.T.V. surveillance and supervision by management.
- Extra Co – Curricular activities are conducted where all latent talent are drawn out.
- Motivational seminars are conduted by experts and educationist , time to time for the proper growth of student.
- Experienced and devoted teachers.
- Cent Percent board exam result of class X and XII

Contact :- 0294-2413294 Mobile No. 98280-59294
Email id : mlchangwal@gmail.com

रंग-रंगीलो उदयपुर...

उदयपुर के स्थापना दिवस की थीम पर 'प्रत्यूष' का अंक हर बार की तरह सराहनीय था। कवर पर लगा फोटो ऐसे लगा मानो अतीत के झरोखे से उदयपुर झांक रहा है। 'गौरवशाली अतीत की नींव पर खड़ा उदयपुर' आलेख पढ़कर झीलों की मानिंद शांति को महसूस करने का मौका मिला।

आशीष अग्रवाल, वित्त सचिव, पैसेफिक यूनिवरसिटी

उपचुनाव पर सटीक विश्लेषण

अप्रैल अंक में यूपी-बिहार के उपचुनाव को लेकर प्रकाशित संपादकीय पठनीय होने के साथ रोचक भी थी। इसमें देश की राजनीति और ज्वलंत मुद्दों पर सटीक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। साथ ही राजनीति के हर पहलू को छूने की जो कोशिश की गई वो सराहनीय है।

बी प्रसाद, एसोसिएट्स वीपी, गोलछा एसोसिएट

सेहत पर सावचेतना जरूरी

सेहत को लेकर हम काफी कुछ करना चाहते हैं लेकिन अव्यस्थित और भाग-दौड़ भरी जिंदगी में बदलाव स्थायी रूप से नहीं टिक पाता है। स्थिर बदलाव के लिए दृढ़ संकल्पित होने के साथ सावचेत रहना जरूरी है और ये तभी संभव है जब हमें अच्छा पढ़ने को मिले। प्रत्यूष के अप्रैल के अंक में इसी तरह की सेहत को सहेजने से जुड़ी रोचक जानकारियां पढ़ने को मिली।

ग्लोरी फिलिप, डायरेक्टर, सेंट मैथ्यू स्कूल

हॉकिंग का जाना एक युग का अंत

सदी के महानतम वैज्ञानिक और खगोल विशेषज्ञ स्टीफन हॉकिंग का जीवन हमें बहुत कुछ सीखा गया। 'अनंत आकाश की यात्रा पर' लेख हॉकिंग की जीवटता को सच्चे अर्थों में परिभाषित करने वाला है। हॉकिंग का जाना एक युग का अनंत है।

डॉ. देवाश्री छापरवाल, डायरेक्टर, मेवाड़ हॉस्पिटल

जीवन....

कविता

- डॉ. अनिता जैन 'विपुला'

इक दिन जाना है।
प्यार खजाना है।
महसूस जो किया, वही बताना है।
बस जज्बातों से,
इश्क़ सजाना है।
अब चाहे जो भी हो,

दिल का गाना है।
मक़सद जीवन का,
प्रेम निभाना है।
सुरीले साज से, विश्व सजाना है।
'विपुला' साँसों का,
ताना-बाना है।

UDAIPUR HOTEL
(APPROVED BY GOVT. OF RAJASTHAN)
SPECIALITY & FACILITIES
- Parking
- A/C & Cooler Rooms
- Situated in Heart of City
- T.V. With Cable Connection
- Homely Atmosphere
- Near to bus & Railway Station
- Rooms Connected with Telephone

Surajpole, Udaipur-313001 (Raj.)
Telephone Number :- 0294-2417115-116

भारत बंद, खुली अराजकता और बरगलाने की राजनीति

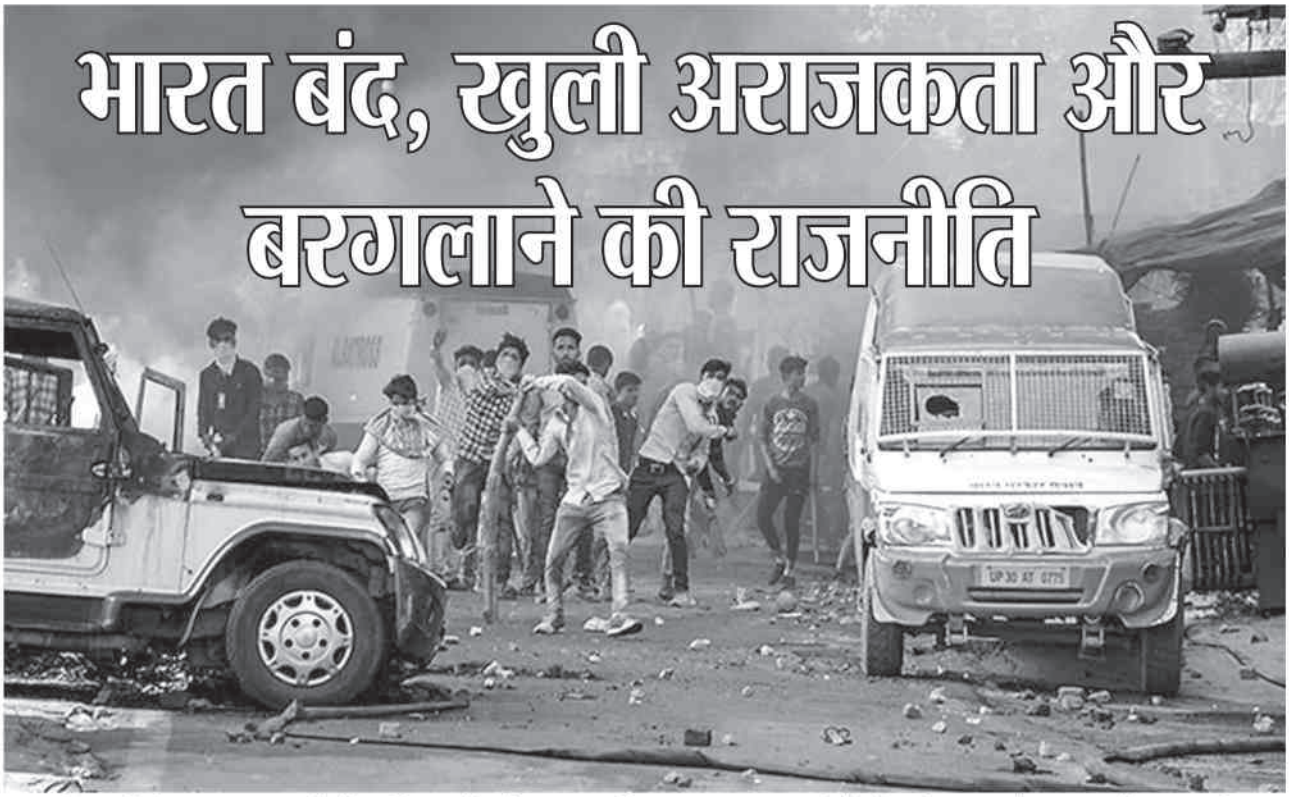

प्रदर्शनकारियों का हूजूम, हाथों में लाठियां, डंडे, स्टिक, आपत्तिजनक शब्द, वाहनों में तोडफ़ोड़, सडक़ों पर पत्थरों का जखीरा, स्कूल बस में दुबक कर बैठे बच्चे, एंबुलेंस को आगे बढ़ाने की मिन्नते करते परिजन। ये दृश्य 2 अप्रैल को हुए हिंसक आंदोलन के हैं। अराजतकता की ये ऐसी तस्वीर है जिससे पूरा देश दोबारा नहीं देखना चाहेगा।

-अनिता शर्मा

बंद के दौरान दलित संगठनों के आक्रोश की जड़ में था सुप्रीम कोर्ट के 20 मार्च को अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (उत्पीड़न रोकथाम) एक्ट, 1989 (एससी/एसटी एक्ट) से संबंधित दिया गया एक अहम फैसला। भारत बंद के दौरान चारों तरफ खुली अराजकता का माहौल था। राजस्थान सहित 12 राज्यों में जबरदस्त हिंसा में 14 लोगों की मौत हो गई। इसमें 4 जनों की मौत सिर्फ इसलिए हुई कि बंद के दौरान एंबुलेंस आगे नहीं बढ़ पाई। राजस्थान के अलवर में एक जने की गोली लगने से मौत हो गई जबकि 4 लोग घायल हो गए। गंगापुर सिटी में कर्फ्यू लग गया। प्रदेश में प्रदर्शन के दौरान कई वाहन आग के हवाले कर दिए गए। कई जगह रेल रोकी और पटरियां उखाड़ी गईं। प्रदेश में पुलिसकर्मियों सहित 220 से ज्यादा लोग घायल हो गए। जोधपुर में बंद के दौरान दिल का दौरा पड़ने से सब इंस्पेक्टर की मौत हो गई। इधर, बंद के एक दिन बाद अलवर, चूरू, सीकर और करौली सहित कई जिलों के बाजार बंद रहे। करौली जिले के हिंडौन सिटी में प्रदर्शन के दौरान उग्र भीड़ ने भाजपा विधायक राजकुमारी जाटव व पूर्व कांग्रेसी मंत्री भरोसीलाल के घरों में आग लगा दी। झड़प में एक दर्जन लोग घायल हो गए।

भारत बंद का यह ऐलान इतना हिंसक हो जाएगा, ऐसा अंदेशा किसी को भी नहीं था। यह भी एक कारण रहा है कि बंद से पहले दलितों से जुड़ा कोई मुद्दा बड़ी चर्चा का विषय नहीं बन पाया। जिस दिन सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया, उस दिन भी किसी को इसके महत्व और असर को समझने की फुर्सत नहीं थी। यह समझना होगा कि जबावदेही किसकी थी। हिंसा सिर्फ इस दौरान मारे गए, घायल हुए या संपत्ति को नुकसान उठाने वालों के हिसाब से ही नहीं, बल्कि आंदोलन के हिसाब से भी नुकसानदेह है। बंद से पहले या उस दौरान प्रदर्शनकारियों को यह बात भी किसी ने नहीं समझाई कि जब आप इतने बड़े मुद्दे के लिए सीधे सरकार और सुप्रीम कोर्ट से लड़ने निकलते हैं, तो हिंसा आपके पक्ष को कमजोर बना देगी। जबकि यही हिंसा सामने वाले पक्ष के हाथ मजबूत करने में अपनी अहम भूमिका निभाती है। भले आप गांधी को बहुत न माने, पर उनकी इस बात, इस रणनीति को तो मानना ही होगा कि लड़ने की ताकत अहिंसा से ही आती है। 2 अप्रैल को हुए बंद और इसके बाद 10 अप्रैल को हुए सांकेतिक बंद ने कई बातें साबित की। बड़ी बात यह है कि 2 अप्रैल को भारत बंद का आह्वान किसी बड़े दल या ऑल इंडिया संगठन ने नहीं किया था। आंदोलन का मकसद अदालती फैसले के खिलाफ और उस पर सरकारी चुप्पी के खिलाफ घंटी बजाना था। बंद के दौरान दलित उत्पीड़न के प्रति आक्रोश, उसके खिलाफ कार्रवाई में चुस्ती न दिखाना, सत्ता के करीब माने जाने वाले लोगों या संगठनों के दलित विरोधी रुख और दलितों में आया आत्मविश्वास भी साफ दिखाई दिया।

पिछले दिनों ही गुजरात के भावनगर में एक दलित की इसलिए हत्या कर दी गई क्योंकि वह घोड़े की सवारी करता था। इस मामले में ऐसा

कुछ नहीं हुआ, जो साबित करता है कि राज्य या केन्द्र सरकार को ऐसी घटनाओं से कोई फर्क पड़ता है ? इसके विपरीत सरकार के मंत्री कहते हैं कि भारत खुला लोकतंत्र है, जिसमें सभी को अपनी बात रखने की पूरी आजादी है। लोगों को अपनी बात को लेकर सडकों पर उतरने को हम गलत नहीं मानते। उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान जैसे राज्यों में ऐसी घटनाएं होती रहती हैं जोकि सरकारी घोषणाओं और उसकी मंशा पर शक पैदा करती हैं। ऐसे बहुत से मामलों को लेकर दलित बेहद आंदोलित हैं। उनकी नाराजगी कई कारणों से अब सड़कों पर नजर आने लगी है और शहरी जीवन को प्रभावित करने लगी है। देश के तमाम लोगों ने हाल ही में इसे महसूस किया। हैदराबाद के पीएचडी स्कॉलर रोहित वेमुला की आत्महत्या के बाद से पूरे देश में आंदोलन खड़ा हो गया और लोग सड़कों पर आ गए। नई दलित चेतना से देश के साक्षात्कार का यह पहला बड़ा मौका था और इस आंदोलन के परिणामस्वरूप केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी को मंत्रालय से विदाई हुई थी। इसके बाद राजस्थान की दलित छात्रा डेल्टा मेघवाल की लाश जब बीकानेर में हॉस्टल के पानी के टैंक में तैरती पाई गई, तो ऐसा ही एक और आंदोलन खड़ा हो गया। सरकार को अंतत: सीबीआई को जांच का आदेश देना पड़ा था। इसके बाद ऊना में मरी गाय की खाल उतार रहे दलितों की पिटाई का वीडियो वायरल हुआ तो इसकी प्रतिक्रिया में गुजरात और पूरे देश में प्रदर्शन हुए। आखिरकार गुजरात की मुख्यमंत्री पद से आनंदीबेन पटेल को हटना ही पड़ा। कुछ समय पहले भीमा कोरेगांव के सालाना जलसे पर उपद्रवियों के हमले के बाद प्रतिक्रिया में खड़े हुए दलित आंदोलन ने राज्य सरकार की नींद उड़ा दी थी। इसके अलावा छिटपुट आंदोलनों की तो कोई गिनती ही नहीं है, लेकिन भारत बंद के दौरान हुई हिंसा एक तरह की खुली अराजकता है, जो न केवल दो वर्गों के बीच खाई खड़ी करती है बल्कि देश को दो हिस्सों में बांटने की जुर्रत भी करती है। निश्चित तौर पर ऐसे आंदोलनों की रूप रेखा बनने से पहले ही खारिज करना होगा।

बंद के नाम सियासत

भारत बंद के साथ सियासत भी तेज हो गई। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने कर्नाटक में कहा कि दलितों को भारतीय समाज के सबसे निचले स्तर पर रखना आरएएस और बीजेपी के डीएनए में है। दलितों की सियासत करने वाली बहुजन समाज पार्टी की मुखिया मायावती ने कहा, 'बाबा साहेब अंबेडकर के अथक प्रयासों से जो अधिकार पिछड़े और दलित वर्ग को मिले

इन घटनाओं से दलितों में बढ़ा आक्रोश

1. दलित-मराठा टकराव (जनवरी 2018) : महाराष्ट्र में साल 2018 की शुरुआत दलित-मराठा टकराव के साथ हुई। भीमा-कोरगांव लड़ाई की 200 वीं सालगिरह के मौके पर पुणे के कोरेगांव में दलित और मराठा समुदायों के बीच टकराव हुआ जिसमें एक युवक की मौत हो गई। मामले ने तूल पकड़ा और पूरे महाराष्ट्र में इसकी लपटें नजर आने लगी। दलितों के संगठनों ने 3 जनवरी को महाराष्ट्र बंद का ऐलान किया। इस बीच प्रदेश के अधिकतर इलाकों से हिंसा, आगजनी की खबरें आती रही।
2. ठाकुर-दलित हिंसा (मई 2017) : साल 2017 में उत्तरप्रदेश का सहारनपुर दलित विरोध का केंद्र बना रहा। क्षेत्र में दलित-ठाकुरों के बीच महाराणा प्रताप जयंती कार्यक्रम के बीच टकराव हुआ। इसके चलते दोनों पक्षों के बीच पथराव, गोलीबारी और आगजनी भी हुई। विरोध इतना बढ़ा कि मामला दिल्ली तक जा पहुंचा। जातीय हिंसा के विरोध में दिल्ली के जंतर-मंतर पर दलितों की भीम आर्मी ने बड़ा प्रदर्शन किया।
3. गौ-रक्षकों पर गुस्सा (जुलाई 2016) : जुलाई 2016 में गुजरात के वेरावल जिले के ऊना में कथित गौर रक्षकों ने गाय की खाल उतार रहे चार दलितों की बेरहमी से पिटाई की थी। वीडियो वायरल हुआ। गुजरात में दलित प्रदर्शन के दौरान करीब 16 दलितों ने आत्महत्या की कोशिश भी की। इस मामले की गूंज सांसद तक पहुंची।
4. कोपर्डी गैंगरेप केस (जुलाई 2016) : यह एक ऐसा मामला था जिसमें मराठा समुदाय की ओर से एससी-एसटी कानून को खत्म किए जाने की मांग की गई। 13 जुलाई 2016 को मराठा समुदाय की एक 15 साल की लड़की को अगवा कर उसका गैंगरेप किया। इसके बाद उसकी हत्या कर दी गई। महाराष्ट्र में इस घटना के खिलाफ काफी प्रदर्शन हुआ। जिसने बाद में मराठा आंदोलन का रूप अख्तियार कर लिया। मामले में तीन दलितों को दोषी करार दिया गया, जिन्हें मौत की सजा सुनाई गई।
5. रोहित वेमुला की आत्महत्या (जनवरी 2016) : हैदराबाद यूनिवर्सिटी से पीएचडी कर रहे दलित छात्र रोहित वेमुला की आत्महत्या ने देश में दलितों और छात्रों के बीच एक नया आंदोन छेड़ दिया। यूनिवर्सिटी के छात्र संगठनों ने प्रशासन पर भेदभाव का आरोप लगाया। रोहित ने अपने सुसाइड नोट में विश्वविद्यालय को जातिवाद, चरमपंथ और राष्ट्रविरोधी तत्वों का गढ़ बताया था। इसके बाद देश में दलित आंदोलन हुए और मामला देश की संसद तक पहुंचा।
6. खैरलांजी हत्याकांड (सितंबर 2006) : महाराष्ट्र के भंडारा जिले के खैरलाजी गांव में 29 सितंबर को एक दलित परिवार के 4 लोगों की हत्या कर दी गई थी। परिवार की दो महिला सदस्यों को हत्या के पहले निर्वस्त्र कर शहरभर में घुमाया गया था। विरोध में पूरे महाराष्ट्र में दलित प्रदर्शन हुए थे।

थे, बीजेपी उन्हें छीनना चाहती है।' बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने दलित समूहों की ओर से आहूत भारत बंद में हुई हिंसा और मौतों के लिए कांग्रेस और दूसरी विपक्षी पार्टियों को जिम्मेदार ठहराया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, जितना सम्मान हमने बाबा साहेब अंबेडकर का किया उतना किसी ने नहीं दिया। हमारी सरकार तो बाबा साहेब के दिखाए रास्ते पर ही चल रही है।

चुनावी राज्यों में सर्वाधिक हिंसा

आरोप-प्रत्यारोप और दलितों पर सियासत एकाएक क्यों बढ़ी इसे समझने के लिए देश में दलितों की जनसंख्या और उनके वोट प्रतिशत को समझना होगा। लोकसभा की 545 सीटों में से 84 सीटें अनुसूचित जाति और 47 सीटें अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं। इन 131 आरक्षित सीटों में से 67 सीटें भाजपा के पास हैं। कांग्रेस के पास 13 सीटें हैं। इसके अलावा तृणमूल कांग्रेस के पास 12, अन्नाद्रमुक और बीजद के पास 7-7 सीटें हैं। भारत बंद का सबसे ज्यादा असर उन्हीं राज्यों में देखा गया जहां कुछ महीनों में चुनाव होने वाले हैं। इससे यह साबित होता है कि बंद के पीछे कहीं न कहीं सियासत भी चरम पर रही। साल 2019 के लोकसभा एवं उससे पहले मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ एवं कुछ अन्य राज्यों के विधानसभा चुनाव में राजनैतिक पार्टियां सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के साथ खड़ा दिखने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती है। केंद्र सरकार ने इस मामले में पुनर्विचार याचिका डालते हुए सुप्रीम कोर्ट से विचार की मांग की थी, जिसे कोर्ट ने खारिज कर दिया। मामला संसद में गूंजा।

संसद के दोनों सदनों में अप्रैल के पहले हफ्ते में हंगामे जारी रहे। इस दौरान सरकार ने दलितों के खिलाफ अपराधों को लेकर आंकड़े बताते हुए अपना पक्ष रखा। लोकसभा में भगीरथ प्रसाद के लिखित उत्तर में गृह राज्यमंत्री हंसराज अहीर ने कहा कि वर्ष 2012, 2013, 2014, 2015 और 2016 में दलितों के खिलाफ अपराध के कुल 192577 मामले दर्ज किए गए। इनमें 70 फीसदी से अधिक मामलों में आरोप पत्र दाखिल हुए। करीब 25 फीसदी मामलों में दोष सिद्ध हुआ। हिंसक प्रदर्शनों में सरकारी संपत्ति को नुकसान के अलावा 11 लोगों की मौत हो गई थी। इधर, भारत बंद सोशल मीडिया पर भी छाया रहा। हिंसा और मौत को लेकर लोगों में नाराजगी देखी गई तो सरकार की मंशा पर भी सवाल उठे। एक धड़े ने दलित समुदाय को बरगलाने और उनको वोट बैंक की तरह इस्तेमाल किए जाने के भी आरोप लगाए।

मध्यप्रदेश : करीब 14 से ज्यादा जिलों में विरोध प्रदर्शन देखा गया। ग्वालियर भिंड और मुरैना में भारी हिंसा हुई। ग्वालियर में तीन लोग मारे गए। टोल प्लाजा में तोडफ़ोड़ की गई। गई जगह सडक़ पर वाहन जलाए गए। पांच थाना क्षेत्रों में कर्फ्यू लगा दिया। वाट्सअप पर गलत खबरें और अफवाहे ना फैले इसके लिए इंटरनेट बंद कर दिया गया। प्रदेश के इंदौर, सिवनी, रतलाम, उज्जैन, झाबुआ और जबलपुर में बंद का मिलाजुला असर रहा। ग्वालियर में 2, भिंड में 2, डबरा में एक और मुरैना में एक की मौत हो गई।

क्यों हैं एससी-एसटी अहम : राज्य में साल के आखिर में चुनाव हैं। विधानसभा की कुल 230 सीटों में से एसटी के लिए 47 और एससी की 35 सीट रिजर्व है। जाहिर है उनकी भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

राजस्थान : अलवर के खैरथल इलाके में हुई हिंसा में एक प्रदर्शनकारी की मौत हो गई। यहां महिलाएं भी सड़क पर उतरी। बाड़मेर में दलित संगठनों और करणी सेना के बीच झड़प हो गई। इसमें 25 लोग जख्मी हो गए। भरतपुर में महिलाएं हाथों में लाठियां लेकर सड़कों पर प्रदर्शन करती दिखी। अलवर में एक मकान में आग लगाने की कोशिश की गई। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस की गाड़ी में आग लगा दी। पुष्कर में कई वाहनों में तोडफोड़ की।

क्यों हैं एससी-एसटी अहम : राज्य में इस साल चुनाव हैं। विधानसभा की 200 सीट में से एससी कोटे की 33 और एसटी की 25 सीटें है। पिछले तीन चुनाव में टिकट बंटवारे में भी इनका बोलबाला रहा है।

छत्तीसगढ़ : प्रदेश में रायपुर, विलासपुर, दुर्ग और भिलाई समेत राज्य में बंद के दौरान छिटपुट हिंसा भी देखने को मिली। हालांकि यहां किसी की जान नहीं गई। लेकिन कई जिलों में प्रदर्शनकारियों ने जबरन बाजार बंद कराए।

क्यों हैं एससी-एसटी अहम : यहां कुल 90 सीटें है जिसमें एससी के लिए 10 और एसटी के लिए 29 सीटें रिजर्व है। अगर देखा जाए तो करीब आधी सीटों पर एससी-एसटी का असर है।

।। श्री कृष्णा ।।
।। श्री गणेशाय नमः ।।
।। ॐ हनुमन्ते नमः ।।
बीकानेर मावा भण्डार
BMB
घीदार मावा एवं मीठा मावा के विक्रेता
शादी पार्टी में मावा के आर्डर बुक किए जाते हैं।
4, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी स्कूल मार्ग, उदयपुर (राज.)
Mobile - 9468704600, 9782704600
हैड ऑफिस :- डी.एस. बीकानेर

गंगा दर्शन से मिलती है मुक्ति

'गंगे तव दर्शनात मुक्तिः!' यानी गंगा मां के दर्शन से मुक्ति मिलती है। विष्णुपदी मां गंगा के धरती पर आने का पर्व गंगा दशहरा 24 मई को है। सूर्यवंशी महाराजा भागीरथ ने अपने पितामहों का उद्धार करने का संकल्प लेकर हिमालय पर्वत पर घोर तपस्या की और गंगा मां को प्रसन्न किया, जिसके फलस्वरूप ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी को हस्त नक्षत्र, वृषभ राशिगत सूर्य एवं कन्या राशिगत चन्द्र की यात्रा के मध्य गंगा का स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरण हुआ। इनकी महिमा का गुणगान करते हुए भगवान महादेव श्रीविष्णु से कहते हैं - हे हरे! ब्राह्मण की शापाग्नि से दग्ध होकर भारी दुर्गति में पड़े हुए जीवों को गंगा के सिवा दूसरा कौन स्वर्गलोक में पहुंचा सकता है, क्योंकि गंगा शुद्ध, विद्यास्वरूपा, इच्छा ज्ञान एवं क्रियारूप, दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों तापों को शमन करने वाली, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों को देने वाली शक्ति स्वरूपा है। इसीलिए इन आनंदमयी, शुद्ध धर्मस्वरूपिणी, जगत्धात्री, ब्रह्मस्वरूपिणी, अखिल विश्व की रक्षा करने वाली गंगा को मैं अपने मस्तक पर धारण करता हूं। कलियुग में काम, क्रोध, मद, लोभ, मत्सर, ईर्ष्या आदि अनेकानेक विकारों का समूल नाश करने में गंगा के समान कोई और नहीं है। विधिहीन, धर्महीन, आचरणहीन मनुष्यों को भी गंगा का सान्निध्य मिल जाए तो वे मोह एवं अज्ञान के भव सागर से पार हो जाते हैं। इस दिन 'ॐ नमः शिवाय नारायण्यै दशहरायै गंगायै स्वाहा' मंत्रों द्वारा गंगा का पूजन करने से जीव को मृत्युलोक में बार-बार भटकना नहीं पड़ता।

गंगा-दशहरा को लेकर शास्त्रों में कई ज्योतिषीय योग, ग्रह योग बताए गए हैं, जिनमें गंगा दर्शन, स्नान, पूजन, दान, जप, ताप आदि करना अति शुभ माना जाता है। बहुत से विद्वानों का मत है कि निष्कपट भाव से गंगा मां के दर्शन करने मात्र से जीव को कष्ट से मुक्ति मिल जाती है।

- पं. जयगोविन्द शास्त्री

श्रीनाथ हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

डॉ. महावीर सिंह परिहार
एम.एस. (आर्थो)
अस्थि रोग विशेषज्ञ

डॉ. (श्रीमती) सुमन परिहार
एम.एस. (सर्जरी)
महिला शल्य चिकित्सक

उपलब्ध सुविधाएं

❖ सी. आर्म (टेलीविजन) द्वारा आधुनिकतम तरीके से हड्डी के फ्रेक्चर की ऑपरेशन सुविधा। ❖ स्तन सम्बन्धी रोगों (गांठ, कैंसर) का इलाज व निदान। ❖ एपेण्डिक्स, हर्निया एवं पथरी, बच्चे दानी का ऑपरेशन। ❖ हड्डी के सभी प्रकार के आधुनिक ऑपरेशन। ❖ नेलिंग-प्लेटिंग, प्रोस्थेसिस इत्यादि। ❖ जन्मजात विकलांगता एवं पोलियो के ऑपरेशन। ❖ प्लास्टर, एक्सरे।

24, घंटे इमरजेन्सी ऑपरेशन एवं भर्ती की सुविधा उपलब्ध।

9, फतहपुरा चौराहा, उदयपुर-313004 (राज.), फोन : 0294-2452139

Gopal Prashad Vyas
Director

VYAS SECURITY SERVICES & LABOUR SUPPLIERS

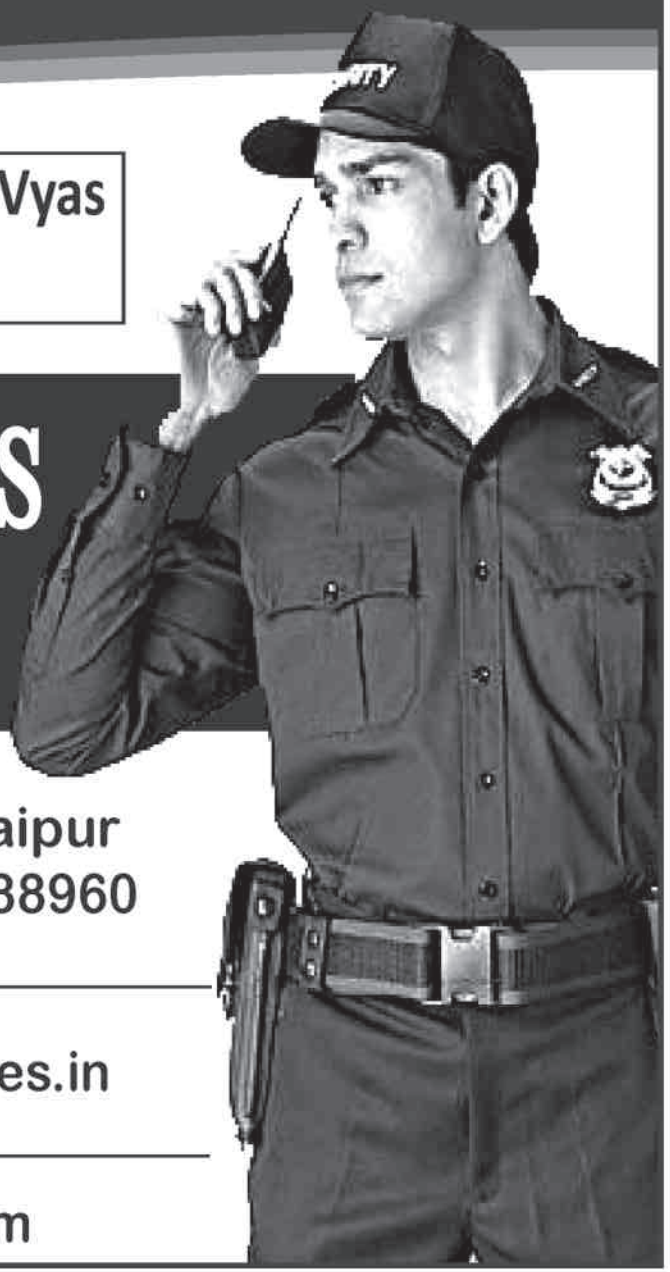

Head Office

25-Mahaveer Bhawan, Delhi Gate, Udaipur
Mob :- 9414263502, 8058088960

Website

www.vyassecurityservices.in

Email

vssmewar@gmail.com

मैं कौन हूँ ...?

– प्रेम कुमार बूंलिया

जब से होश सम्भाला तब से कानों के कुण्डल एवं कवच मेरे अंग का एक हिस्सा हैं। मेरी माँ और पिताजी के पास वस्तुएँ क्यों नहीं हैं, मेरे छोटे भाई शोण को ये क्यों नहीं मिली। मुझ पर ही प्रकृति की यह विशेष कृपा क्यों हुई ? ...आखिर क्यों ?...मैं कौन हूँ ?

दिन-रात यह प्रश्न मुझे काले नागों की तरह डसता रहा है लेकिन इसका उत्तर न तो मेरे माँ-पिता दे सके और न ही शोण तथा न मेरा मन। मेरा मन ? मेरा मन क्या है... विभिन्न प्रकार के बाणों से भरा तरकस। जिनमें जीवन के विभिन्न रंग हैं। माँ तो ममता का विशाल सागर प्रतीत होती थीं लेकिन जब भी मैं उनसे प्रश्न करता कि मैं कौन हूँ तो वह हमेशा टाल जाती थी पिता हस्तिनापुर में महाराज धृतराष्ट्र के सारथी थे। जब भी आते मैं उनसे भी यही प्रश्न करता कि मैं कौन हूँ ? वे कहते तू हमारा पुत्र है और शोण तेरा छोटा भ्राता है लेकिन मुझे आश्वस्त नहीं कर पाते। मन चीख-चीखकर पूछता कि अगर शोण तेरा छोटा भाई है तो उसे कवच कुण्डल क्यों नहीं मिले ? इस प्रश्न का आज तक उत्तर नहीं मिला।

बचपन बड़ा सुखमय रहा। दो भाईयों का छोटा-सा निस्वार्थ संसार था हमारा। माता राधा और पिता अधिरथ हमें अत्यधिक स्नेह करते थे। गंगा तट पर विभिन्न रंगों और आकार की सीपियाँ जमा करना तथा शाम ढले घर लौटना बचपन की अमूल्य अनुभूतियां थीं। हरे-भरे वन में पक्षियों के झुण्ड हमारा आकर्षण थे। विशाल आकाश में उड़ते गरुड़ों के झुण्ड को देखकर शोण पूछता 'भैया, ये क्या है ?' 'गरुड़ है रे बावरे' मैं कहता। भैया, क्या तुम भी आकाश में इतने ऊँचे जाओगे ? 'पगले मैं क्या पक्षी हूँ जो आकाश में उड़ूंगा।' फिर भी भैया, तुम तेज दौड़ते घोड़ों को जैसे संभाल लेते हो वैसे ही..... ।'

'हाँ-हाँ जाऊंगा, अब घर चल माता चिन्तातुर होगी।'

'भैया, वो सूर्य देख बिल्कुल तेरे मुख जैसा लगता है' मेरे कुण्डल को निहारते हुए कहता। मैं अपने कानों पर हाथ लगाता। दो मांसल कुण्डल हाथ आ जाते।

'वसु भैय्या, माँ का अधिक प्यार तुझ पर ही, तब ही तो तुझे कुण्डल मिले, मुझे नहीं।'

गांव में सभी लोग मुझे वसुसेन ही कहते थे। मैं जल्दी-जल्दी शोण का हाथ पकड़ कर पर्ण कुटी पर लौट आता। राधा माँ चिन्तित दिखाई पड़ती। कहती 'वसु तू - गंगा के गहरे पानी में मत जाना रे।'

'क्यों न जाऊँ' मैं कहता।

'देख बड़ों का कहना मानना। जब मना किया तो नहीं जाना और अपने पास खींचकर मेरे घुंघराले बालों में उंगलियाँ डाल सहलाने लगती। 'अच्छा नहीं जाऊँगा माँ।' माँ हमेशा गंगा के पानी से डरती थी। जब मैं युद्ध विद्या सीखने बाबा के साथ हस्तिनापुर गया तब भी माँ ने गंगा की ओर जाने को मना किया था। एक बात मेरी समझ में कभी भी नहीं आई कि जब-जब मुझे क्रोध आता या कोई साहसिक कार्य करता तो शरीर आग की तरह तृप्त हो जाता और अचानक शरीर में इतना बल आ जाता कि कुछ भी असम्भव नहीं था। सूर्य

को देखकर मुझे एक तृप्ति सी मिलती। मेरा शरीर ऐसे जलने लगता कि कोई छू ले तो जल जाये।

शोण को एक बार गंगा में नहाते हुए चोट लग गई। उसके सिर से खून बह निकला। मन में विचार हुआ कि मुझे कभी चोट लगती है तो खून क्यों नहीं निकलता। एक दिन इसकी परख करने मैंने प्रत्यंचा पर बाण चढ़ाकर अपने ही पैरों का निशाना बना कर कई बाण छोड़े पर वे सब के सब 'टन' की आवाज करते पैरों से टकरा कर मुड़ गये। तुब मुझे विश्वास हो गया कि मेरी त्वचा अभेद्य है, कोई उसे भेद नहीं सकता। मेरे लिए यह नई तथा सुखद अनुभूति थी। एक दिन अलमस्त बचपन और चम्पानगरी छोड़ कर हम पिता के साथ शस्त्र विद्या सीखने हस्तिनापुर चले गये। गुरुकुल में गुरु द्रोण से मिलने पर उन्होंने कहा 'एक सूतपुत्र राजकुमारों के साथ कैसे विद्या प्राप्त कर सकता है ?' सुनकर शरीर आग की तरह तपने लगा। कानों में 'सूतपुत्र' की कर्णभेदी प्रति ध्वनि गूंजने लगी। मैं सूत पुत्र हूँ यह बात मेरा मन कभी पचा नहीं पाया। जब-जब यह शब्द मेरे कानों में पड़ता मैं सूर्य के प्रचण्ड तेज सा जल उठता था।

हमारा नाम युद्ध शाला में लिख दिया लेकिन हम राजकुमारों के साथ विद्या ग्रहण नहीं करते थे और गुरु द्रोण भी हमारी तरफ ध्यान नहीं देते थे। इन सभी बातों से क्षुब्ध मैं सुबह गंगा के पानी में खड़ा सूर्य को अर्ध्य दे रहा था कि एक तेज प्रकाश पुंज मेरे ही भीतर प्रज्वलित हो उठा और मैंने उसी क्षण सूर्य को अपना गुरु मान लिया। अब प्रतिदिन मैं सूर्य को अर्ध्य देता भावभक्ति से गुरु को प्रणाम करके ही युद्ध शाला की तरफ लौटता।

सूर्य मेरे गुरु हैं, राधा मेरी माता, अधिरस्थ मेरे पिता और शोण मेरा लघु भ्राता। बस यही मेरा छोटा सा संसार था। पग-पग पर 'सूत पुत्र' कहकर मेरा अपमान किया जाता रहा जो जिस कुल में जन्म लेता है उसी कुल की परम्परा स्वीकार क्यों कर लेता है। मैंने एक सारथी के घर जन्म लिया यही मेरा कुल भी है फिर पता नहीं मुझे सूत पुत्र कह देने से क्रोध क्यों आ जाता है। मैं इसे स्वीकार क्यों नही कर पाता कि मैं सूत कुल में जन्मा हूँ।

जब कभी अत्यधिक उद्विग्न हो जाता तो गंगा तट पर बैठ जाता। सूर्य किरणें स्नेह से पीठ सहलाती सान्त्वना देती प्रतीत होती थी और मन शान्त हो जाता।

जल का अर्ध्य सूर्य को देकर कहता गुरुदेव सूत पुत्र कर्ण आपके आशीर्वाद और स्नेह का अभिलाषी है मुझ पर अनुग्रह करें। उसके बाद मैं स्थिर दृष्टि से सूर्य के तेज को निहारता। विश्व का अन्धकार दूर करने वाले सूर्य के प्रचण्ड वेग से घूमते कण कितने अच्छे लगते हैं। अगर एक दिन भी ये कण न बिखेरे तो विश्व का क्या होगा? कुल का क्या होगा? फिर कहाँ क्षत्रिय होंगे और कहाँ सूत? हजारों ऐसे प्रश्न मन में बवण्डर की भाँति उठने लगते जिनका कोई उत्तर मेरे पास नहीं था। देखते ही देखते गुरुकुल शिक्षा की पूर्णता का समय आ गया। इस बीच एक बार भी गुरु द्रोण ने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। मेरी ओर मेरे भाई शोण की शिक्षा पूर्ण हो गई। मैं धनुर्विद्या में प्रवीण हो गया। कुछ समय के लिए हम दोनों भाई चम्पानगरी माँ से मिलने चले गये। लौटने पर पता चला कि हस्तिनापुर में युद्ध विद्या की प्रतियोगिता है। जिसके लिए विशाल अखाड़ा तैयार किया गया है। मेरे पग भी उधर बढ़ गये लेकिन दिल में कहीं 'सूत पुत्र' सम्बोधन का कांटा गड़ा हुआ था। मुझे विश्वास नहीं था कि क्षत्रिय राजकुमारों के बीच मुझे भी कौशल दिखाने का अवसर मिलेगा। अगर अवसर मिला तो गुरुदेव की सौगन्ध किसी भी योद्धा को टिकने न दूंगा।

में कहीं 'सूत पुत्र' सम्बोधन का कांटा गड़ा हुआ था। मुझे विश्वास नहीं था कि क्षत्रिय राजकुमारों के बीच मुझे भी कौशल दिखाने का अवसर मिलेगा। अगर अवसर मिला तो गुरुदेव की सौगन्ध किसी भी योद्धा को टिकने न दूंगा।

ठीक समय पर प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई। मुझे शोण ने द्वार पर ही रोक दिया। मैं द्वार से ही देखने लगा। पूरा हस्तिनापुर उमड़ा था। निर्दिष्ट स्थान पर आचार्य द्रोण, कृपाचार्य, भीष्म पितामह, महाराज धृतराष्ट्र आदि बिराजमान थे। प्रतियोगिता में सभी प्रतियोगियों ने बढ़-चढ़ कर अपने कौशल का प्रदर्शन किया। अर्जुन ने धनुर्विद्या के वे सभी दांव दिखाये जो मैं भी आसानी से दिखा सकता था लेकिन न जाने क्यों आज मेरे कुण्डल सांवले से हो गये थे। सदैव नीला प्रकाश फैंकने वाले कुण्डल ज्योर्तिहिन लग रहे थे। इसी आशंका के कारण शोण मुझे जाने नहीं दे रहा था मुझे भी न जाने क्यों ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मेरे गुरु का आशीर्वाद आज नहीं मिल रहा है क्योंकि वे भी सुबह से बादलों में थे।

विजयमाला जैसे ही अर्जुन के गले में डाली जाने लगी ठीक उसी समय सूर्य की किरणें चमक उठी। मुझ में अपूर्व साहस जाग उठा और मैं जहां था वहीं से बोला 'ठहरो'। अर्जुन के गले में माला पड़ते-पड़ते रूक गई। भीष्म पितामह के आदेश पर मुझे अवसर दिया गया। मैंने अपने अनोखे प्रदर्शन से अर्जुन का प्रदर्शन फीका कर दिया।

अन्त में बारी थी ध्वनि की दिशा में लक्ष्यभेदन की। मेरी आँखें बांध दी गई। पीठ पीछे कुत्ता भौंकना था लेकिन उससे पूर्व ही कहीं मंजुल सी ध्वनि सुनाई पड़ी। मैंने तीर छोड़ दिया। लक्ष्य के लिए जैसे ही तीर निकला वैसे ही कुत्ते ने भौंकना शुरू किया। अब मेरे हाथ से तीर निकल चुका था। मैं हार चुका था लेकिन भीष्म पितामह उठ खड़े हुए और धीर गम्भीर वाणी में बोले 'लक्ष्य भेदन की इस बेला में जब सम्पूर्ण और शान्ति थी उसी समय सामने पेड़ पर बैठी चिड़िया ने अपने बच्चे को दाना खिलाने के लिए चोंच से मंजुल ध्वनि निकाली थी और लक्ष्य वहीं भेदा गया है। पेड़ पर से चिड़िया उतारी गई जिसकी चोंच में मेरे द्वारा छोड़ा तीर घुसा हुआ था। जन समुदाय जयघोष कर उठा 'वीर कर्ण की जय' भीष्म पितामह की जय।

इस वीर का कुल क्या है? किसका पुत्र है यह? कुछ लोगों के प्रश्न से मैं घबरा गया। उसी समय पिता दौड़े आये और उन्होंने मुझे गले लगा लिया। सब तरफ एक अजीब सी शान्ति छा गई। कानाफूसी होने लगी 'सूत पुत्र', 'सूत पुत्र'। सूत पुत्र का बाण मेरे सीने में गड़ा हुआ था समय ने उसे और भी गहरे पेठ दिया। गुरु कृपाचार्य जी ने घोषणा की 'यह राजकुमारों का अखाड़ा है सूत पुत्रों का नहीं' और विजयमाला अर्जुन के गले में डाल दी गई। ठीक उसी समय बढ़कर दुर्योधन ने घोषणा की 'मैं अभी इस समय कर्ण को अंग देश का राजा नियुक्त करता हूँ।' दुर्योधन ने मेरे टूटते साहस को सम्बल दिया। ऐसे समय में मेरी सहायता की जब मैं कुल के दलदल में धंसता जा रहा था।

मैं दुर्योधन का ऋणी हो गया। पाण्डवों के प्रति उसके प्रतिशोध की कड़ी काा न चाहते हुए भी मुझे हिस्सा बनना पड़ा। मैं एक योद्धा हूँ और योद्धाओं को युद्ध में अपनी वीरता का प्रदर्शन करके ही तुष्टि मिलती है लेकिन दुर्योधन की कुटिल चालें मेरी समझ में कभी नहीं आई। लेकिन मैं समय-असमय जब मानसिक यंत्रणा से संतृप्त होता मुझे सहारा दुर्योधन से ही मिलता था

आज मैं पांचाल से लौटकर बहुत ही उद्विग्न हूँ। दुर्योधन के लिए मैं पांचाली के स्वयंवर में गया था। दुर्योधन तो लक्ष्य भेदन में असमर्थ रहा और पराजय का कड़वा घूंट पीकर लौटा था लेकिन मुझे क्या मिला। मैं तो अपने मित्र का मान रखने और स्वयं लक्ष्यभेदन पांचाली को उसके कदमों में डालने के लिए ही गया था लेकिन लौटा तिरस्कार, घृणा और दु:ख का अम्बार लेकर। अपने इकलौते पुत्र को काल के हवाले करके। छी: पांचाली जितनी सुन्दर और सुगन्धमय है उसका मन उतना ही कठोर और घृणास्पद। जब मैं लक्ष्य भेदन करने ही वाला था तो उसने कितनी घृणा से मुझे देखते हुए कहा था - 'मैं किसी सूत पुत्र से विवाह नहीं करूंगी। कर्ण स्वयंवर में भाग नहीं ले सकते। लक्ष्य भेदन नहीं कर सकते।'

अपमान की तीखी लहर मेरे सम्पूर्ण शरीर के आर-पार थी। मैं तड़प उठा था और स्वयंवर का मंच युद्ध का अखाड़ा बन गया था। इसी बीच मेरा पुत्र सुदामन भी मारा गया।

पांचाल से लौटकर मैं अंगारे पर लौट रहा हूँ। पग-पग पर मेरा अपमान होता रहता है। अब मैं अंगराज कर्ण हूँ लेकिन उससे क्या? हूँ तो सूत पुत्र ही। मैंने अपमान का पूरा का पूरा सागर पिया है। क्या कमी है मुझ में? मेरे बराबर हजारों योजन तक कोई योद्धा और धुनर्धर नहीं। मुझे प्रकृति ने जन्मजात कुण्डल और अभेद्य कवच दिया है। क्या इनमें से एक भी वस्तु है किसी के पास? फिर मुझे मेरे कर्म से न पहचान कर लोग मेरे कुल से क्यों पहचानते हैं। मैं महावीर हूँ, महादानी हूँ और कांतिमय तो ऐसा कि जिधर से भी जाऊँ गवाक्षों के कपाट खुल जाते हैं। फिर भी हूँ तो सूत पुत्र ही। अपमान का यह सागर अब मुझे जन्मभर पीना है जिस प्रकार भगवान शिव ने सारा विष अपने कण्ठ में संजो लिया उसी प्रकार सारी वंचनाएं, सारा अपमान मुझे अपने भीतर ही रखना है। लेकिन ऐसा होता नहीं है। जब-जब सूत पुत्र का सम्बोधन कानों में पड़ता है, शरीर जल उठता है। अपमान से चेहरा तप कर लाल हो उठता है। हाँ, मैं सूत पुत्र हूँ। यह सम्बोधन जब कोई मेरे पिता या शोण से करे तब उन्हें तो क्रोध नहीं आता फिर मुझे ही क्यों आता है। बार-बार यह प्रश्न मेरे मानस पर हथौड़े की चोट करता है। आखिर मैं कौन हूँ? अधिरथ पुत्र? राधेय? शोण बन्धु? या इससे अलग और कोई? मुझे कोई बताता क्यों नहीं कि मैं कौन हूँ।

कैंपेनिंग भाजपा की घबराहट : तरुण

'शक्ति' के लिए एकजुट हुई उदयपुर कांग्रेस

भाजपा को घबराहट है कि जनता उससे नाराज है, इसलिए कैंपेनिंग कर लोगों को लुभा रही है। भाजपा ने जनता के लिए कुछ नहीं किया बल्कि महंगाई बढ़ाकर कमर ही तोड़ दी। भाजपा सरकार से ठगी राजस्थान की जनता अब छुटकारा पाना चाहती है। यह बात कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के ड्रीम प्रोजेक्ट 'शक्ति' से उदयपुर कांग्रेस को जोडऩे के लिए गत दिनों शहर एवं देहात कांग्रेस कमेटी की आरएमवी सभागार में हुई बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए एआईसीसी सचिव व प्रभारी तरुण कुमार ने कही। उन्होंने कहा कि भाजपा कहती है कि उसकी सरकार ने बहुत काम किए हैं तो फिर वे दिख क्यों नहीं रहे हैं। उन्होंने कार्यकर्ताओं से एकजुट हुंकार भरने और मिशन शक्ति से लोगों को अधिक से अधिक जोड़ने का आह्वान करते हुए यह भी कहा कि मिशन शक्ति से मिशन शक्ति के लक्ष्य के करीब है। पूर्व केंद्रीय मंत्री गिरिजा व्यास ने कहा कि 'शक्ति' कांग्रेसजनों व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी के बीच सतत् संवाद का एक सार्थक सेतु साबित होगा।

यह रहे उपस्थित : बैठक को शहर अध्यक्ष गोपालकृष्ण शर्मा, देहात अध्यक्ष लाल सिंह झाला, पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा, विधायक हीरालाल दरांगी, पूर्व विधायक गजेंद्र सिंह शक्तिावत, सज्जन कटारा, पुष्कर डांगी, त्रिलोक पूर्बिया, पूर्व मंत्री मांगीलाल गरासिया, बसंतीदेवी मीणा, प्रभारी शंकर यादव, अर्जुन बामणिया, सुमित्रा जैन, पीसीसी सदस्य दिनेश श्रीमाली, जगदीशराज श्रीमाली आदि ने भी संबोधित किया। इस दौरान प्रदेश सचिव पंकज कुमार शर्मा, पूर्व जिला प्रमुख छगनलाल जैन, जिला महिला कांग्रेस देहात अध्यक्ष सीमा चौरडिया, यूथ कांग्रेस उदयपुर लोकसभा अध्यक्ष अभिमन्यू सिंह झाला, सुरेश सुथार, गणेश डागलिया, फिरोज अहमद शेख, दिनेश दवे, टीटू सुथार, दीपक सुखाडिया, डॉ. अनिता सिंघवी आदि भी उपस्थित थे।

सोने से भी कीमती चॉकलेट

एक चॉकलेट हाल ही में आई है, सोने से भी कीमती इस एक चॉकलेट की कीमत भारतीय मुद्रा में 6 लाख रुपये तक है। पुर्तगाल के शहर ओबिडॉस में हुए अंतरराष्ट्रीय चॉकलेट उत्सव में विश्व की यह सबसे कीमती चॉकलेट लॉन्च की गई। सोने के जेवर से भी महंगी ये चॉकलेट एक खास ज्वेलरी बॉक्स में रख कर बेची जायेगी।

लाखों की चॉकलेट

ग्लोरियस नाम की ये चॉकलेट तकरीबन 7,728 यूरो की है यानि भारतीय मुद्रा में इसकी कीमत लगभग 6 लाख रुपये तक होगी। इसके मेकर्स इसे एक साल से तैयार कर रहे थे। इस चॉकलेट को गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने सबसे महंगी चॉकलेट होने का प्रमाणपत्र दिया है।

चॉकलेट की खासियत

ग्लोरियस चॉकलेट के बनाने वालों ने बताया कि इसे काली वाल्होना चॉकलेट, केसर, एक खास इतालवी फल टरफल, व्हाइट टरफल के तेल, मैडागास्कर वनीला और सोने की महीन पत्तियों के मिश्रण से बनाया गया है। चॉकलेट की 23 कैरेट सोने की परत से कोटिंग की गई है। इसके साथ ही इस चॉकलेट को रखने के लिए जो बॉक्स बनाया गया है वो भी बेहद खास है।

Director
Dr. D.C. Sharma
MD (Medicine)
DM (Endocrinology) AIIMS, Delhi
Former Prof. & Head Endocrinology,
RNT Medical College, Udaipur

डॉ.डी.सी.शर्मा

डायबिटीज़, थायरॉइड व हॉर्मोन्स हॉस्पिटल

सृजन हॉस्पिटल

डायबिटीज़ क्लिनिक

थायरॉइड रोग

मोटापा Obesity

अनचाहे बाल

ढिगनापन व विकास

सेक्स व यौन हॉर्मान्स
सम्पर्क: 09468707189

गर्भावस्था में डायबिटीज़ व थायरॉइड रोग

डायबिटीज़ फुट (पाँव) थायरॉइड व अन्य ऑपरेशन

ब्लड प्रेशर क्लिनिक

नवीनतम उपचार व तकनीक

डायबिटीज़ चेकअप पैकेज, डायबिटीज़ एक्जीक्यूटीव चेकअप पैकेज
थायरॉइड पैकेज, सेक्स हॉर्मोन्स चेकअप पैकेज
सामान्य हेल्थ चेकअप पैकेज

उत्तरी भारत का सर्वश्रेष्ठ डायबिटीज़, थायरॉइड, सेक्स व हॉर्मान्स हॉस्पिटल

111, आनन्द नगर, आयड़, लेकसिटी मॉल के सामने, उदयपुर (राज.)
फोन : 0294-2429690, 2429850, M.: 09468707189, 08949068184
www.drdcsharma.in srajanhospitalidth@gmail.com

कितने फायदेमंद हैं बीज

- भावना जैन

अक्सर हमें खाने में कुछ मीठा और नमकीन खाने की इच्छा होती है। ऐसे में समोसा, नमकीन या पकौड़े आदि शरीर के लिए लाभदायक नहीं होते। कुछ बीज ऐसे भी होते है जिनको कुछ अलग तरह से तैयार कर उपयोग लिया जाए तो वे स्वादिष्ट होने के साथ-साथ फायदेमंद भी होते हैं। कई तरह के बीज ऐसे भी होते हैं जो वक्त-बेवक्त पेट भी आसानी से भर देते हैं और उसे मिलने वाली ऊर्जा और पोषक तत्व हमारे शरीर के लिए औषधी गुणों का काम करते हैं। कुछ ऐसे ही बीजों की जानकारी, जिससे आप हेल्दी और टेस्टी स्नैक्स बनाकर आप फिट रह सकते हैं।

सेम के बीज

ऑफिस या घर में बेवक्त कुछ हल्का खाने का मन करे तो आपकी इस इच्छा को सेम के बीज पूरा कर सकते हैं। यह एक तरह का नमकीन स्नैक्स है, जो कि सेम के बीजों को सुखाकर बनाया जाता है। बाजार में भी इसके स्नैक्स मिलते हैं। इसके लिए सेम की फलियों से बीज निकालकर अलग कर लें। इन्हें तेज धूप में पूरी तरह से सूख जाने तक सुखाएं। जब ये सूख जाएं तो स्नैक्स तैयार कर लें।

चिरौंजी के बीज

चिरौंजी : चिरौंजी के छोटे बीज के बड़े फायदे हैं। इसे बनाने के लिए भुने हुए बीज लें। अब पैन में शुगर डालकर थोड़ा पानी डालें और कैरेमलाइज्ड करें। चिरौंजी को खरबूजे के बीज के साथ डालें। इसे स्टोर करके महीने भर तक जब भी मन करें, इसका स्वाद ले सकते हैं। इसे खीर, हलवा, पंजीरी, लड्डू और पाक में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। ध्यान रखें, ज्यादा मात्रा में चिरौंजी खराब हो जाती है

खरबूजे के बीज या मगज

खरबूजे के बीज या मगज : गर्मियों में खरबूजा न सिर्फ शरीर को तरावट देता है, बल्कि इसके बीज भी बेहद फायदेमंद होते हैं। इन बीजों को मेवे के रूप में और मिठाइयों में भी उपयोग किया जाता है। इसमें ओमेगा-3 फैटी एसिड होता है जो दिल से जुड़ी बीमारियों से बचाव में मददगार होता है। इसमें विटामिन ए, सी और ई भी होता है। खरबूजे के बीज में 3.6 प्रोटीन होता है, जो प्रोटीन की कमी को दूर करते हैं।

पंपकीन के बीज

पंपकिन बीज : कद्दू की सब्जी बनाते वक्त ज्यादातर घरों में इसके बीज को फेंक दिया जाता है। दरअसल साफ करने, धोने या सुखाने की झंझट से सभी बचना चाहते हैं। कद्दू के बीज पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। इसमें पाए जानेवाले एंटीऑक्सीडेंट, मैग्नीशियम, विटामिन के और फाइबर डायबिटीज से बचाव करता है। पाचक तंत्र के लिए बहुत अच्छा इसका उपयोग है। दिनभर एनर्जेटिक रखता है। इसके बीज को खरबूजे के बीज की तरह साफ करें।

अलसी के बीज

इसे फ्लैक्स सीड्स के नाम से भी जानते हैं। यह एक सुपरफूड है। हेल्दी रहने के लिए इसे अपनी डाइट में जरूर शामिल करना चाहिए। अलसी में विटामिन बी, कैल्शियम, मैग्निशियम, कॉपर, आयरन, जिंक, पौटेशियम आदि मिनरल्स पाए जाते हैं। इसके अलावा इसमें आवश्यक फैटी एसिड अल्फा लिनोलेनिक एसिड भी पाया जाता है, जिसे ओमेगा-3 के नाम से भी जाना जाता है। यह कब्ज, एसिडिटी, डायबिटीज, आर्थराइटिस, कैंसर और यहां तक की दिल की समस्याओं को दूर करने में भी मदद करता है।

चिया बीज

यह एक सुपरफूड है। इसे डाइट में शामिल कर लंबे समय तक हेल्दी रहा जा सकता है। इसमें ओमेगा-3 फैटी एसिड, फाइबर, प्रोटीन, एंटीऑक्सीडेंट्स, ओमगा-3 और कैल्शियम भरपूर मात्रा में होता है। इसे सैलेड से लेकर पेय पदार्थों में उपयोग किया जा सकता है। ये वजन कम करने का बेहतरीन विकल्प है।

सूरजमुखी के बीज

सूरजमुखी के बीज : सूरजमुखी के बीज मिनरल्स से भरपूर होते हैं।

इनके सेवन से हड्डियां मजबूत होती हैं। इसमें मैग्नीशियम और कॉपर ज्यादा मात्रा में होता है। इसमें पाया जाने वाला विटामिन ई हड्डियों के दर्द में बहुत फायदेमंद है और चेहरा निखारने में मददगार है। इसमें मौजूद मैग्नीशियम नसों में शांत रखने में मददगार है। इसके सेवन से स्ट्रेस, माइग्रेन जैसी समस्याएं दूर होती है। यह त्वचा को यूवी किरणों से बचाता है। रोजाना एक चौथाई कप सूरजमुखी के बीजों का सेवन दिल की बीमारी से बचाता है। यह कोलेस्ट्रॉल को कम करता है। इसके सेवन से गैस्ट्रिक अल्सर, एस्थमा और स्किन प्रॉब्लम भी दूर हो सकती है।

तिल या सैसमे

ज्यादातर घरों में तिल का इस्तेमाल किया जाता है। डिश की गार्निशिंग में भी इसका उपयोग होने लगा है। तिल में आजकल कई रेसिपी बनाई जाने लगी है। इसमें ओमेगा-6 फैटी एसिड होता है, जो बेड कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करता है। साथ ही तिल में कई प्रकार के प्रोटीन, कैल्शियम, बी-कॉम्प्लैक्स और कार्बोहाइड्रेट्स भी पाए जाते हैं। इसके अलावा तिल में मोनो-सैचुरेटेड को कम करने और दिल से जुड़ी बीमारियों के लिए बेहद फायदेमंद है। इसमें हाइट्री प्रोटीन ओर अमिनो एसिड होता है, जो हड्डियों के लिए बेहद अच्छा होता है।

कलौंजी/अनियन बीज

कलौंजी का ज्यादातर इस्तेमाल नमकीन डीश, अचार व ड्रिंक बनाने के लिए किया जाता है। कलौंजी में कई आवश्यक पोषक तत्व होते हैं। यह आयरन, सोडियम, कैल्शियम, पोटैशियम और फाइबर से भरपूर होता है। इसमें कई तरह के अमीनो एसिड और प्रोटीन भी होते हैं।

तरबूज के बीज

तरबूज के बीजों को उत्तर भारत में पारंपरिक तौर पर उपयोग किया जाता है। खासतौर पर इनका मुगलई खाने में इस्तेमाल होता है। इसका पेस्ट बनाकर इन्हें ग्रेवी को गाढ़ा करने के लिए भी प्रयोग किया जाता है। ठंडाई और भांग में भी डाला जा सकता है। ये पोषक तत्वों से भरे होते हैं।

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

माह का पूर्वार्द्ध अति उत्साहवर्द्धक एवं कामनाओं की पूर्ति करने वाला है। लम्बित काम में प्रगति होगी, पैतृक मामले सुलझेंगे एवं लाभ प्राप्त होगा, किसी निकटवर्ती से ही विवाद उभर सकता है। स्वास्थ्य उत्तम, परिवार में क्लेश संभव।

वृषभ

14 मई तक रचनात्मक कार्यों का पूर्ण लाभ मिलेगा, जो भी महत्वपूर्ण या नया काम करना चाहते हैं वह माह के पूर्वार्द्ध में करें, सफलता के पूर्ण आसार हैं। कर्म क्षेत्र में उमंग बनी रहेगी, आय सामान्य प्रतीत होती है, शत्रु परास्त होंगे, अगर किसी व्याधि से पीड़ित हैं तो उसका शमन होगा।

मिथुन

यह माह सामान्य रहेगा, मनोत्साह में कमी रहेगी, किंकर्तव्यमूढ़ स्थिति का सामना करना पड़ेगा, आय पक्ष सुदृढ़ रहेगा, सन्तान पक्ष आपको प्रफुल्लित रखेगा, काम, धन्धे, व्यापार में असन्तोष रहेगा, स्त्री पक्ष से लाभ की सम्भावना, स्वास्थ्य उत्तम।

कर्क

अनपेक्षित कार्य होंगे, आय पक्ष सुदृढ़ रहेगा है, कर्म क्षेत्र में अभिवृद्धि होगी, विरोधी पस्त होंगे, लम्बी बीमारी से राहत मिलेगी, घर में मांगलिक कार्य होंगे, परन्तु साझेदारी से नुकसान की सम्भावना है। दाम्पत्य जीवन में कड़वाहट संभव, भाग्य मिश्रित फल देगा।

सिंह

आत्मबल से जो चाहें वो करेंगे, सकारात्मक सोच अच्छे फल प्रदान करेगी, शासकीय एवं राजकीय मामले पक्ष में बनेंगे, परन्तु शत्रु पक्ष के हावी होने के संभावना है। वाणी में सावधानी बरतें, स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, सन्तान के कार्यों से प्रसन्नता, भाग्य उत्तम।

कन्या

अतिआवश्यक कार्य 9 मई तक सम्पन्न कर लेवें, आगे इतनी अनुकूलता नहीं होगी, आय पक्ष प्रभावित रहेगा, सन्तान पक्ष मानसिक उद्वेग दे सकता है, कार्य क्षेत्र में परिस्थितियां प्रतिकूल रहेंगी, परन्तु भाग्य के सहारे काम बन सकते हैं, स्वास्थ्य मध्यम, पैतृक मामले लाभ दे सकते हैं।

तुला

मनोत्साह बना रहेगा, साझेदारी आपको लाभ प्रदान करेगी, समझदारी से काम लेवें, कर्ज बढ़ सकता है। स्वास्थ्य में गिरावट की सम्भावना, कार्य क्षेत्र में बदलाव या स्थान परिवर्तन के योग हैं। नई योजना को गुप्त रखें, विरोधी पक्ष हानि पहुंचा सकता, आकस्मिक लाभ के योग बनेंगे।

वृश्चिक

योजना की सफलता के लिए आकस्मिक फेरबदल करना पड़ सकता है। जीवन साथी के सहयोग से कार्य करेंगे तो सफलता एवं लाभ के आसार बढ़ेंगे। स्थायित्व के कार्यों पर ज्यादा ध्यान देवें, संतान पक्ष से हर्ष, भाई-बहिनों से मतभेद उभर सकते हैं, स्वास्थ्य उत्तम, व्यवहार में उग्रता रहेगी।

धनु

प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी, कर्म क्षेत्र में विस्तार के साथ न्यायिक एवं शासकीय मामलों में सफलता मिलेगी। सन्तान पक्ष से प्रसन्नता, आकस्मिक दुर्घटना के योग, वाहनादि सावधानी से चलावें। योजनाओं को अमलीजामा पहनाने में सफल होंगे।

मकर

स्थितियां ज्यों की त्यों रहेगी, परिवर्तन की सम्भावनाएँ क्षीण हैं।, पितृ पक्ष से सहायता और संतान पक्ष से प्रसन्नता मिलेगी, माह का उत्तरार्द्ध सुकून भरा रहेगा, मानसिक सन्तुलन बनाये रखें, स्वास्थ्य सामान्य, कर्ज से बचें, भौतिकता में वृद्धि होवे।

कुम्भ

भाई-बहिनों एवं परिवार से अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, कर्म क्षेत्र में साहसिक निर्णय लेंगे। भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। विरोधियों पर हावी रहेंगे, आय पक्ष अच्छा है, परन्तु खर्चों की भी अधिकता रहेगी, किसी गुप्त रोग के उभरने की आशंका है।

मीन

यात्रा के योग हैं। वाणी की कटुता से बचे, सन्तान पक्ष की ओर से परेशानियों का सामना संभव। कर्म क्षेत्र में अपना प्रभाव छोड़ेंगे। स्थाई कार्यों में ज्यादा रूचि लें, भाग्य का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा। समय पक्ष में है, लाभ उठायें, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

शुद्ध शाकाहारी भोजन

रोशनलाल पालीवाल

हमारे यहां सभी तरह के शाकाहारी भोजन
व्यवस्था के ऑर्डर लिए जाते हैं।

पालीवाल शिव भोजनालय

3, चेतक मार्ग, उदयपुर - 313001 (राज.)

Phone : 0294-2429014

श्रीसीमेंट 'फाईव स्टार' से सम्मानित

ब्यावर (प्रब्यू)। श्री सीमेन्ट लि. की निम्बेटी लाईमस्टोन माइन्स एवं शिवपुरा-केसरपुरा लाईमस्टोन माईन्स को भारत सरकार के खान मंत्रालय द्वारा पिछले दिनों नई दिल्ली के द अशोक होटल में 'उत्तरदायी खनन एवं संधारणीय विकास' के लिए 'फाईव स्टार रेटिंग प्रमाण पत्र' से सम्मानित किया। तीसरे नेशनल माईन्स एण्ड मिनरल कॉन्क्लेव में जिन 57 सर्वश्रेष्ठ खदानों को यह सम्मान मिला, उनमें श्रीसीमेंट की दोनों प्रमुख खदानें शामिल थीं। इनका राष्ट्रीय स्तर पर विविध मानकों पर मूल्यांकन भारतीय खान ब्यूरों द्वारा किया गया। श्रीसीमेन्ट के लिए यह गौरवपूर्ण सम्मान कम्पनी के महेन्द्र गर्ग, पंकज अग्रवाल, तरूण ढेलावत व मनीष बोहरा ने केन्द्रीय खानमंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर तथा खान राज्यमंत्री हरिभाई परथी भाई चौधरी से ग्रहण किया। इस अवसर पर केन्द्रीय खान सचिव अरूण कुमार भी उपस्थित थे। श्रीसीमेन्ट के अध्यक्ष पी. एन. छंगाणी, संजय मेहता तथा कोर कमेटी के सभी सदस्यों ने इसका श्रेय कार्मिकों व अधिकारियों के समर्पण को दिया है।

केन्द्रीय मंत्री से फाईवस्टार रेटिंग प्रमाण पत्र प्राप्त करते श्री सीमेन्ट के अधिकारी।

एक्टिवा 5जी वर्जन लॉन्च

एक्टिवा 5 जी वर्जन की लॉन्चिंग करते वरुण मुर्डिया, शील मोहन शर्मा एवं अन्य

उदयपुर। होण्डा मोटर इंडिया लिमिटेड का एक्टिवा 5जी वर्जन उदयपुर में लेकसिटी होण्डा एवं श्रीजी मोटर्स पर लॉन्च किया गया। लेकसिटी के प्रबन्धक शीलमोहन शर्मा ने बताया कि समारोह में महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, उपमहापौर लोकेश द्विवेदी व लेकसिटी होण्डा के वरुण मुर्डिया ने स्कूटर को लॉन्च किया। नया स्कूटर साधारण एवं डीलक्स में उपलब्ध रहेगा। साधारण श्रेणी में यह एलईडी लाइट हेड एवं सीट ओपनिंग स्वीच इसके मुख्य आकर्षण है। इसी प्रकार श्रीजी मोटर्स पर प्रबंधक धीरेन्द्र श्रीमाली एवं ऋषि शर्मा ने स्कूटर को लॉन्च किया।

रिलायन्स स्मार्ट का उद्घाटन

रिलायन्स स्मार्ट का उद्घाटन करते परशुराम सुयल साथ में योगेश्वर पारेल एवं अन्य।

उदयपुर। पारस चौराहे पर रिलायन्स समूह के 'रिलायन्स स्मार्ट' का उद्घाटन गत दिनों हुआ। स्मार्ट के मैनेजर योगेश्वर सिहं पारेल ने बताया कि उद्घाटन पारस महल के मैनेजिंग डायरेक्टर परशुराम सुयल एकलिंगगढ़ छावनी के कर्नल रामपाल, कर्नल जौहरी व इतिहासकार डॉ. अजात शत्रु सिंह शिवरती ने किया। रिलायन्स जोनल हेड निर्मला पण्ड्या ने बताया कि उदयपुर में यह दूसरा रिलायंस स्मार्ट है। इससे पूर्व तीन रिलायन्स फ्रेश के मार्ट जगह-जगह मौजूद हैं।

डॉ. लुहाड़िया अध्यक्ष

उदयपुर। श्री खण्डेलवाल दिगम्बर जैन संस्थान चित्रकूट नगर के द्विवार्षिक चुनाव पिछले दिनों चुनाव अधिकारी विजय गोधा के सान्निध्य में हुए। प्रचार संयोजक शांति कुमार कासलीवाल ने बताया कि अध्यक्ष डॉ. एस. के. लुहाड़िया, महासचिव सुरेश पाटनी एवं कोषाध्यक्ष राजमल बेनाड़ा चुने गए।

कुंभा संगीत समारोह
अनुराधा को वाईएस कोठारी सम्मान

डॉ. यशवंत कोठारी सम्मान प्राप्त करती अनुराधा पॉल।

उदयपुर। शिल्पग्राम के मुक्ताकाशी मंच पर देश के पहले स्त्रीशक्ति बैण्ड ने अनेक पारम्परिक वाद्यों के अभिनव प्रयोगों से ऐसा समां बांधा जिसे शहरवासी लंबे समय तक भूल नहीं पाएंगे। अवसर था महाराणा कुंभा संगीत परिषद द्वारा आयोजित तीन दिवसीय संगीत समारोह के 18 मार्च को समापन में महिला बैण्ड की मनमोहक प्रस्तुति का। कार्यक्रम में प्रसिद्ध तबला वादिका अनुराधा पाल को डॉ. यशवंत सिंह कोठारी सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक शैली के मिश्रण की शानदार प्रस्तुति के बीच एक ओर जहां शहर की होनहार गायिका पामिल ने म्हारो वीर शिरोमणि देश.... और होरी है जी होरी है.... के सुरीले स्वर बिखेरे वहीं, मेहमान कलाकार अनुराधा ने तबले व पखावज पर राधा-कृष्ण के बीच होली की रंगत के सुन्दर संयोजन से खूब तालियां बटोरी।

दी उदयपुर ट्रांसपोर्ट ऑर्गेाइजेशन के चुनाव
गौड़ अध्यक्ष, शर्मा महामंत्री

उदयपुर। दी उदयपुर ट्रांसपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन के द्विवार्षिक चुनाव पिछले दिनों चुनाव अधिकारी एडवोकेट जय कृष्ण दवे ने बताया की देखरेख में सम्पन्न हुए जिनमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष पद पर क्रमश: पंडित लक्ष्मीनारायण गौड़, अजीत सिंह खींची एवं जगदीश पंडा निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गए। दो पदों पर चुनाव हुए। 190 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। इसमें महामंत्री भगवान शर्मा(136) ने प्रतिद्वन्द्वी निर्मल प्रदीप जैन(45) को 91 मतों से एवं सहसचिव पद पर दिनेश झंवर(131) ने प्रतिद्वन्द्वी बाबूलाल चौधरी(49) को 82 मतों से पराजित किया। इस मौके पर निवर्तमान अध्यक्ष चंचल कुमार अग्रवाल, संरक्षक शम्भू जैन, भगवान शर्मा, अजीत सिंह खींची, दिनेश झंवर, जगदीश पंडा, आल इंडिया मोटर कांग्रेस के भगवान सिंह भाटी, किशन कुमार अरोड़ा, इंदरसिंह चोरड़िया, मोहम्मद हुसैन, बालकृष्ण तनेजा, ललित झंवर, राजेश लाहोटी आदि उपस्थित थे।

पंडित लक्ष्मीनारायण गौड़

भगवान शर्मा

फोर्टिस का नि:शुल्क परामर्श शिविर

उदयपुर। फोर्टिस जे. के. हॉस्पीटल एवं श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत के संयुक्त तत्वावधान में गत दिनों नि:शुल्क सुपरस्पेशियलिटी जांच व परामर्श शिविर आयोजित किया गया। जिसमें 289 रोगियों के स्वास्थ्य की जांच कर परामर्श दिया गया। ज्वाइंट रिप्लेसमेंट व ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. आशीष सिंघल ने बताया कि ज्यादातर लोग घुटने व कूल्हे की तकलीफ से पीड़ित थे। जिन्हें उचित परामर्श दिया गया। शिविर में डॉ. विनीत बांगा, डॉ. दीपक आमेटा, डॉ. प्रियंका अग्रवाल, डॉ. स्वाति त्रिपाठी, डॉ. गौरव आमेटा आदि ने सेवाएं दी। जैन पंचायत के अध्यक्ष बृजमोहन गर्ग ने बताया कि पंचायत के सभी सदस्यों से यह वृहद शिविर संभव हो पाया।

माउंट लिटेरा जी स्कूल का उद्घाटन

उदयपुर। कलड़वास औद्योगिक क्षेत्र स्थित माउंट लिटेरा जी स्कूल की 117वीं तथा राजस्थान की तीसरी शाखा का उद्घाटन 25 मार्च को हुआ। मुख्य अतिथि जी लर्न लिमिटेड के महानिदेशक डॉ. प्रभात कौशिक ने कहा कि 'जी लर्न' ने शिक्षा के सिद्धान्तों से कभी कोई समझौता नहीं किया है और यह सब अभिभावकों के विश्वास के कारण ही संभव हो पाया है। रीजनल स्कूल डायरेक्टर अनिता चतुर्वेदी ने कहा कि चाइल्ड एब्यूज के प्रति अभिभावकों और टीचर्स को सचेत रखना भी हमारी प्राथमिकता रहेगी। विशिष्ट अतिथि 'तारक मेहता का उलटा चश्मा' फेम आत्माराम तुकाराम भिड़े(मंदर चन्दवडकर), मुख्य अकाउन्ट्स मैनेजर नितिन शाह व ऑपरेशन मैनेजर आशीष कुमार थे। स्कूल निदेशक अरुण माण्डोत, मनीष कपूर, एसके खेतान, आरएस यादव आदि ने पुलिस अधीक्षक राजेन्द्र प्रसाद गोयल, एएसपी ब्रजेश सोनी, जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल, प्रमोद सामर, डूंगरपुर नगर परिषद के सभापति के के गुप्ता आदि का उपरणा और बुके भेंटकर स्वागत किया।

बंग समाज के चुनाव : मुखर्जी अध्यक्ष, राय सचिव

एम के मुखर्जी

उदयपुर। बंग समाज दुर्गा बाड़ी समिति, उदयपुर के वर्ष 2018-2021 के लिए सम्पन्न चुनाव में अध्यक्ष एम के मुखर्जी एवं सचिव पीके राय निर्वाचित हुए। चुनाव अधिकारी एनजी दास ने बताया कि कार्यकारिणी निर्विरोध निर्वाचित हुई। वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनुतोष मजूमदार, उपाध्यक्ष आर एन चक्रवर्ती, सचिव(पूजा) तपन राय, सचिव(समन्वय), विप्लव राय, सांस्कृतिक सचिव निलंजन, मजूमदार, पीके डे कोषाध्यक्ष चुने गए।

पीके राय

अर्चना ग्रुप ने लिया श्री श्री रविशंकर से आशीष

उदयपुर। अर्चना ग्रुप के सीईओ सौरभ पालीवाल, निदेशक नेहा पालीवाल व समाजसेवी राजेन्द्र पुरोहित ने 14 मार्च 2018 को बैंगलुरू स्थित श्रीश्री रविशंकर के 'आर्ट ऑफ लिविंग' आश्रम में उनसे भेंट की। इस अवसर पर नेहा पालीवाल द्वारा निर्मित श्रीश्री रविशंकर का चित्र भी उन्हें भेंट किया गया। उल्लेखनीय है कि पालीवाल ग्रुप 'आर्ट ऑफ लिविंग' से काफी वर्षों से सम्बद्ध है।

रेमण्ड की मुफ्त सिलाई सुविधा

उदयपुर। रेमण्ड के अधिकृत विक्रेता (बापू बाजार) 'अभिलाषा' के निदेशक विजय सप्रा ने बताया कि विगत 45 वर्षों से विशिष्ट सेवाएं प्रदान करते हुए अब आधुनिक शोरूम द रेमण्ड शॉप के नाम से एक्सक्लूसिव कपड़े एवं रेडिमेड की अत्याधुनिक डिजाइनिंग के साथ मुफ्त सिलाई की सुविधा के साथ ग्राहकों का स्वागत करने को आतुर है। रेमण्ड की मुफ्त सिलाई सुविधा सीमित समय के लिए ही उपलब्ध है।

टैक्स बार एसोसिएशन

सिंघवी अध्यक्ष और पाहुजा सचिव

निर्मल सिंघवी

किशोर पाहुजा

उदयपुर। टैक्स बार एसोसिएशन के चुनाव में सीए निर्मल सिंघवी को अध्यक्ष और सीए किशोर पाहुजा को सचिव चुना गया। निवर्तमान अध्यक्ष एच एस नैनावटी ने बताया कि उपाध्यक्ष एडवोकेट अमित तिवारी, कोषाध्यक्ष सुनील बडाला, साहित्यिक सचिव महावीर धींग, सांस्कृतिक सचिव राकेश पोरवाल, उदयपुर टैक्स बार चैरिटेबल सोसायटी के चुनाव में भी डॉ. निर्मल कुणावत को चेयरमैन चुना गया।

पीआईएमएस में एआरटी सेंटर

एआरटी सेंटर का शुभारंभ करते आशीष अग्रवाल, शीतल अग्रवाल व अन्य।

उदयपुर। उमरडा स्थित पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज(पीआईएमएस) में नेशनल एड्स कंट्रोल सोसायटी भारत सरकार के पीपीपी मोड पर राजस्थान के पहले एआरटी सेंटर का उद्घाटन गत दिनों पीआईएमएस के चेयरमैन आशीष अग्रवाल, शीतल अग्रवाल, डीडीजी नाको डॉ. आर. एस. गुप्ता, प्रोजेक्ट डायरेक्टर(एड्स) राजस्थान स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी(आरसेक) डॉ. एस. एस. चौहान, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजीव टांक, डिप्टी सीएमएचओ डॉ. राघवेन्द्र राय, आरसेक असिस्टेंट प्रोजेक्ट डायरेक्टर आर. के. सोनी ने किया। आशीष अग्रवाल ने कहा कि पीपीपी मोड पर राजस्थान का यह पहला एंटी रिट्रोवायरल सेंटर एड्स उपचार की दिशा में महत्वपूर्ण होगा।

डॉ. स्वीटी की पुस्तक का विमोचन

पुस्तक का विमोचन करती सुष्मिता सेन, साथ में लेखिका डॉ. स्वीटी छाबड़ा एवं अन्य।

उदयपुर। समाजसेवी एवं एनआईसीसी की निदेशक डॉ. स्वीटी छाबड़ा द्वारा गर्भावस्था के दौरान सावधानियों पर लिखी पुस्तक 'प्रेगनेन्सी केयर' का मिस यूनिवर्स रही सुष्मिता सेन द्वारा होटल रेडिसन ब्लू में विमोचन किया गया। सुष्मिता सेन ने कहा कि यह पुस्तक गर्भवती महिलाओं के लिये मील का पत्थर साबित होगी। इस अवसर पर अर्थ डायग्नोस्टिक्स के प्रबंध निदेशक डॉ. अरविन्दर सिंह व छाबड़ा परिवार के सदस्य भी मौजूद थे।

महाराणा सांगा पर लघु पुस्तिका

उदयपुर। शिल्प कलाकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा द्वारा महाराणा संग्राम सिंह प्रथम (राणा सांगा) की 536वीं जयंती पर निर्मित सवा इंच की लघु पुस्तिका का विमोचन लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने किया। 36 पृष्ठीय पुस्तिका में राणा सांगा के जीवन, उपलब्धियां एवं उनके आदर्शों का संग्रह है।

अलख नयन आई हॉस्पिटल ने शुरू की डीसेक, डीमेक व डाल्क सर्जरी सेवाएं

एक नेत्र दान से रोशन होंगी दो आंखें

उदयपुर। डीसेक, डीमेक व डाल्क सर्जरी सेवाओं के माध्यम से अलख नयन आई हॉस्पिटल ने दान में मिलने वाले एक नेत्र से दो आंखों को रोशनी देने का दावा किया है। नेत्र चिकित्सालय क्षेत्र में हुए इस परिवर्तन की उदयपुर में शुरुआत करते हुए चिकित्सालय प्रबंधन ने 29 मार्च को कॉर्नियल ट्रांसप्लांट सर्जरी पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया। साथ ही देश के नामी पांच नेत्र विशेषज्ञों ने लाइव सर्जरी से प्रतिभागियों के समक्ष 8 साल के बच्चे की आंखों का सफल ऑपरेशन किया। अलख नयन आई इंस्टीट्यूट के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. एल एस झाला ने बताया कि अब तक आंखों की रोशनी लौटाने के लिए कॉर्निया ट्रांसप्लांट विधि का उपयोग होता था, लेकिन अब नए तरीकों से पूरा कॉर्निया बदलने की बजाय सिर्फ खराब कॉर्निया की खराब परत को प्रत्यारोपित किया जाता है। इसका फायदा यह है कि इससे कॉर्निया बच जाता है। वहीं उपलब्ध एक नेत्र से कई आंखों की रोशनी लौटाई जा सकती है। अमरीका और इंग्लैण्ड के बाद देश के चुनींदा महानगरों और प्रदेश में जयपुर के बाद उदयपुर में इसकी शुरुआत की गई है। डॉ. झाला ने बताया कि प्रतापनगर स्थित चिकित्सालय में ट्रेनिंग सेशन में डॉ. नितिश खतोरिया ने 10 लाख लोगों

एक नेत्रदान से दो आंखों को रोशनी देने वाली डाल्क सर्जरी टीम।

को रोशनी की जरूरत की बात कहते हुए नेत्रदान पर अधिक बल देने पर जोर दिया। कोयम्बटूर के डॉ. के. एस. सिद्धार्थन, अंबाला के डॉ. विकास मित्तल, मुंबई के डॉ. जतिन आशर, अहमदाबाद के डॉ. आशीष नागपाल, उदयपुर के डॉ. नीतीश खतूरिया सहित अन्य विशेषज्ञों ने कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया।

पत्रिका का विमोचन

पत्रिका का विमोचन करते डॉ. लोकेश जैन, शर्मिला जैन एवं अन्य।

उदयपुर। द स्कॉलर्स एरिना, स्वामी नगर में पद्मावती साहित्य प्रकाशन की समाचार पत्रिका उद्भव एवं अभिव्यक्ति का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि प्रशासक डॉ. लोकेश जैन, प्राचार्य डॉ. शर्मिला जैन, अकादमिक निदेशक डॉ. माया त्रिवेदी, डिग्री कॉलेज प्राचार्य डॉ. सीमा राजुपुरोहित व संतोष चुण्डावत थीं।

विद्या किरण राफबक में निर्वाचित

उदयपुर। दी उदयपुर महिला समृद्धि अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लि. की अध्यक्ष विद्या किरण अग्रवाल को राजस्थान अरबन को-ऑपरेटिव बैंक्स फैडरेशन लि. (राफबक) के संचालक मंडल के लिए हुए चुनावों में निर्विरोध निदेशक घोषित किया गया। बैंक के मुख्य कार्यकारी विनोद चपलोत ने बताया कि राज्य स्तरीय अपेक्स बॉडी के चुनावों में राज्य के 37 अरबन को-ऑपरेटिव बैंकों ने हिस्सा लिया। उसके बाद राजस्थान राज्य सहकारी निर्वाचन प्राधिकरण की ओर से नियुक्त निर्वाचन अधिकारी एस. के. राठौड़ ने महिला समृद्धि बैंक उदयपुर की अध्यक्ष विद्याकिरण अग्रवाल को राजस्थान अरबन को-ऑपरेटिव बैंक्स फैडरेशन का निदेशक घोषित किया।

विद्या किरण

अगरबत्ती और डिटरजेंट का प्रशिक्षण

प्रशिक्षणार्थियों के साथ डॉ. स्वीटी छाबड़ा, डॉ. अरविन्दर सिंह, सौरभ पालीवाल एवं अन्य।

उदयपुर। रोटरी मेवाड़ क्लब, अर्चना अगरबत्ती और एनआईसीसी के साझे में प्रशिक्षण शिविर लगा। एनआईसीसी डायरेक्टर स्वीटी छाबड़ा ने बताया कि अर्चना अगरबत्ती के प्रमुख सौरभ पालीवाल ने अगरबत्ती और डिटरजेंट बनाने का प्रशिक्षण दिया। क्लब अध्यक्ष डॉ. अरविन्दर सिंह ने स्वरोजगार के बारे में बताया। अर्थ डायग्नोस्टिक के डायरेक्टर सत्येन्द्र सिंह पंवार, आरबीएल बैंक के मैनेजर प्रवीण तिवारी, मुकेश जैन, विकास स्वर्णकार आदि मौजूद थे।

कलेण्डर का विमोचन

उदयपुर। विक्रम संवत् 2075 कलेण्डर का 20 मार्च, 2018 को आलोक स्थित श्रीराम मन्दिर में विमोचन हुआ। नववर्ष समारोह समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. प्रदीप कुमावत, डायनेमिक सिक्योरिटी की प्रबन्ध निदेशक मंजीत बंसल, केसीसीआई अध्यक्ष गोपाल अग्रवाल, मार्बल एसोसिएशन अध्यक्ष रोबिन सिंह, गाइड एसोसिएशन के राजेन्द्रसिंह उपस्थित थे। कल्पेश मकवाना, कैलाश मकवाना, विधि डूंगरपुरिया सहित अतिथि एवं गण्यमान्य मौजूद थे।

सेमा मित्रमंडल

उत्साह से मनाया फूलडोल उत्सव

उदयपुर। सेमा मित्र मंडल का सातवां फूलडोल महोत्सव गत दिनों स्थानीय श्रीमाली समाज के नोहरे में उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर समाजजन ने महालक्ष्मी मंदिर परिसर में जमकर गेर नृत्य कर माता को रिझाया। हरीश त्रिवेदी ने बताया कि मंडल के सभी सदस्य शीतलामाता चौक में एकत्रित हुए। यहां से चारभुजानाथ की वेवाण के साथ शोभा निकाली गई, जो महालक्ष्मी मंदिर पहुंची। इसके पश्चात् समाज विकास पर चर्चा हुई। जिसमें कन्हैयालाल त्रिवेदी, हरीश त्रिवेदी, किशन त्रिवेदी व कैलाश ओझा आदि ने विचार व्यक्त किए।

कोल्हापुर सेंटर का शुभारम्भ

उदयपुर। नि:संतानता के इलाज के क्षेत्र में कार्यरत इन्दिरा आईवीएफ हॉस्पिटल प्रा. लि. ने कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में भी हॉस्पीटल का शुभारम्भ किया। यह देश में ग्रुप का 35वां और महाराष्ट्र में छठा सेंटर है। इन्दिरा आईवीएफ ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया ने बताया कि नि:संतानता का उपचार संभव है। बस जरूरत है समय पर सही कदम उठाने की। इससे पूर्व चंडीगढ़ में 34वें सेंटर का शुभारंभ हुआ। सेंटर की आईवीएफ स्पेशलिस्ट डॉ. कांची खुराना ने शुभारम्भ के मौके पर बताया कि सेंटर में नि:संतानता के इलाज के लिए नवीनतम चिकित्सकीय सुविधाएं आईवीएफ इक्सी, ब्लास्टोसिस्ट कल्चर, लेजर असिस्टेड हैचिंग, क्लोज्ड वर्किंग चैम्बर उपलब्ध है।

टॉप 100 में डॉ. अरविन्दर की पुस्तक

उदयपुर। अर्थ डायग्नोस्टिक्स के सीईओ डॉ. अरविन्दर सिंह की पुस्तक अमेजन की लाखों किताबों में राष्ट्रीय स्तर पर 57 वें स्थान पर पहुंच कर टॉप 100 सेलिंग, किताबों में चयनित हुई है। बुद्धिमता बढ़ाने की क्रिएटिविटी स्किल पर आधारित टेन टूल क्रिएटिव जीनियस नामक इस पुस्तक में रचनात्मकता विकास हेतु उदाहरण के साथ कई सूत्र बताए गए हैं। उल्लेखनीय है कि डॉ. अरविन्दर ने बालकों में बौदिक विकास को लेकर अनेक स्कूलों में व्याख्यान भी दिए हैं।

शोक समाचार

उदयपुर। नगर के जाने-माने उद्यमी **श्री गुरुमुखदास जी कालरा** का 26 मार्च, 2018 को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पत्नी श्रीमती लता, पुत्र संजय, पंकज व रवि कालरा सहित भाई-भतीजों व पौत्र-पौत्रियों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

झाबुआ(मप्र)। रानु कॉलोनी, मेघनगर निवासी श्री मदन मोहन जी सिंघल की धर्मपत्नी **श्रीमती सरला देवी** का 31 मार्च, 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति तथा पुत्र जयन्त व जयप्रकाश सिंघल तथा पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ से सम्बद्ध समाजसेवी **श्री हुक्मीचंद जी खोखावत** डबोकवाला का 2 अप्रेल, 2018 को निधन हो गया। वे अपने पीछे धर्मपत्नी कंचन देवी, पुत्र रमेशचन्द्र, कमलेश, मुकेश, सुरेश एवं विनीत खोखावत तथा पुत्री राजकुमारी सुराणा सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। स्व. श्री प्रीतम सिंह जी यादव की धर्मपत्नी **श्रीमती कौशल्या यादव** का 5 अप्रेल, 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र रिंकू, वासु, आशु, मुकेश व नितिन व पुत्रियां चंदा, मंजू, रेखा, कविता व राजकुमारी तथा उनके समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। सीसारमा के पूर्व सरपंच एवं जिला परिषद सदस्य स्व. श्री पन्नालाल जी नागदा की धर्मपत्नी **श्रीमती जसवंत कुंवर जी** का 11 अप्रेल 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र विजेन्द्र नारायण, कृष्णचंद्र एवं दिनेशचंद्र तथा पौत्र-पौत्रियों का सम्पन्न एवं समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

Hotel Ambience
A unit of bhmpl

email
hotelambienceudaipur@gmail.com
Website
www.hotelembienceudaipur.com

Hotel Ambience
A unit of bhmpl

Elegant
Multi-Functional Hall

Silver Spoon
Multi-cuisine Restaurant ■ Pure Veg.

The Occasion
Wedding & Special Events

The Regal
Multi-Functional Garden

Plot No.8 Nr. Mahila Police Thana, 100 FEET Road, Roop Nagar Bhuwana,
Opp. The Occasion Wedding & Special Event Garden,
Udaipur 313001 Rajasthan, India.
Contact :- +91 294 2980079/2980081

मनमोहक एवं सुगन्धित खुशबु जो आपके जीवन में लायें खुशहाली

250 Products Available

चेतक घोड़ा ® CHETAK HORSE

ISO 9001:2008 CERTIFIED

Archana®
Agarbatti

EXPORT QUALITY Since 1947 AGARBATTI

Registered Office :

ARCHANA AGARBATTI
NAVBHARAT INDUSTRIES

N.H. 76, Airport Road, Glass Factory Choraha,
UDAIPUR - 313001 (Rajasthan)
Customer Care Number : 0294-2492161, 2490899

Mob. : +91-77268 51913

E-mail : sales@archanaagarbatti.com
Website : www.archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

GURU NANAK PUBLIC SCHOOL SABHA, UDAIPUR

SALIENT FEATURES

- Well Experienced and Devoted Faculty
- Huge Infrastructure
- Purified water Facility
- Well Stocked Library
- Spacious & Airy Class Rooms
- Seminar/Guidance for Various Professional Courses and Employment
- Modern Laboratory of Physics, Chemistry, Biology, Computer Science, Maths, Home Science, Geography, Drawing Etc.
- Qualitative Board Results
- Special Career Counseling by Eminent Expert
- Campus Under CCTV Camera
- Indoor & Outdoor Games
- Separate Primary Section
- CCA Activities
- Bus Facility
- NCC Girls' Unit

ADMISSIONS OPEN 2018-19

GURU NANAK PUBLIC SR. SEC. SCHOOL

Hiranmagri Sector -4
Udaipur

(For Nursery to XII)
(Affiliated to RBSE Board)
Hindi & English Medium Co-educational School
Stream :- Science, Commerce & Arts

Shastri Circle
Udaipur

Note :- Admission forms for All Classes are Available in Office Between 8.00 am to 2.00 pm

GURU NANAK GIRLS'S P.G. COLLEGE, UDAIPUR

(Affiliated From Mohan Lal Sukhadia University)

UNDER GRADUATE	POST GRADUATE
B.A.	M.A. (English Literature, Hindi, History, Home Science, Psychology, Poltical Science, Sociology)
B.SC.	M.Sc. (Organic Chemistry)
B.COM.	Commerce (Accontancy & Business Statistics)
BBM	PGDCA
BCA	

Research (Ph.D)
Arts (English Literature, Psychology, Sociology)

B.Ed. Course
100 Seats (2 Unit)
Arts (70 Seats)
Science (20 Seats)
Commerce (10 Seats)

Smt Vibha Vyas
(Principal)
Hiranmagri Sector 4, Udaipur
Ph. :- 0294-2462108, 2462008

Shri Firdos Pathan
(Principal)
Shastri Circle, Udaipur
Ph. :- 0294-2413429

Prof. N.S. Rathore
(Principal)
Guru Nanak Girl's P.G. College, Sector 4, Udaipur
Ph:- 0294-2462239, 2467231

S. Chiranjiv Singh Grewal — President
S. Charanjeet Singh Dhillon — Vice President
S. Amarpal Singh Pahwa — Secretary
S. Satnam Singh — Joint Secretary

Eternal Mewar

Custodianship unbroken since 734 AD

A Living Institution

Maharana of Mewar Charitable Foundation

49 years in service as an inspiration to mankind by applauding outstanding achievement

Installation of the statue of Maharana Pratap
at Pratap Prangan, Maharana Pratap Airport, Dabok, Udaipur

Maharana Mewar Foundation Annual Awards Distribution Ceremony
at The Manek Chowk, The City Palace, Udaipur

Omkareshwar Mahadev Temple, Shree Bholanath Mandir Public Trust
Intali Kheda, Tehsil - Salumber, Udaipur

Front facade of the restored
Government Girls' Senior Secondary School Jagdish Chowk, Udaipur

Development of the park at Devasthan Department
MG College Road, Udaipur

Medical Camp for widows organised by
Swami Vivekanand Sewa Nyas, Udaipur

Maharana of Mewar Charitable Foundation
The City Palace, Udaipur 313001, Rajasthan, India
T: +91 294 2419021-9 F: 2419020 mmcf@eternalmewar.in www.eternalmewar.in